बापू अेक कोढीकी सेवा कर रहे हैं। (पृ० ७८)

अैसे थे बापू

[महात्मा गांधीसे सम्बन्धित अेक सौ पचास जीवन-प्रसंग]

संपादक
आर० के० प्रभु

अनुवादक
रामनारायण चौधरी

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद – १४

आभार-स्वीकार

अिस पुस्तकमे वर्णित गाधीजीके जीवनकी घटनाओ और कहानियोके सिलसिलेमे मैने जिन व्यक्तियो और सामयिक पत्रो आदिका अुल्लेख किया है, अुन सबके प्रति मै कृतज्ञतापूर्वक अपना ऋण स्वीकार करता हू।

अिसके सिवा, निम्नलिखित व्यक्तियोको विशेष धन्यवाद देता हू आचार्य काका कालेलकरको प्रस्तावना लिखनेके लिअे और गाधीजीकी अुनकी अपनी स्मृतियोमे से 'आदर्श कैदी' शीर्षक अेक छोटासा प्रसग — यह प्रसग अिस पुस्तकमे १२१ पृष्ठ पर मिलेगा — अुद्धृत करनेकी अनुमतिके लिअे, श्री डी० जी० तेन्दुलकर और विट्ठलभाअी के० झवेरीको गाधीजीके प्रति अर्पित श्रद्धाजलियोकी अुनके द्वारा सम्पादित 'गाधीजी' नामक पुस्तकमे से दो लेख — 'भिक्षुराज' (पृ० ११७) और 'अखबारी सदाचारके पाठ' (पृ० १४२), जिनमे से अेक तो मेरा ही लिखा हुआ है — अिस सग्रहमे शामिल करनेकी अनुमतिके लिअे, श्री गुरुदयाल मल्लिकको अुनकी कहानी 'बच्चोके साथ सैर' (पृ० १०९) — यह कहानी अुन्होने बम्बअीसे प्रकाशित बच्चोकी अपनी पत्रिका 'पुष्पा' मे लिखी थी — अुद्धृत करनेकी अनुमतिके लिअे, श्री पागल मजुनाथ नायक और अुनकी पुत्री डॉ० निरुपमा नायकको — गाधीजीने करीब बीस वर्ष पहले डॉ० निरुपमाको जो पत्र लिखे थे अुनमे से दो पत्रोको अुनके मूल रूपमे अुद्धृत करनेकी अनुमतिके लिअे, और 'धरतीके लाल' (नअी दिल्ली) के सम्पादक श्री अेम० जी० कामथको अिस पुस्तककी तैयारीकी प्रारम्भिक अवस्थामे दी गअी अुनकी बहुमूल्य सहायताके लिअे।

नवजीवन ट्रस्टके प्रति भी मै अपनी विशेष कृतज्ञता प्रगट करता हू, जिसके 'यग अिडिया' और 'हरिजन' पत्रोका मैने अिस पुस्तकमे सगृहीत राष्ट्रपिताके जीवनके अधिकाश प्रसगोके लिअे पूरा अुपयोग किया है।

आर० के० प्रभु

प्रस्तावना

श्री प्रभु मेरे पुराने और प्रिय मित्र है। अिस मित्रताका आरम्भ हुअे आज चालीस वर्षसे भी ज्यादा हो रहे है। अुनका पहला परिचय कराया था हम दोनो जिन्हे जानते थे अैसे अेक तीसरे मित्रने, जिन्होने मेरा प्रवेश आकाश-दर्शनमें—या जिसे मै तारकाओका काव्य कहता हू अुस काव्यमे — कराया था। परिचयका सूत्र था हम दोनोकी समानशीलता। श्री रामचन्द्र कृष्ण प्रभु अुन दिनो लोकमान्य तिलककी अिस स्थापनाके अध्ययन और प्रतिपादनमे व्यस्त थे कि वेदोके अनुसार आर्योका आदिदेश अुत्तरी ध्रुव था। मुझे प्राचीन भारतीय सस्कृतिमें देश-प्रेममूलक रस तो था ही, स्वभावत मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुअी कि श्री प्रभु जैसे अेक दूसरे विद्वानका भी यही मत है कि वेद हजारो वर्ष पुराने है और यह कि हमारे पूर्वज भारतमे ध्रुव-प्रदेशसे चलकर आये थे और अुस प्रागैतिहासिक कालसे आज तक लगातार यही रहते आये है। हम लोगोको अेक-दूसरेके ज्यादा पास लानेवाला अेक दूसरा कारण यह था कि दोनोको ही श्री अरविन्द घोषके जीवन, अुनके कार्य और अुनकी शिक्षाओमे गहरी दिलचस्पी थी।

पुस्तक-प्रेमी होनेके कारण श्री प्रभु अुन दिनो श्री बोर्डनके पास, जिन्हे बडौदाके महाराज श्री सयाजीराव गायकवाड अपनी राजधानीमें सेन्ट्रल लाअि-ब्रेरीका सघटन और विकास करनेके लिअे अमेरिकासे लाये थे, लाअिब्रेरीके शास्त्रका अध्ययन कर रहे थे। फिर श्री प्रभु धीरे-धीरे पत्रकारितामे लग गये और अुन्होने अुसे ही अपना जीवन-कार्य बना लिया। अिस क्षेत्रमे अुन्हे हार्निमेन और ब्रेलवी जैसे निष्णात पत्रकारोके साथ रहकर काम करनेका सुयोग प्राप्त हुआ। अिन वर्षोमे अपने व्यावसायिक कार्यके साथ अुन्होने गाधीजीके जीवन और अुनकी शिक्षाओका गहरा अध्ययन किया। गाधीजीके लेखोकी कतरनो या अुनसे लिये गये अुद्धरणोका अुनके पास अेक विशाल सग्रह है, जिसका अुन्होने विविध शीर्षकोके अन्तर्गत वर्गीकरण कर रखा है। सग्रह अितना बडा है कि अुससे अनेक पुस्तके तैयार की जा सकती है।

अुनकी अिसी तरहकी अेक सग्रह-पुस्तक — 'दि माअिन्ड ऑफ महात्मा गाधी' — ने गाधीजीकी शिक्षाओकी सक्षिप्त परन्तु सर्वग्राही कल्पना पेश करनेमे जितनी सफलता पायी है अुतनी अिधरके सालोमे प्रकाशित अैसी किसी दूसरी पुस्तकने नही पायी। अुन्होने भारत और विश्वकी आजकी समस्याओ पर गाधीजीके विचारो और निर्णयोका अेक सम्पूर्ण सकलन पेश करनेकी दृष्टिसे अेक पुस्तक-माला ही प्रकाशित करनेकी योजना बनाअी थी। लेकिन अिस मालाकी केवल पहली पुस्तक ही प्रकाशित हो सकी — 'दि कॉन्क्वेस्ट ऑफ सेल्फ'। मैं आशा करता हू कि अिस मालाको पूरा करनेके लिअे अुन्हे आवश्यक समय तथा सुविधा मिलेगी और वे अपनी योजना कार्यान्वित कर सकेगे। गाधीजी पर अुन्होने और भी पुस्तकें प्रकाशित की है, पर यहा अुन सबका अुल्लेख करनेकी जरूरत नही है। मैं केवल अितना ही दिखाना चाहता हू कि महात्माजीके जीवनके छोटे प्रसगोका सग्रह करनेके लिअे श्री प्रभु कितने योग्य है।

मानव-समाजके सारे पैगम्बरोमे गाधीजी सबसे अधिक सौभाग्यशाली सिद्ध हुअे मालूम होते है। अपने विचारोका प्रचार करने और अुन्हे व्यापक पैमाने पर विशाल क्षेत्रमे कार्यान्वित करनेमे किसी दूसरेको अपने जीवन-कालमे अुतनी सफलता नही मिली जितनी गाधीजीको मिली। अिसी तरह अपने आध्यात्मिक सदेशके व्यावहारिक प्रयोगके लिअे राजनीति, राष्ट्रवाद और आन्तर-राष्ट्रीयवादके क्षेत्र चुननेमें भी अुन्होने जैसी सफलता पायी वैसी किसी दूसरे पैगम्बरने नही पायी। अुनके सक्रिय जीवनका आरम्भ अफ्रीकाकी अधेरी भूमिमे हुआ और अिस तरह अुन्हे आरम्भमे ही दुनियाकी परिस्थिति और अुसके प्रचलित सघर्षोमें व्याप्त अुसके अेक बुनियादी कारण 'वशवाद' की बुराअीका बोध हो गया। अुन्होने देख लिया कि अिस बुराअीका अेक ही अिलाज है — सारे मानव-समाजकी अखण्ड अेकता। अुनके मनमे मानव-बन्धुत्वकी आध्यात्मिक कल्पनाका अुदय हुआ और वे अिस निश्चय पर पहुचे कि विज्ञान, अर्थशास्त्र और विश्वव्यापी सघटनकी ताकतसे सुसज्ज वशवाद पर आधारित साम्राज्योके बलका मुकाबला करनेके लिअे आत्मबलका विकास करनेकी आवश्यकता

है। जब गाधीजी दक्षिण अफ्रीकासे भारत आये, अुस समय यूरोप अेक विशाल युद्धमे फसा था और भारत नैराश्य और नेतृत्वके अभावसे पीडित अपना मार्ग अधेरेमे टटोल रहा था। सतभूमि भारतकी सिद्धियोके अुत्तराधिकारी, भारतकी युगोसे चली आयी समन्वय-मूलक सस्कृतिके व्याख्याता और सारी दुनियाके कल्याणकी क्षमता रखनेवाले अेक नवीन मानवतावादके पैगम्बर गाधीजीने देशके नेतृत्वका भार अपने अूपर ले लिया, देशकी आध्यात्मिक, बौद्धिक, आर्थिक और सास्कृतिक —सारी बिखरी हुअी शक्तियोको अिकट्ठा किया और भारतकी आत्माकी शोध और अभिव्यक्तिके लिअे अुन्हे अेक महान राष्ट्रीय आन्दोलनमे नियोजित किया। अुन्होने देशको अैसी सघटित अेकता प्रदान की जैसी पहले कभी किसीने नही की थी और अहिसक साधनोके जरिये प्रबल ब्रिटिश साम्राज्यसे डटकर लोहा लिया। अुन्होने दुनियाको दो-दो जागतिक युद्धोकी सहार-लीलाके कष्टसे गुजरते देखा और भारतको गुलामीसे मुक्त करके दुनियामे आत्मशक्तिका वह अमोघ प्रवाह प्रवाहित किया, जो धीरे-धीरे दुनियाकी राजनीतिको तथा अुसकी आशाओ और आकाक्षाओको नयी दिशामे मोड रहा है और नया रूप दे रहा है।

महात्माजीके जीवन और अुनके कार्यकालकी परिस्थितियो पर बहुत लोगोने बहुत कुछ लिखा है। अुनके अद्वितीय आध्यात्मिक जीवनके चित्रणका पहला प्रयत्न अीसाअी पादरी डोक और हेनरी अेस० अेल० पोलाकने किया था। डॉ० प्राणजीवन मेहता और श्रीमती अवन्तिका गोखले जैसे मित्रोने, जितना अुनसे बना अुतना अुनके लेखोके सग्रहका काम किया। मद्रासके मशहूर प्रकाशक श्री जी० अे० नटेसनने अुनके चुने हुअे भाषणो और लेखोका अेक अुत्तम सकलन प्रकाशित किया था। सन् १९२४ मे अपने जेल-जीवनके दिनोमे महात्माजीने खुद अपनी आत्मकथा और दक्षिण अफ्रीकामे हुअे सत्याग्रह-सग्रामका विस्तृत अितिहास लिखा। और अुसके बाद तो दुनिया-भरके कितने ही लेखकोने विविध दृष्टिकोणोसे अुनके जीवनके पर्यालोचनका प्रयत्न किया है। फ्रासके प्रतिभाशाली साहित्य-कार रोमा रोला और प्रसिद्ध अमरीकी पत्रकार लुअी फिशरने अपनी-अपनी पुस्तकोमे महात्माजीके अत्यन्त प्रकाशपूर्ण और प्रबोधक चित्र दिये

है। श्री तेन्दुलकरने आठ बडी-बडी कीमती जिल्दोंमें गाधीजीकी लम्बी और पूरी जीवनी प्रगट की है और श्री प्यारेलाल, जिन्हे गाधीजीके अेक निजी सेक्रेटरीकी तरह काम करनेका अलभ्य सौभाग्य प्राप्त हुआ था, घटनाओंकी भीतरी जानकारी और गाधीजीके मूल पत्रोंमे सुसज्जित अुनकी, जैसा वे कहते है, सर्वांग-सम्पूर्ण जीवनी लिखनेमें व्यस्त हैं।*

गाधीजी अपने मूल स्वभावकी दृष्टिसे कर्म-परायण व्यक्ति थे। किताबें पढने या लिखनेका अुनके पास समय ही नही था। लेकिन अुन्होने जो कार्य अपने लिअे स्वीकार कर लिया था, अुसके कारण अुन्हे समय समय पर लिखनेके लिअे बाध्य होना पडता था। अिसके सिवा अपने साप्ताहिकोंके लिअे तो अुन्हे लगातार प्रति सप्ताह लिखना ही पडता था। अिन लेखोमे वे भारत और दुनियासे सम्बन्धित विविध विषयो पर अपने विचार प्रगट करते थे। फिर अुन्हे पत्र भी बहुत लिखने पडते थे। दूर और पासके मित्रो तथा दुनियाके विभिन्न भागोसे लिखनेवाले पत्र-लेखकोको विविध प्रश्नो पर लिखे गये अुनके अिन पत्रोकी सख्या हजारो तक पहुचती है। अिन पत्रोको धीरे-धीरे अिकट्ठा किया जा रहा है तथा अुन्हे सम्पादित और अनुवादित करके विविध भाषाओमे प्रकाशित किया जा रहा है।

अिस तरह गाधीजीके जीवन और अुनके समयसे सम्बन्धित सामग्रीकी बहुत बडी राशि हमारे पास है। अुसका प्रकाशमे आना अभी अभी शुरू हुआ है। पश्चिमके लोग बहुत जाग्रत होते हैं, दुनियामे किसी नयी शक्तिका — अुसका प्रकार जो भी हो — अुदय हो तो अुनका ध्यान अुस पर तुरन्त जाता है। लेकिन अुन्होने गाधीजी और अुनके सदेशके जो वर्णन दिये है, अुनमें अुतावलीके सिवा जब-तब अपूर्णता और अप्रस्तुतताके दोष पाये जाते हैं। प्रकाशकोने अुनके प्रचारमे अपना लाभ देखकर अुन्हे प्रकाशित कर दिया है। गाधीजीके विषयमें भारतमे और

---

* अिस जीवनीके दो भाग अंग्रेजीमे नवजीवनमे प्रकाशित हो चुके हैं 'महात्मा गाधी — दि लास्ट फेज़ – १, २, प्रत्येक भागकी कीमत २० रुपये।

दुनियामें विशाल साहित्य निर्माण हो रहा है। मित्रों, साथियों और नजदीकके सहकारियोंका ध्यान अुनके जीवन पर — जैसा अुन्होंने अुसे देखा था — केन्द्रित रहा है। अुनके लिअे अभी यह सम्भव नहीं है कि वे भारतके अिस गांधीयुगके राजनीतिक और सांस्कृतिक अितिहासका विवरण लिख सकें। सच पूछो तो दुनियाके सारे खण्डोंकी विस्तृत भूमि पर गांधीयुगके प्रभावका स्पष्ट दर्शन अभी अभी होना शुरू हुआ है। फिर भी समय आ गया है जब कि हमारे लोग, पिछले सौ सालोंकी — जिन्हें अिस गांधीयुगका पूर्वगामी कहा जा सकता है — घटनाओंको और जो सांस्कृतिक प्रेरणायें अुनके पीछे काम करती रही हैं अुन्हें लेखबद्ध कर डालें। यह सोचना गलत है कि यह युग गांधीजीके जन्मसे शुरू हुआ। वह १८५७ के कुछ पहलेसे शुरू हो गया था और हमें पिछले सौ सालकी व्याख्या अिस तरह कर सकना चाहिये कि यह समय अुस नव-जागृतिकी तैयारीका काल था, जो महात्मा गांधीके जीवन और कार्यके माध्यमसे व्यक्त हुअी।

गांधीजीसे सम्बन्धित अिस विशाल साहित्यमें अुनके जीवनके छोटे छोटे प्रसंगोंका स्थान छोटा ही होगा, पर वह होगा बहुत रसप्रद और मूल्यवान, क्योंकि अुससे अुनके मिश्र और जटिल व्यक्तित्वको समझनेमें अच्छी मदद मिलती है। अेक अंग्रेज तत्त्वशास्त्रीने सूत्रशैलीमें अेक बड़ी मार्मिक बात कही है, वह कहता है, "पूर्णता छोटी छोटी बातोंके संग्रहसे बनती है और पूर्णता छोटी बात नहीं है।" गांधीजीके प्रसंगमें अिसी बातको श्री जयरामदास दौलतरामने निम्नलिखित शब्दोंमें कहा था

> "आदमीकी सच्ची महत्ता अुसकी बड़ी सफलताओंमें अुतनी नहीं होती जितनी अुसके छोटे-छोटे कार्योंमें। मनुष्यके जीवनमें सबसे ज्यादा मूल्य छोटी बातोंका है, अुनसे ही यह प्रगट होता है कि वह किस धातुका बना है। अुदाहरणके लिअे, यदि कोअी गांधीजीको, अुनके जीवनको और अुनकी शिक्षाओंको जानना-समझना चाहता है, तो अुसे अिस बातका अध्ययन करना चाहिये कि सच्ची मानवता क्या है और गांधीजीके दैनिक जीवन और अुनकी शिक्षाओंमें वह किस तरह काम करती थी।"

श्री चन्द्रशकर शुक्ल — महात्माजीके अपेक्षाकृत तरुण निजी सचिवोमे से अेक — ने गाधीजीके जीवनके विविध प्रसगोका सग्रह करके दुनियाका अेक बडा अुपकार किया है। वोरा अेन्ड क० द्वारा प्रकाशित अुनकी तत्सम्बन्धी चार सग्रह-पुस्तके अपने मानवीय रसके कारण मनोरम तो है ही, गाधीजीकी विविध जीवनियोकी पूर्ति करनेवाले प्रामाणिक अैतिहासिक लेखोकी तरह मूल्यवान भी है। अिस क्षेत्रमे सबसे पहला प्रयत्न शायद श्री जी० रामचन्द्रन्‌का था। गाधीजीसे सम्बन्धित अपने अिस कथा-सग्रहमे अुन्होने जो कुछ लिखा है, वह मनोरजक है और महत्त्वपूर्ण हे। किन्तु वह बहुत स्वल्प है और पाठकको अुससे पूरा सन्तोष नही होता। मेरा अपना सग्रह 'स्ट्रे ग्लिम्प्सेज ऑफ बापू'* सिवनी जेलमे दोपहरके भोजनके बाद मित्रोको सुनाअी गअी कहानियोका फल था। अिन कहानियो या झाकियोकी सख्या शायद और बढती, लेकिन मै जेलसे अेकाअेक रिहा कर दिया गया और वे जितनी थी अुतनी ही रह गयी। बादमे, अुसी तरहके और दूसरे प्रसग लिख डालने और अुक्त सग्रहको परिपूर्ण बनानेका मुझे समय ही नही मिला।

और अब मेरे मित्र श्री प्रभुने यहा अिस पुस्तकमे १५० प्रसगोका सग्रह किया है। अधिकाश प्रसग नये है और किसी पुराने सग्रहमे नही मिलते। श्री हॉरेस अेलेक्जैडरने मेरे सग्रहकी जो आलोचना की थी, वह श्री प्रभुके मौजूदा सग्रहको भी अुतनी ही अच्छी तरह लागू की जा सकती है। श्री हॉरेस अेलेक्जैडरका कहना था कि अपनी छोटी पुस्तिकामे मैने जो झाकिया दी है वे "खोयी हुअी भेडो" जैसी मालूम होती है। "अुन्हे न तो समय-क्रमके अनुसार रखा गया हे और न अुपयुक्त शीर्षक देकर अुनका वर्गीकरण किया गया हे।" मै थोडी कोशिश करता तो अुन्हे समय-क्रमके अनुसार रख सकता था, लेकिन मुझे यह जरूरी नही मालूम हुआ और न मुझे यही लगता है

* मूल हिन्दी पुस्तक 'बापूकी झाकिया' और अुसका यह अग्रेजी अनुवाद दोनो नवजीवन प्रकाशन मदिर, अहमदाबादसे प्रकाशित हुअे है। मूल हिन्दी कीमत १००, डाकखर्च ०२५, अग्रेजी सस्करण कीमत २००, डाकखर्च ०८१।

कि श्री प्रभुकी कहानियोके रस या मूल्यमे अिस तरहकी व्यवस्थासे कोअी सुधार होगा। अुन्होने बौद्ध कहानी-ग्रथ अगुत्तर-निकायकी शैलीका अनुगमन किया है। आरम्भमे अुन्होने छोटे-छोटे प्रसग दिये है और धीरे-धीरे वादमे लम्बे प्रसग दिये है। मेरा खयाल है कि मनोविज्ञानकी दृष्टिसे यह व्यवस्था काफी अच्छी है। पाठक ज्यो-ज्यो आगे पढता जाता है, अुसकी दिलचस्पी बढती जाती है और फिर वह पूरी पुस्तक समाप्त कर डालता है, अुसमे लगनेवाले समयकी परवाह नही करता।

यह तो जाहिर है कि किसी महापुरुषके विषयमे लिखी गयी किसी भी वातको कहानी या प्रसगकी सज्ञा नही दी जा सकती। लेकिन श्री प्रभुने अपने सग्रहको वहुत सूचक नाम दिया है 'अैसे थे वापू'। किसी प्रसग या कहानीको प्रसग और कहानी तभी कहा जा सकता है जव कि वह किसी तरह अर्थवान हो। पढनेके वाद भी वह हमे कअी दिनो तक याद रहे, अैसा गुण अुसमे होना चाहिये। अिस पुस्तकमे सगृहीत अधिकाश प्रसग अिसी श्रेणीके है। वे मनको पकडते है और हमारा रस कायम रखते है। वे महात्मा गाधीके चरित्र पर जहा-तहा अच्छी रोशनी — और कही-कही तो सर्चलाअिटकी रोशनी — डालते है। लेकिन कोअी छह-सात प्रसग अैसे है जो न तो किसी तरह सूचक या अर्थवान है और न मनको किसी तरह प्रभावित ही करते है। ज्यादा वारीकी करनेवाले साहित्यिक आलोचक कहेगे कि अुनको सग्रहमे स्थान नही मिलना चाहिये था। लेकिन गाधीजीके भक्त श्री प्रभुका अहसान मानेगे कि अुन्होने अपनी साहित्यिक सौन्दर्यकी रुचिके वजाय वृत्तान्त-लेखकके कर्तव्यको ज्यादा प्रधानता दी और अिन प्रसगोका वर्णन नही छोडा।

महापुरुषोके जीवनकी अेक विशेषता है, ज्यो-ज्यो समय वीतता जाता है त्यो-त्यो अुसका 'परिवर्धन' होता जाता है। अुनसे सम्वन्धित कथा-कहानियोकी सख्या और विविधता बढती जाती है और कुछ समय वाद अुनमे से सच कौन है और वनावटी कौन है, यह वताना मुश्किल हो जाता है। महापुरुषोकी मृत्युके वाद ही नही, अुनके जीवन-कालमे भी अैसा होता है। मनुष्यका स्वभाव, खासकर जहा वीरपूजाकी वात हो, अैसे प्रसगोका चित्रण अपनी वृत्ति और रुचिके अनुसार करनेकी ओर झुकता

है। अुदाहरणके लिअे, अिस मग्रहके १४६ वे प्रसगको लीजिये। अिम प्रमगमे महात्माजी सन् १९१५ मे जब पहली वार गान्तिनिकेतन गये, तव अुन्होने वहा जो छोटी-मोटी क्रान्ति कर डाली अुसका वर्णन किया गया है। अुम ममय मै वहा अवैतनिक गिक्षककी तरह काम कर रहा था ओर जिस छोटी-मोटी क्रान्तिमे मेरा भी कुछ हिस्मा था, जिसका वर्णन मैने अपनी 'वापूकी झाकिया' पुस्तकमे किया है। अुक्त प्रमग अिम पुस्तकमे जिम तरह पेश किया गया है अुममे श्री अेम० के० रायने वर्णन टैगोरके मुहमे कराया है, लेकिन यह वर्णन वास्तविक तथ्योसे मेल नही खाता।

> "अिम वीच गाधीजीने भगियोमे कहा कि कुछ दिनके लिअे तुम लोग कोअी काम मत करो। अुच्च जातिके लडके अछूत भगियोका काम करनेकी कभी कल्पना भी नही कर सकते थे। मैलेकी वदवूके मारे स्कूलमे जीना दूभर हो गया। तव गाधीजी स्वय मैलेके वरतन अपने मिर पर रखकर ले गये और मैला जमीनमे गाड आये। अुनका यह असाधारण साहस सक्रामक सिद्ध हुआ। गीघ्र ही अुच्चतम जातियो और अमीर घरोके लडके अछूत मेहतरोका काम करनेका मम्मान प्राप्त करनेमे अेक-दूसरेसे होड लगाने लगे।"

यह वर्णन वास्तविक नही हे और विलकुल कल्पना-प्रसूत है। गाधीजीने भगियोमे काम छोडनेको कभी नही कहा और अैसा कोअी दिन नही गया जब कि टट्टियोकी मफाअी न हुअी हो। हम कुछ गिक्षको और विद्यार्थियोने सुधारके आवेगमे अेक स्थायी टट्टी जरूर अुखाड फेंकी थी, क्योकि गाधीजीने अुसके विपयमे यह कहा था कि वह पुराने किस्मकी, स्वच्छताकी दृष्टिसे अेकदम अनुपयुक्त और विलकुल वेकार थी। मैलेके वरतन मिर पर रखकर ले जानेका अुनके लिअे न तो कोअी प्रमग ही आया और न अुनके पास अिसके लिअे ममय ही था। मै यह नही कहता कि वे अैसा कर नही सकते थे। दक्षिण अफ्रीकाके जेलोमे अुन्होने पाखाना-सफाअीका काम कअी वार किया था। और हम आश्रमवासियोके साथ भी अुन्होने अुसे लम्बे ममय तक किया था। लेकिन मैलेके वरतन हम लोग मिर पर रखकर कभी नही ले गये। हमारे पाम अिस कामके ज्यादा अच्छे तरीके थे।

प्रसग सख्या २५ मे गाधीजीके मुहसे यह वाक्य कहलाया गया है—"मेरे गुरुदेव हो या और कोअी, मेरा खाना जारी रहता है।" मुझे यह वात शक्य नही मालूम होती कि गाधीजीने टैगोरको 'मेरे गुरुदेव' कहा हो। गाधीजी हमेशा कविको 'गुरुदेव' ही कहते रहे, ठीक जैसे कि कवि अुन्हे 'महात्मा' कहते थे। 'मेरे गुरुदेव'—यह प्रयोग गाधीजीकी अपनी स्वाभाविक मनोवृत्ति नही प्रगट करता। 'मेरे' शब्दमे अेक अवज्ञापूर्ण अतिपरिचय और अधिकारका भाव है, जो अुनके स्वभावमे नही था।*

वगालके अेक मित्रने मेरी 'वापूकी झाकिया' पुस्तकमे सगृहीत अेक प्रसगमे तथ्योकी भूलकी ओर मेरा ध्यान खीचा था। अिसलिअे लेखक किसी घटनाका जो वर्णन दिया गया है अुसे ठीक-ठीक लेखबद्ध करनेमे कितनी भी सावधानी क्यो न रखे, वह निश्चयपूर्वक यह दावा नही कर सकता कि वर्णित घटना घटी ही होगी। लेकिन सामान्य मनको कहानी वहुत पसन्द है और अपने पूजापात्रकी महत्ताको वढानेके लिअे —चाहे वह अपने-आपमे कितनी ही वडी क्यो न हो—जरूरत होने पर वह अैसी कहानी गढनेमे सकोच नही करता।

अिसलिअे अिस्लामके पैगम्बर मुहम्मद साहवके अनुयायियोने अुनसे सम्वन्धित प्रसगोको अिकट्ठा करनेमे जो सावधानी दिखाअी है, हर प्रसगकी सत्यताको अुन्होने जिस कडाअीसे जाचा है, अुसके लिअे अुनकी तारीफ करनी होगी और अुनका अृण मानना होगा। गाधीजीसे सवधित प्रसगोका सग्रह करनेका सवसे अच्छा अुपाय तो यह होगा कि अुनके साथी ओर समकालीन लोग अुनके विषयमे प्रामाणिक जितना कुछ जानते हो अुसे लिख डाले, लेखक ओर प्रकाशक अुनके पास जो कुछ आये अुसकी जाच करे और अिस सग्रह-कार्यके लिअे समयको कुछ मर्यादा तय कर दी जाय। अिस मर्यादाके वाद नया जो कुछ प्रकाशमे आये, अुसे वहुत सावधानीपूर्ण जाचके वाद ही स्वीकार किया जाय और अुसकी

* काकासाहवकी यह प्रस्तावना पुस्तककी पहली आवृत्तिके लिअे लिखी गअी थी। अिसके अनुसार हिन्दी अनुवादमे सुधार करके 'मेरे' शब्द हटा दिया गया है।

सत्यता पूरी तरह प्रमाणित करनेकी जिम्मेदारी अुन पर ही डाली जाय जो अुसे प्रकाशमें लाये।

सिंगापुरके अेक भाअी, जो डॉ० आनन्द के० कुमारस्वामीके वडे प्रशंसक और भक्त है, गांधीजीके अैसे विशेष प्रसंग अिकट्ठे कर रहे हैं, जो अुनके जीवनकी खासकर गैर-भारतीयोंके सम्पर्कमें प्रगट हुअी विनोद-वृत्ति पर प्रकाश डालते हैं। यह तो हम जानते ही है कि अुनमें विनोद-वृत्ति भरपूर थी और आजीवन रही। यहां अुदाहरणके लिअे ३९वें प्रसंगको लीजिये, जिसमें गांधीजी अपनी शक्तिके सम्बन्धमें किये गये प्रश्नका अुत्तर देते बताये गये है। अुनका यह अुत्तर गांधीजीके स्वभावके साथ, जैसा मैंने अुसे जाना-समझा था, मेल नहीं खाता। यह हो सकता है कि अुन्होंने अपने प्रारम्भिक दिनोंमें कभी अैसी कोअी बात लिखी हो। मैं यह नहीं कहना चाहता कि अुत्तरमें जो कुछ कहा गया है, वह गांधीजीकी शक्तिका रहस्य नहीं बताता। लेकिन अुन्होंने अिस शैलीमें अुसे अिस तरह कहकर समझाया होगा, अिस बात पर मुझे सन्देह है।

अिस पुस्तकमें संगृहीत कुछ प्रसंग तो अेकदम पहली श्रेणीके है। अुदाहरणके लिअे ३३वें प्रसंगको लीजिये, जिसमें गांधीजी डाकियेका अुल्लेख 'मैन ऑफ लेटर्स' कहकर करते हैं और रैम्जे मैक्डोनाल्डको राजनीतिज्ञ बतलाकर राजनीतिज्ञोंकी विशेषताका वर्णन करते हुअे कहते हैं, "राजनीतिज्ञ प्रतीक्षा कर सकता है, क्योंकि यह अुसका काम है, वह हमेशा तब तक प्रतीक्षा करता रहता है जब तक परिस्थिति अुसे चलनेको मजबूर नहीं कर देती।" या ४६वें प्रसंगको लीजिये, जिसमें वे अपने कच्छ पहननेका कारण देते हुअे कहते हैं, "आप 'प्लस फोर्स' पहनते हैं, मैं 'माअिनस फोर्स' पहनना पसन्द करता हूं।" अुनका यह प्रसिद्ध प्रत्युत्तर सचमुच पहली श्रेणीका है। ४३वां प्रसंग गांधीजीके बनिस्बत कवि अिकबालके बारेमें ज्यादा बताता है, लेकिन किस्सेकी तरह वह प्रथम श्रेणीका है। ५९वां आज और अधिक महत्त्वपूर्ण मालूम होगा जब कि सारा जापान और बाकी दुनिया भी अणुबम — अब तो हाअि-ड्रोजन बम भी आ गया है — के परिणामोंसे बेचैनी अनुभव कर रही

है। गांधीजी कहते हैं कि प्रार्थनाके माध्यमसे काम करनेवाली आत्माकी शक्ति किसी भी अणुबमकी शक्तिसे कहीं अधिक है। १२५वां प्रसंग बतलाता है कि लोगोंके मन पर गांधीजीका जैसा प्रभाव अुनके जीवन-कालमें था, वैसा ही प्रभाव मृत्युके बाद भी कायम है।

गांधीजीके चरित्र-लेखकोंको अिन प्रसंगोंका अध्ययन और अुपयोग लाभकारी होगा, क्योंकि अुनमें वर्णित छोटी-छोटी घटनायें अुनके जीवनके विभिन्न पहलुओंको जितनी अच्छी तरह प्रगट करती हैं, लम्बे-लम्बे निबन्ध अुतनी अच्छी तरह नहीं बता सकते। मैं आशा करता हूं कि अिस संग्रहमें वर्णित कुछ प्रसंग स्कूलोंकी पाठ्य-पुस्तकोंमें और दुनियाकी महान सूक्तियोंके और विश्वके महापुरुषोंके चरित्रके प्रसंगोंके संकलनोंमें स्थान पायेंगे।

मैं श्री प्रभुको पढनेवाली जनताके सामने गहरी भक्ति और प्रेम-पूर्ण श्रमके साथ तैयार किया गया अैसा स्वादिष्ट भोजन परोसनेके लिअे फिर अेक बार धन्यवाद देता हूं।

काका कालेलकर

अनुक्रमणिका

ऐसे थे बापू

मौतका सपना

"मैं नही मानता कि श्री गणेशशकर विद्यार्थीका वलिदान व्यर्थ गया है। अुनकी वीर-वृत्तिसे मुझे सदा प्रेरणा मिलती थी। मुझे अुनकी कुर्बानीसे अीर्ष्या है। क्या यह आघात पहुचानेवाली वात नही है कि अिस देशने दूसरा गणेशशकर पैदा नही किया ? अुनके वाद अुनकी खाली जगह भरने कोअी नही आया। गणेशशकरकी अहिंसा पूर्ण अहिंसा थी। मैं भी अपने सिर पर कुल्हाडीके आघात सहता हुआ अिसी तरह शान्तिसे मर सकू तो मेरी अहिंसा भी पूर्ण होगी। मै अैसी मौतका सपना सदा ही देखा करता हू और मैं अिस सपनेको सदा वनाये रखना चाहता हू। वह मृत्यु कितनी अुदात्त होगी, जव अेक ओरसे मुझ पर खजरका वार होगा, दूसरी तरफसे कुल्हाडीकी चोट पडेगी, तीसरी दिशासे लाठीका प्रहार होगा और सव तरफसे लात-घूसे और गालिया पडेगी और यदि अिन सवके वीचमे मैं अवसरके अनुरूप अूचा अुठकर अहिंसक और शान्त वना रह सका और दूसरोको भी अैसा ही आचरण और व्यवहार करनेका अनुरोध कर सका तथा अन्तमे अपने चेहरे पर प्रफुल्लता और होठो पर मुस्कराहटके साथ मर सका, तभी मेरी अहिंसा पूर्ण और सच्ची सिद्ध होगी। मै अैसे अवसरके लिअे तडप रहा हू और यह भी चाहता हू कि काग्रेसजन अिस प्रकारके मौकेकी तलाशमे रहे।"

[यह सन्देश महात्मा गाधीने श्री गणेशशकर विद्यार्थीकी, जो १९३१ मे कानपुरके हिन्दू-मुस्लिम दगेमें मारे गये थे, शहादतके वार्षिकोत्सवके अवसर पर भेजा था।]

१. जीवन-बूटी

अेक आगन्तुकने गाधीजीसे यह सवाल किया "क्या आपके खयालसे जीवनमें विनोद-वृत्तिकी जरूरत है?" अुनका जवाब यह था "मुझमें विनोद-वृत्ति न होती तो मैंने कभीकी आत्महत्या कर ली होती।"

२. बिदाअी-अुपहार

अेक अग्रेज पत्रकार महात्माजीसे अुनके मरनेके कुछ ही समय पहले मिले थे। अुन्होने पूछा, "गाधीजी, आपके पास मेरे लिअे कोअी चीज है?" अुत्तर मिला, "और तो कुछ नही, मेरा शाल चाहे तो ले लीजिये।"

३. सिह और मेमना

'टाअिम्स ऑफ अिडिया' के नागपुरके प्रतिनिधिने पूछा "साल भरके भीतर आपका स्वराज्य स्थापित हो जाय तो अग्रेजोका क्या होगा?" गाधी ीने जवाब दिया "सिह और मेमना दोनो अेकसाथ रहने लगेगे।"

४. अुनका धर्म

महात्माजीसे मुलाकात करते समय अेक नौजवान अमरीकी मिशनरीने अुनसे पूछा कि आप कौनसा धर्म मानते है और भारतके भावी धर्मका क्या स्वरूप होनेकी सभावना है।

अुनका अुत्तर बहुत सक्षिप्त था। अपने कमरेमें लेटे हुअे दो बीमार आदमियोकी ओर सकेत करके वे बोले, "मेरा धर्म सेवा करना है। भविष्यकी चिन्ता मैं नही करता।"

५. जब बर्नार्ड शा गांधीजीसे मिले

१९३१ के अन्तिम दिनोमें जब गाधीजी लदनमें ठहरे हुअे थे, तब जार्ज बर्नार्ड शा अुनसे मिलने आये। अिस मुलाकातका वर्णन करते हुअे शाने कहा "जब मैं गाधीसे मिलने गया तो मैंने देखा कि वे अेक बहुत बडी गद्देदार कुर्सी पर बैठे असुविधा अनुभव कर रहे थे। मैंने स्थितिको तुरत भाप लिया। मैंने कहा 'आप घरकी तरह यहा भी फर्श पर ही क्यो नही बैठ जाते?' मै भी फर्श पर ही बैठ गया और क्षणभरमे हम मित्र बन गये।"

६. जन्मदिनका संदेश

२ अक्तूबर, १९३३ को गाधीजीके जन्मदिनके अवसर पर विश्व-धर्म-सघ (World Fellowship of Faiths) के सयोजकोने अुनसे अेक सन्देश भेजनेका अनुरोध किया था। गाधीजीने अुन्हे यह अुत्तर भेजा था

"मै जो जीवन जी रहा हू यदि अुसके द्वारा मैं कोअी सन्देश नही दे रहा हू, तो लेखनी द्वारा क्या मदेश भेज सकता हू?"

७. शराबकी बुराअी

१९३१ के अन्तिम दिनोमे जब गाधीजी लदनमे ठहरे हुअे थे तब अुनके अेक अग्रेज विद्यार्थीने पूछा "आप अुन लोगोके प्रति, जो शराब पीते है, अितने अनुदार क्यो है?"

"क्योकि अिस अभिशापके परिणामोसे जिन्हे कष्ट होता हे अुनके प्रति मैं अुदार हू," गाधीजीने अुत्तर दिया।

८. जन्म-दिवसकी थैली

२ अक्तूबर, १९४७ को गाधीजीके जन्म-दिवस पर अुन्हे भेट करनेके लिअे अेक भारी थैली अिकट्ठी की गअी थी। अुस पर आखे लगाये हुअे श्रीमती सरोजिनी नायडूने पूछा, "मान लीजिये यह थैली आपको भेंट न करके मै लेकर चलती वनू तो आप क्या करेगे?"

गाधीजी "मै जानता हू कि तुम यह भी कर सकती हो!" (हसी)

९. सफलताका रहस्य

मदुराअीके अुत्तरमे कोअी ३० मील दूर, सिरुमलाअी पहाडीकी तलहटीमे, गाधीग्राम नामक अेक सस्था है, जो गाधीजीके वताये हुअे मार्ग पर रचनात्मक कार्यमें लगी हुअी है। ७ अक्तूबर, १९४७ को ववअीके मुख्यमत्री श्री वालासाहव खेरने अुसका अुद्घाटन किया था। अुस अवसर पर महात्माजीने यह छोटासा सन्देश भेजा था "जहा सत्यका साम्राज्य है वहा सफलता हाथ वाधे खडी रहती है।"

१०. क्या दुनिया सुधर रही है?

अेक मुलाकातीने पूछा "दुनिया सुधर रही है या विगड रही है?"

गाधीजीने अुत्तर दिया "जव तक मेरा परोपकारी ओश्वरमे विश्वास है, मुझे यह श्रद्धा रखनी चाहिये कि भले दिखाअी दूसरी ही वात देती हो, परन्तु दुनिया जरूर सुधर रही है।"

११. 'तुम्हारा क्या हुआ?'

१९२३ में जव गाधीजी यरवडा जेलमे थे तव कस्तूरवा कुछ आश्रम-वासियो सहित अुनसे मिलने गअी। गाधीजीने और वातोके साथ साथ जमनालालजी और विनोवाके हालचाल भी पूछे। अुन्हे वताया गया कि वे जेल चले गये है। यह समाचार सुनकर गाधीजी वहुत ही खुश हुअे, मगर अुन्हे अिस वात पर आश्चर्य हुआ कि कस्तूरवा स्वय अभी तक वाहर ही है।

"वे मुझे पकडते ही नही। मैं क्या करू?" कस्तूरवा वोली।

१२. कालो बिल्ली

१९३१ में गाधीजी मि० लायड जार्जसे चर्टमें अुनके घर मिलने गये थे। मि० लायड जार्जने अुम ममयका अेक मजेदार किस्सा सुनाया। ज्यो ही गाधीजी घरमें अपनी कोच पर वैठे, त्यो ही अेक काली विल्ली जो पहले कभी नही देखी गअी थी खिडकीमें मे आअी और गाधीजीकी गोदमे वैठ गअी। जव गाधीजी चले गये तो विल्ली भी गायव हो गअी और फिर कभी लौट कर नही आअी। वही विल्ली अेक वार फिर अुस समय आअी थी जव कुमारी स्लेड (मीरावहन) मि० लायड जार्जसे चर्टमें मिलने गअी थी।

१३. टैगोरको जन्म-दिवसका संदेश

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोरको अुनके ८०वें जन्म-दिवस पर महात्मा गाधीकी ओरसे यह सन्देश प्राप्त हुआ

"चार वीमी काफी नही है। भगवान करे आपकी पाच वीसी पूरी हो। प्रेम!"

गुरुदेवका अुत्तर था

"सन्देशके लिअे धन्यवाद! परन्तु चार वीसी ही वहुत ज्यादा है, पाच वीसी तो असह्य हो जायगी।"

१४. महात्माजी और पूंजीपति

अेक वडे पूजीपति और व्यवसाय-स्वामीने अेक वार गाधीजीसे यह प्रश्न किया "राष्ट्रके कामके लिअे आप मुझे चाहते है या मेरा धन?"

"तुम्हे," सीधा जवाव मिला।

"मै व्यवसाय छोडकर आपके साथ हो लिया तो आप मुझे क्या काम वतायेगे?"

"चरखा," गाधीजीने चरखा चलाते चलाते अुत्तर दिया।

१५. 'अीश्वरका वनमानुस'

दूसरी गोलमेज परिषदके सिलसिलेमे १९३१ के लदनके निवासकालमे गाधीजीको लेडी अेस्टरने अेक दोपहरके भोजमें आमत्रित किया था। जब वे शाल ओढे और घुटनो तक धोती पहने मेज पर बैठे, तो लेडी अेस्टरने अपनी हमेशाकी जिन्दादिलीके अनुसार अपने विशिष्ट अतिथिको 'वाअिल्ड* मैन ऑफ गॉड' बताया। अिस वर्णनसे प्रसन्न होकर गाधीजी हसे और फौरन् जवाब दिया, "और तुम 'वाअिल्ड* वोमैन ऑफ गॉड' हो!"

१६. चायको नमस्कार!

"गाधीजी अपने तीसरे पहरके चायके प्यालेका मजा लिया करते थे। लेकिन अेक दिन मैंने गभीरतासे और कुछ मजाकमे अुन्हे यह पूछकर विचारमे डाल दिया कि क्या आपका नियमित रूपसे यह नशीला पेय लिये बिना काम नही चल सकता? 'तुम्हारा क्या मतलब?' अुन्होने जरा चिन्ताके साथ पूछा। मैंने अुत्तर दिया, 'क्यो, क्या चाय अुत्तेजक या नशीला पदार्थ नही है?' क्षणभर सोचकर वे गभीर होकर बोले 'है तो जरूर।' और अुसी दिनसे चाय निषिद्ध हो गअी।" — 'वेजिटेरियन न्यूज़' मे मि० अेच० अेस० अेल० पोलाक।

१७. बकिंघम महलमें

"गाधीजीके पोशाक सम्बन्धी रिवाजोसे आजाद रहनेकी हद अुस समय हो गअी, जब मैने देखा कि वे अपने कधो पर कम्बल लपेटे हुअे गोलमेज परिषदके प्रतिनिधियो और दूसरे मेहमानोके सम्मानमे दिये गये शाही भोजमे राजा और रानीसे मिलनेके लिअे बकिंघम महलकी गलीचेसे मढी सीढियो पर चढ रहे है। मेरा खयाल है कि अिससे पहले कोअी आगन्तुक अिस वेषमे वहा नही देखा गया होगा और न आसानीसे यह

* नियन्त्रण या मर्यादाको स्वीकार न करनेवाला।

कल्पना ही की जा सकती है कि और किसीको अुस महलमें अितनी स्वतत्रता दी गअी होगी।" — सर अब्दुल कादिर।

१८. जीवन-बीमा

गाधीजीको आगरेके अेक मित्रने पूछा, "आपने अपने जीवनका वीमा कराया है?"

गाधीजीका अुत्तर यह था "मैने १९०१ मे अपने जीवनका वीमा जरूर कराया था, लेकिन थोडे समय वाद मैने अुसे छोड दिया। क्योकि मुझे महसूस हुआ कि मै अीश्वर पर अविश्वास कर रहा हू और अपने अुन रिश्तेदारोको, जिनके हितमे वीमा कराया गया था, अपने पर या अुस रुपये पर जो मैं अुनके लिअे छोड जाअूगा आश्रित वना रहा हू। अुन्हे मै अीश्वर पर या अपने आप पर आश्रित नही वना रहा हू। वीमा छोडते समय मैं जिस राय पर पहुचा था वह वादके अनुभवसे पक्की हो गअी हे।"

१९. केबिनमैनकी युक्ति

गाधीजीकी अप्रैल १९४६ की वम्वअीसे दिल्लीकी यात्रामे जव अुनकी स्पेशल गाडी पश्चिमी रेलमार्गके गगापुर स्टेशनके पास पहुची, तो अेक नौजवान मुसलमान केविनमैनने, जो वहा ड्यूटी पर था, गाडीको निकल जानेका सकेत न वताकर रोक दिया। फिर वह गाधीजीके दर्शनोके लिअे दौडा-दौडा अुनके डिव्वे पर पहुचा। गाधीजीको सम्वोधन करके वह युवक वोला, "अितने वर्षोसे मैं आपके दर्शनोकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह अिच्छा मेरी आज पूरी हुअी। कृपा करके अपने दिल्ली-मिशनमे हम लोगोका ध्यान रखिये।"

२०. प्रार्थनाकी शक्ति

हिन्दू-मुस्लिम अेकता करानेके लिअे महात्माजीने सितम्बर १९२४ में २१ दिनका अुपवास किया था। अुसके दौरानमे जब डॉक्टरने देखा कि अुपवासके बारह दिनके अन्तमे गाधीजी अत्यन्त दुर्बल हो गये है, तो अुन्होने गाधीजीसे शरीरके नष्ट हो जानेकी आशका प्रगट की। गाधीजीकी आखोमें सूर्यके प्रकाशकी-सी मुसकान चमक अुठी और अुन्होने अितना ही अुत्तर दिया, "आप प्रार्थनाकी शक्तिको भूल गये है।"

अन्तमें प्रार्थनाकी शक्तिकी सचमुच विजय हुअी, क्योकि जैसा दुनियाको मालूम है, गाधीजी अुस सकटको पार करके जीवित रहे।

२१. 'बासे पूछिये'

जब गाधीजी १९३१ की गोलमेज परिषदके सिलसिलेमे लदनमे थे, तब श्रीमती यूस्टेस माअिल्सने अुनसे पूछा "आपको कभी गुस्सा आता है?"

"श्रीमती गाधीसे पूछिये," सीधा ही अुत्तर मिला, "वे आपको बतायेगी कि मै ससार भरसे बहुत अच्छा बरताव करता हू, मगर अुनसे नही करता।" अुत्तर सुनकर श्रीमती माअिल्स गाधीजीकी विनोद-वृत्ति पर और भी प्रसन्न हो गयी।

वे बोली, "मेरे पति तो मुझसे बहुत अच्छी तरह पेश आते है।"

"तो," गाधीजीने पलट कर कहा, "मुझे विश्वास है कि मि० माअिल्सने आपको भारी रिश्वत दे रखी है।"

२२. अुनकी विनोद-वृत्ति

"जिन बातोको जानकर अनेक अग्रेज लोगोको खुशी हुअी अुनमे से अेक यह थी कि अिस बडे महात्मामे भी विनोद और हसीकी वैसी ही वृत्ति है जैसी हममे है। मुझे कुछ दूर तक अुन्हे अपनी मोटरमे बैठाकर ले जानेका सौभाग्य मिला था। रास्तेमे अुन्होने मुझे अपनी सम्मानसूचक अुपाधिके बारेमें पूछा। वे बोले, "आपके नामके साथ लगा हुआ यह डी० डी० का पुछल्ला क्या है?" मैने समझाया कि यह डॉक्टर

ऑफ डिवीनिटी* की अुपाधि है, जो ग्लासगो विश्वविद्यालयने मेरा सम्मान करनेको मुझे प्रदान की है। "अच्छा," अुन्होंने कहा, "तो आपको अीश्वरका सव हाल मालूम है?" — कुमारी मॉड रॉयडन

२३. 'जगतका प्रकाश'

जव 'अछूतों' के अुद्धारके प्रश्नकी चर्चा हो रही थी तव अेक वयस्क युवकने गाधीजीसे पूछा, "महाराज, जव अुन लोगोंने आपको कन्याकुमारीके मदिरके भीतर जानेसे रोका तो आप अुसमे जवरदस्ती क्यो नही घुस गये? यह अैसा अपमान था जो आपको सहन नही करना चाहिये था। महाराज, आप तो जगतका प्रकाश है? आपको वाहर रखनेवाले वे होते ही कौन है?"

"हा," गाधीजीने हसकर कहा, "या तो मै जगतका प्रकाश नही था, और अुनका मुझे वाहर रखना ठीक ही था, या मै जगतका प्रकाश हू और अुस हालतमें मुझे जवरन् भीतर नही जाना चाहिये था।"

२४. कायरतासे हिसा अच्छी है

गाधीजी सदा यह वात स्पष्ट करते रहते थे कि अुनका अहिसा-धर्म वीरोका धर्म है। लेकिन जहा कायरता और हिसाके वीच चुनाव करना पडे वहा अुनकी साफ राय थी कि वे हिसाको कायरता पर तरजीह देते है। अिस विपयकी चर्चा करते हुअे गाधीजीने 'यग अिडिया' मे अेक लेखमे अिस प्रकार लिखा था "अुदाहरणके लिअे, जव मेरे सवसे वडे लडकेने पूछा कि '१९०८ मे जव आप पर लगभग घातक हमला हुआ था अुस समय मै मौजूद होता तो मुझे क्या करना चाहिये था? क्या मै भाग जाता और आपको मरने देता या जितना भी शरीर-वल मुझमे था और जिसका मै अुपयोग करना चाहता अुसे काममे लेकर मुझे आपकी रक्षा करनी चाहिये थी?' तव मैने अुससे कहा कि हिसाका अुपयोग करके भी मेरी रक्षा करना तुम्हारा धर्म था।"

---

* अीश्वर तत्त्वका सम्पूर्ण ज्ञान रखनेवाला, धर्मशास्त्रका ज्ञाता।

२५. खुद अपने पर हंसी

दिसम्बर १९४० मे जब गाधीजी शान्तिनिकेतन गये तो अुन्हे अेक चित्र दिखाया गया। अुसमे वे कविवर रवीन्द्रनाथके साथ अुसी कमरेके सामने बैठे हुअे थे, जहा विश्वविख्यात 'गीताजलि' लिखी गअी थी।

जब गाधीजी यह चित्र देख रहे थे तो किसीने कह दिया, "बापूजी, जब यह चित्र लिया गया था तब आप कुछ खा रहे थे।" गाधीजीने चित्र अपने हाथोंमें लेकर कुछ देर अुसे देखा और खिलखिला कर बोले "गुरुदेव हो या और कोअी, मेरा खाना तो चलता ही रहता है।"

२६. 'थियॉसॉफिस्ट नहीं'

गाधीजीसे यह पूछने पर कि आप कभी थियॉसॉफिकल सोसायटीके सदस्य रहे है या नही, अुन्होने यह कहा बताते है—मै सदस्य कभी नही रहा, पर अुसके विश्वबन्धुत्व और अुससे फलित अुसके सहिष्णुताके सन्देशके साथ मेरी सहानुभूति सदा रही है।

अुन्होने यह भी कहा "थियॉसॉफिकल मित्रोका मै बहुत ऋणी हू, अुनमे मेरे अनेक मित्र है। आलोचक लोग मैडम ब्लावट्स्की या कर्नल ऑल्कॉट या डॉ० बेसेण्टके विरुद्ध कुछ भी कहे, मानवताको अुनकी देन सदा अूचे दर्जेकी मानी जायगी। अिस समाजमे भरती होनेमे मेरी रुकावट अुसका गुप्त पहलू—अुमकी गूढ विद्या रही है। अुसने मुझे कभी आकर्षित नहीं किया।"

२७. अुनका दैनिक भोजन

लदनके 'दि स्पेक्टेटर' के सम्पादक १९३४ में गाधीजीसे मिलने भारत आये थे। मुलाकातके दौरानमे अुनके प्रश्न करने पर गाधीजीने बताया

"मेरे दैनिक भोजनकी सूची यह है आठ बजे नाश्तेमे मैं १८ औंस बकरीका दूध और ४ नारगिया लेता हू, दोपहरके भोजनमे अेक बजे मैं फिर १६ औंस दूध, अगूर, नाशपाती या और कोअी फल लेता हू। मेरा

शामका खाना ५ और ६ वजेके वीचमें होता है। मैं अेक चम्मच भर वादामकी लुगदी, वीस तीस खजूर, कभी टमाटर और हरी पत्तियोका सलाद खाता हू। अिससे वदहजमी नही होती। आप देखेंगे कि मैं स्टार्च या अन्न नही खाता।"

२८. 'आजादीकी कीमत मौत'

'आजादीकी कीमत मौत है'—यह लगभग भविष्यवाणी जैसा वचन गावीजीके अुन पत्रोमे से अेकमे था, जो अुन्होंने वीकानेरके डॉ० गोप गुरुवख्शको अपनी मृत्युसे थोडे ही पहले लिखे थे। डॉ० और श्रीमती गोप गुरुवख्श काफी लम्बे समय तक गावीजीके सेवाग्राम आश्रमके निवासी रहे थे। और गावीजी स्वय काफी लम्बे अर्से तक अुन्हें कताअी, पाखाना-सफाअी और भोजन वनाने आदिकी शिक्षा देते रहे थे और अुनका मार्ग-दर्शन करते रहे थे। जव वे आश्रम छोडकर जा रहे थे तो अुन्हें गावीजीकी ओरसे यह विदाअी सदेश मिला था "मेरे जीवनमें जो वात अच्छी लगे अुसीका अनुसरण कीजिये।"

२९. 'वन्दे मातरम्'

अगस्त १९४७ मे अपने कलकत्तेके निवासकालमें गाधीजीने अपने अेक प्रार्थना-प्रवचनमें वन्दे मातरम्का जिक्र किया। अुसे प्रार्थनाके ठीक पहले अेक महिलाने गाया था। जव गीत शुरू हुआ तो विशाल जनसमूह खडा हो गया और भक्तिपूर्वक खडा रहा।

महात्मा गाधी अकेले ही वठे रहे, क्योंकि अुन्होंने वादमें वताया "मैंने यह सीखा है कि हमारी सस्कृति यह नही चाहती कि जव कोअी राष्ट्रीय गीत या भजन गाया जाय तव सम्मानके चिह्नस्वरूप हमें खडा होना चाहिये। मेरे खयालसे यह पश्चिमसे आअी हुअी अनावश्यक वस्तु हे। आखिर तो महत्त्व मानसिक वृत्तिका है, न कि अूपरी दिखावेका।"

३०. सच्चे योगीकी भांति

अपने कोकणके दौरेमे गाधीजी सयोगवश लागे गावमे आधी रातको पहुचे। ग्रामवासी घटोसे अुनके आनेकी अुत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने भाषणमे गाधीजीने अुनसे कहा, "मै नही जानता कि आपको अितनी देर तक अितजार कराते रहनेके लिअे मै आप लोगो पर दया करू या अपने आप पर। परन्तु हमने वही किया है जो गीताका योगी करता है 'साधारण मनुष्योके सोनेकी जो रात होती है वह योगीके जागनेका दिन होता है।' मै आपको आपके अिस योगाभ्यास पर बधाअी देता हू। परन्तु यदि आप गरीबोकी सहायता करके और हमारी खादी खरीद कर यह दिखा दे कि आप सच्चे योगी है, तो आप मेरी बधाअीके ज्यादा हकदार होगे।" गाधीजीके अिन विनोद-वचनो पर लोगोको प्रसन्नता हुअी और हसी आअी।

३१. शिष्ट प्रत्युत्तर

जनवरी १९३० मे कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर साबरमती आश्रम आये थे। अुन्होने गाधीजीसे कहा "महात्माजी, मै अब ७० वर्षका हो गया हू और अिसलिअे आपसे अुम्रमे बहुत बडा हू।"

गाधीजीने हार्दिक मुस्कराहटके साथ कहा, "परन्तु अेक ६० वर्षका बूढा नाच नही सकता, जब कि ७० वर्षका जवान कवि नाच सकता है।" कविने कहा, "यह सच है"। और बोले, "आप दूसरी कारावास-चिकित्सा की तैयारी कर रहे है। काश वे मुझे भी मौका दे।"

गाधीजी बोले, "मगर आपका चाल-चलन ठीक नही है।" अिस पर आश्रमवासियोमे, जो भारतके अिन दो महान सपूतोके विनोद-द्वन्द्वका आनन्द लूट रहे थे, हसी गूज अुठी।

३२. 'शुभ-आगमन' या 'शुभ-गमन'?

अनेक अवसरो पर गाधीजीकी विनोद-वृत्ति अप्रत्याशित ढगसे प्रगट हो जाती थी। नवम्बर १९३३ मे मध्यप्रदेशके दौरेमे अुन्हे लाजीमें जो वस्तुअे भेट की गअी थी, अुन पर 'शुभ-आगमन' शब्दके स्थान पर 'शुभ-गमन' लिखा हुआ था। अिसका हवाला देकर गाधीजीने कहा, "चूकि आप चाहते है कि मै चला जाअू, अिसलिअे मै जल्दी ही बैतूल पहुच जाअूगा।"

वहीकी बात है। म्युनिसिपल अध्यक्षने अभिनन्दन-पत्र पढा और अुसे खुद ही लेकर चलने लगे कि गाधीजीने कहा, "आप अिसे नही ले जा सकते। अिसे तो मुझे देना है।" अुनकी बातसे श्रोताओमें बडी हसी हुअी।

३३. प्रधान मंत्रीसे पहले डाकिया

'डेज़ विथ बर्नार्ड शा' के लेखक मि० अेस० विन्स्टेनका गाधीजीसे १९३१ मे जब वे लदन गये थे परिचय हो चुका था। अुनके कथनानुसार अेक बार तत्कालीन ब्रिटिश प्रधान मत्री मि० रैम्जे मैक्डोनाल्ड गाधीजीसे किसी जरूरी सलाह-मशविरेके लिअे आये। परन्तु तभी बाअूसे नाअिट्स-ब्रिज तक पैदल चलकर अेक डाकिया भी आया था, क्योकि अुसे भारतके महान नेताको प्रणाम करनेकी अिच्छा थी।

"मै पहले 'मैन ऑफ लेटर्स'* से मिलूगा," गाधीजीने निश्चयपूर्वक कहा और फिर मि० विन्स्टेनको समझाया "देखिये, राजनीतिज्ञ प्रतीक्षा कर सकता है, क्योकि यह अुसका काम है, वह हमेशा तब तक प्रतीक्षा करता रहता है जब तक परिस्थिति अुसे चलनेको मजबूर नही कर देती।"

---

* 'मैन ऑफ लेटर्स' मे श्लेष है, अुसका अर्थ है — विद्वान आदमी। यहा अुसका प्रयोग डाकियेके लिअे किया गया है।

३४. पितृत्वकी होड़

१९३१ में जब गाधीजी लदन गये थे तो किंग्सले हॉलमें ठहरे थे। वहा अुनके हस्ताक्षर लेने बहुत लोग आते थे। गाधीजीके अिन भक्तोमे अेक भूतपूर्व जल-सैनिक भी था। अिस सिलसिलेमे गाधीजीको अुसका जो परिचय दिया गया था अुसमे यह भी कहा गया था कि अुसने कुछ वर्ष मीराबहनके पिताकी नौकरी की थी और अुसका दामाद गाधीजीको दूध मुहया कर रहा है।

"तुम्हारे कितने बच्चे है?" गाधीजीने अुससे पूछा।

"महाराज, आठ है। चार लडके और चार लडकिया।"

"मेरे चार लडके है," गाधीजी बोले, "अिसलिअे मै तुम्हारे साथ आधी दूर ही दौड लगा सकता हू।" सारा समुदाय अट्टहास कर अुठा।

३५. अुनकी शक्तिका रहस्य

गाधीजीकी शक्तिका रहस्य क्या था? अिसका अुत्तर अेक बार अुन्होने स्वय दिया था

"रहस्य?
शुद्ध हृदय,
शुद्ध अन्त करण,
ठडा दिमाग,
अीश्वरका नियमित ध्यान,
कामोत्तेजक भोजन और अिन्द्रिय-सुखसे परहेज,
मदिरा, धूम्रपान और मसालोसे परहेज,
सर्वथा शाकाहारी भोजन,
सब मानव-बन्धुओसे प्रेम।"

३६. मनुष्य और मशीन

जब १९३१ मे गाधीजी बर्मिघम गये थे तब बर्मिघमके बिशप अुनसे मिले थे। अुन्होने विज्ञान और मशीनोकी बहुत प्रशसा की। अुन्होने कहा कि ये मनुष्यको शरीर-श्रमसे मुक्त करनेको बनाये गये है, ताकि वह अपना सारा या अधिकाश समय बौद्धिक कार्यमे लगा सके।

गाधीजीने बिशपको अिस पुरानी कहावतके आधार पर कि 'बेकार हाथोको शैतान सदा कुछ न कुछ काम जुटा ही देता है' याद दिलाया कि अिस बातका कोअी भरोसा नही कि औसत आदमी अपने सारे फालतू समयका सदुपयोग ही करेगा। परन्तु बिशपने अिसे स्वीकार नही किया। वे बोले, "देखिये, मै अेक घटे रोजसे ज्यादा शारीरिक काम नही करता। बाकीका अपना समय मै बौद्धिक कार्योमे लगाता हू।"

गाधीजीने हसकर कहा, "मुझे मालूम है, परन्तु सभी बिशप बन जाये तो बिशप लोगोका धधा ही जाता रहे।"

३७. अेक मिशनरीका अुत्साह

२८ जुलाअी, १९२५ को कलकत्तेकी अीसाअी युवतियोकी सस्थाके भवनमे अीसाअी मिशनरियोकी अेक सभामे भाषण देते हुअे गाधीजीने लदन और दक्षिण अफ्रीका दोनो जगहोके अीसाअियोके साथ बधे अपने सम्पर्कका हाल सुनाया। अुन्होने कहा

"मेरे जीवनमे अेक समय अैसा भी था जब मेरे अेक बहुत सच्चे और घनिष्ठ मित्र, अेक महान और भले क्वेकरकी नीयत मुझ पर बिगडी थी (हसी)। अुनका खयाल था कि मै अितना भला हू कि मुझे अीसाअी हो ही जाना चाहिये। मुझे दु ख है कि मैने अुन्हे निराश किया। दक्षिण अफ्रीकाके मेरे अेक मिशनरी मित्र अब भी मुझे लिख कर पूछते रहते है 'आपका क्या हाल है?' मै अपने मित्रको सदा यही कहता हू कि जहा तक मै जानता हू मेरा हाल बिलकुल अच्छा है।"

३८. 'गांधी-टोपी' की अुत्पत्ति

मि० अेच० अेस० अेल० पोलाकने, जो गांधीजीकी दक्षिण अफ्रीकी मुहिममें अुनके निकटके साथी रहे थे, कुछ वर्ष पूर्व 'मैंचेस्टर गार्डियन' में अेक पत्र द्वारा 'गांधी-टोपी' की अुत्पत्तिका स्पष्टीकरण किया था। अुन्होंने लिखा था

"आश्चर्यकी बात है कि भारतीय राष्ट्रवादियोंमें भी बहुत थोड़े लोगोंको कथित 'गांधी-टोपी' की अुत्पत्ति याद है। यह अुस वर्दीका भाग थी जो मि० गांधीने अेक गैर-गोरे राजनीतिक कैदीकी हैसियतसे १९०७ से १९१४ के दक्षिण अफ्रीकाके भारतीय निष्क्रिय प्रतिरोध संग्रामके दिनोंमें पहनी थी। बादमें जब भारत लौट आने पर अुन्होंने अहिंसक सविनय आज्ञा-भंगकी पद्धतिका और अधिक विकास किया, तब अुन्होंने अिस टोपीका अुपयोग फिर शुरू किया।

३९. महात्माजीको हंसाया

गांधीजीके संस्मरण लिखते हुअे 'टाअिम्स ऑफ अिंडिया' वाले मि० रॉबर्ट स्टिम्सन कहते हैं "जब मैं अन्दर पहुंचा तो मैंने सिर झुकाकर और छातीके पास अपने हाथ जोड़कर महात्माजीको भारतीय ढंगसे प्रणाम किया। पता नहीं थैलों जैसे मोजोंमें मेरे बड़े बड़े पैर देखकर या प्रणाम करते समय मेरा हास्यास्पद स्वरूप बन जानेके कारण बुढ्अूको जोरकी हंसी आ गअी और अुनकी आंखें अुनके लोहेकी डंडीवाले चश्मेकी आड़में स्कूलके लड़केकी आंखोंकी तरह चमक अुठीं।"

संस्मरण जारी रखते हुअे मि० स्टिम्सन कहते हैं

"महात्मा गांधीमें आदमी सबसे पहले जो चीज देखता है, वह है अुनकी सजीवता, अुनकी विनोद-वृत्ति और चीजोंके हास्यास्पद पहलूको देखनेकी अुनकी क्षमता। वे ओंठ बांधकर गम्भीर मुखमुद्रा धारण किये चुप बैठे रहनेवाले 'सन्तों' से — रंगीन कांचवाली खिड़कीकी तरह जिनके भीतरका कुछ भी बाहर प्रगट नहीं होता — बिलकुल अुलटे हैं।"

४०. हरिजन-सेवा

ठक्करबापा जयन्ती स्मारक ग्रथमे लिखते हुअे श्रीमती रामेश्वरी नेहरू बयान करती है कि गाधीजी अेक बार वर्धामे हरिजन-सेवक-सघके सदस्योके समक्ष भाषण दे रहे थे और बता रहे थे कि वे अुनसे हरिजनोके प्रति कर्तव्य-पालनकी कैसी आशा रखते है। सघके ब्राह्मण सदस्योमे से अेकने, जिनका अुनकी अुत्कृष्ट हरिजन-सेवाके कारण बहुत मान था, गाधीजीसे पूछा "जो कुछ हम पहलेसे कर रहे है, अुसके अतिरिक्त और क्या करनेकी आप हमसे आशा रखते है ?" जवाबमे तुरन्त यह सवाल आया, "आप विवाहित है ?" सदस्यने अुत्तरमे 'हा' कहा तो, श्रीमती नेहरू कहती है कि, "गाधीजीका चेहरा चमक अुठा और अुन्होने बडे जोरके साथ कहा, 'तो आपको अपने पुत्रका विवाह हरिजन कन्यासे कर देना चाहिये। अब आप समझ गये कि मै आपसे और क्या करनेकी आशा रखता हू ?' "

४१. महात्माजी और दर्पण

कैब्रॉल नामक अेक फ्रासीसी व्यग-चित्रकारने गाधीजीकी सार्वजनिक प्रार्थनाके बाद नअी दिल्लीकी भगीबस्तीमे अुन्हे सयोगवश देखकर अुनका अेक व्यगचित्र खीचा।

पेरिस विश्वविद्यालयके प्राध्यापक फॉकनने, जो कुछ समयके लिअे वहा गाधीजीसे मिलने आ गये थे, वह चित्र गाधीजीको भेट किया। गाधीजीने अुत्सुक दृष्टिसे अुसे देखा और अुसकी कला पर प्रत्यक्ष प्रसन्नता प्रगट करके बोले, "चित्र है तो अच्छा, मगर अिन्होने मेरे कान अितने लम्बे क्यो बनाये है ?"

प्राध्यापकने अुत्तर दिया "अिसलिअे कि आपके कान है ही अैसे।"

गाधीजी मुस्कराकर बोले, "मै कभी दर्पण नही देखता। अिसलिअे मुझे पता नही कि मेरे कान अितने लम्बे है।"

४२. गरीबोंके वशका अुपाय

साबरमती आश्रमके निवासियोको जिन अनेक समस्याओका सामना करना पडता था अुनमे से अेक मलेरियाकी थी। आश्रममे बरसातके बाद हर साल मलेरियाका आगमन होता था। कारण और बचावके अुपायोके बारेमें डॉक्टरोकी सलाह ली जाती थी तब अकसर जो अुपाय बताये जाते थे, अुनमे अेक यह था कि मच्छरदानीका अुपयोग किया जाय।

"सब कैसे मच्छरदानी रख सकते है? क्या कोअी अैसा अुपाय नही है जो गरीबसे गरीब भी अपना सके?" गाधीजीने डॉक्टरोसे पूछा। वे बोले कि अेक अुपाय है। वह यह है कि शरीरको ठीक ढगसे ढक कर रखा जाय और मुह पर मिट्टीका तेल लगा लिया जाय। गाधीजी आम तौर पर मच्छरदानी लगाते थे। परन्तु ज्यो ही अुन्होने देखा कि अिसका अैसा अुपाय भी हे जिसे गरीब भी अपना सकते है, त्यो ही अुन्होने मच्छरदानी हटवा दी और सोनेसे पहले अपने मुह पर मिट्टीका तेल लगाना शुरू कर दिया!

४३. अिकबाल द्वारा प्रशंसा

विख्यात मुस्लिम कवि अिकबाल गाधीजीके प्रशसक थे, यद्यपि कुछ प्रश्नो पर वे अुनसे सहमत नही थे। वे कहा करते थे कि हिन्दुओकी भावी पीढिया गाधीजीको भगवानका अवतार मान कर अुनकी पूजा किया करेगी।

१९२१–२२ मे जब सविनय अवज्ञा और खिलाफत आन्दोलनोकी लहर जोरो पर थी, तब अेक अग्रेजी पत्र 'जॉन बुल' ने गाधीजीकी खिल्ली अुडानेवाला अेक व्यगचित्र प्रकाशित किया। अुसमे दिखाया गया था कि अेक सुन्दर स्त्री आखे बाध कर गाधीजीके पीछे पीछे अेक चट्टान पर जा रही है, जिसके आगे अेक तूफानी समुद्र है। अुसे 'भारत माता' का नाम दिया गया था और यह दिखाया गया था कि गाधीजी अुसे अनिवार्य मृत्युकी ओर ले जा रहे है।

जब अिकबालने यह व्यगचित्र देखा तो अुन्होंने अुसके नीचे फारसीकी चार पक्तिया लिखकर चित्रका सारा भाव बदल डाला। अुन पक्तियोका अर्थ यह था

"समुद्रके किनारे पर न खडे रहो, क्योकि यहा जीवनका सगीत कोमल और धीमा है समुद्रमे कूद पडो और लहरोमे लडो। शाश्वत जीवन सग्रामसे ही प्राप्त होता है।"

४४. कायदे-आजमको ओदकी बधाओ

सितम्बर १९४४ मे जब गाधीजी बम्बअीमे थे तब अुन्होंने अीदके दिन अपनी अीदकी मुबारकबादीके साथ साथ कायदे-आजम जिन्नाको चार चपातिया भी भेजीं। अुस वक्त काग्रेस और लीगके दृष्टिकोणमे तीव्र मतभेदोके कारण राजनीतिक समस्या अधिकाधिक पेचीदा बनती जा रही थी और अुसे हल करनेकी गरजसे दोनो नेताओमे जिन्ना साहबके मकान पर गहरी बातचीत जारी थी। जब गाधीजी कायदे-आजमकी कोठीसे अुतर कर बिडला-भवन पैदल आ रहे थे, तो अेक पत्र-प्रतिनिधिने अुन्हे सुझाव दिया कि वे लीगके अध्यक्षको शामकी प्रार्थनामे निमन्त्रित करे। गाधीजीने मुसकराते हुअे अुत्तर दिया "आप सब प्रभावशाली लोग हैं। आप ही कायदे-आजमको मेरी प्रार्थनामें शरीक होनेका अनुरोध क्यो नही करते?"

४५. बाकी प्रशंसा

मअी १९३३ मे गाधीजीने 'अपनी और अपने साथियोकी शुद्धिके लिअे' २१ दिनके अुपवासकी घोषणा की, तो अुससे कस्तूरबा और मीराबहन पर वज्रपात-सा हुआ। मीराबहनने बाकी और अपनी ओरसे यह समाचार सुनकर नीचे लिखा सन्देश गाधीजीको भेजा

"अुपवासकी खबर आज ही मिली। बा कहलवाती हैं कि अुन्हे बडा आघात लगा है और वे अिस निर्णयको बहुत अनुचित मानती हैं। परन्तु आपने किसीकी भी नही सुनी तो अुनकी क्या सुनेगे? वे

अपनी हार्दिक शुभकामनाअें भेजती है। मेरे होश-हवास ठिकाने नही है, परन्तु मैं जानती हू कि यह अीश्वरकी आवाज है और अुस अर्थमे पीडाके बीचमें भी मैं आनन्दित हू। गहरी प्रार्थनाअे। प्रेम —मीरावहन।"

गावीजीकी आखोमे हर्षाश्रु भर आये और अुन्होने जवावमें यह तार भेजा

"वासे कहो कि अुसके पिताने अुस पर अैसा सायी थोप दिया, जिसके बोझमे और कोअी स्त्री होती तो दब कर मर जाती। मैं अुसके प्रेमको अमूल्य समझता हू। अुसे अन्त तक साहस रखना चाहिये। तुम्हारे लिअे तो मेरे पास है ही क्या, सिवा अिसके कि भगवानको धन्यवाद दू कि अुसने तुम्हें मुझे दिया। मेरे लिअे यह अीश्वरका नया निर्णय है। तुम्हें अिस बात पर अन्त तक प्रसन्न रह कर अपनी बहादुरीका सबूत देना चाहिये। प्रेम।"

४६. गांधीजीका मजाक

सितम्बर १९३१ की बात है। गाधीजी गोलमेज परिषदमे भाग लेनेके लिअे अिंग्लैड जा रहे थे। रास्तेमे जब वे मार्सेल्समे अुतरे तो रायटरने तारसे समाचार दिया कि वे लोगोके सामने पहले-पहल प्रगट हुअे तब अुनके विरुद्ध फैले हुअे पूर्वग्रह दूर हो गये। अुनकी सक्रामक मुसकानने सबको मोहित कर लिया और फ्रासीसी पत्रकारोके प्रश्नोकी झडीको अुन्होने नम्रतापूर्वक सहा। रायटरने यह भी कहा, "गाधीजीने स्वीकार किया कि सत्रह वर्षकी अनुपस्थितिके बाद अिंग्लैडके निकट पहुचते हुअे अुन्हे घबराहट महसूस हो रही है।" परन्तु अुस घबराहटसे मजाक करनेकी अुनकी शक्तिमे कोअी खलल पडा दिखाअी नही दिया। जब अुनसे पूछा गया कि क्या आप लदनके बाजारोमे कच्छ लगाकर निकलेगे, तो अुन्होने अेक फ्रासीसी पत्रकारको अुत्तर दिया, "आप अपने देशमें 'प्लस फोर्स'* पहनते है। मैं 'माअिनस फोर्स' पहनना पसन्द करता हू।"

---

* 'प्लस फोर्स' से गाधीजीका आशय था बहुत लम्बे कपडे, 'माअिनस फोर्स' से अुनका आशय था बहुत छोटे कपडे।

गांधीजीकी घबराहटने अुन्हे चुगी-अफसरको यह बता देनेसे भी नही रोका, "मै अेक गरीब भिखारी हू। मेरी पार्थिव सम्पत्तिमें कुल छह चरखे,* जेलखानेकी थालिया, बकरीके दूधका अेक बरतन, छह हाथकते कपडेके कच्छ और तौलिये तथा मेरी ख्याति है, जिसकी बहुत कीमत नही हो सकती।"

अवश्य ही चुगी-निरीक्षकने अुन्हे जाने दिया।

४७. मौनका बल

प्रसिद्ध अीसाअी धर्मप्रचारक डॉ० जॉन मॉट जब दिसम्बर १९३८ में गांधीजीसे मिलने सेवाग्राम आये तब अुन्होंने गांधीजीसे पूछा, "क्या आपको अपनी आध्यात्मिक खोजमे मौन जरूरी मालूम होता है?"

अिस प्रश्नका अुत्तर देते हुअे गांधीजीने कहा, "थोडे ही दिन हुअे मैं लगभग दो मास बिलकुल चुप रहा था। अुस मौनके जादूके-से असरसे मै अभी तक मुक्त नही हुआ हू। मैंने अुसे आपके आने पर आज खोला है। आजकल मैं रोज शामको प्रार्थनाके बाद मौन ले लेता हू और मिलनेवालोके लिअे अुसे दो बजे खोलता हू। आज जब आप आये तभी अुसे खोला। अब मौन मेरे लिअे शारीरिक और आध्यात्मिक दोनो तरहसे आवश्यक बन गया है। शुरूमे अिसे कामके बोझसे बचनेके लिअे अपनाया था। तब मुझे लिखनेके लिअे समयकी जरूरत थी। जब मैंने कुछ समय अिसका पालन किया तो मुझे अिसका आध्यात्मिक महत्त्व विदित हुआ। मेरे मनमे अचानक बिजलीकी चमककी तरह यह खयाल आया कि यही समय है जब मै अीश्वरके साथ अुत्तम सम्पर्क साध सकता हू। और अब मुझे अैसा महसूस होता है मानो कुदरतने मुझे मौनके लिअे बनाया है। अलबत्ता, मै आपको बता दू कि मैं अपने मौनके लिअे बचपनसे मशहूर हू। स्कूलमें मै चुप रहता था और अपने लदनके जमानेमे मुझे मित्र लोग 'चुप्पा' जीव समझते थे।"

---

* जाहिर है कि रायटरके सवाददाताकी यह रिपोर्ट गलत थी। गांधीजी अपनी अिग्लैण्ड-यात्रामे अपने साथ अेक ही चरखा ले गये थे।

४८. 'गांधी सिगरेट'

अेक भाअीने गाधीजीके पास सिगरेटके पैकेटका अेक लेबल भेजा, जिस पर अुनका चित्र छपा हुआ था और सिगरेटोको "महात्मा गाधी सिगरेट" कहा गया था।

अपने नामके अैसे दुरुपयोग पर गाधीजीको कितना क्षोभ हुआ, अिसका अदाज अिस घटना पर अुनकी निम्नलिखित टिप्पणीसे लगाया जा सकता है

"मेरे नामके जितने भी दुरुपयोग हुअे हैं अुनमे मेरे नामको जान-बूझकर सिगरेटोके साथ जोडना जितना अपमानजनक है अुतना और कोअी नही। अेक भाअीने मेरे पास अेक लेबल भेजा है, जिस पर मेरा चित्र छापा गया है। सिगरेटोको 'महात्मा गाधी सिगरेट' कहा गया है। बात यह है कि मुझे शराबकी तरह धूम्रपान भी भयानक लगता है। धूम्रपानको मै अेक निंदनीय कुटेव मानता हू। अिससे मनुष्यका अन्त करण मर जाता है और यह अकसर शराबसे भी बुरा होता है, क्योंकि यह अदृश्य रूपमे काम करता है। यह अैसी आदत है कि अेक बार कोअी मनुष्य अिसमें फस जाता है तो फिर अिससे पिण्ड छुडाना कठिन हो जाता है। यह अेक खर्चीली बुराअी है। अिससे सासमें बदबू आने लगती है, दातोका रग बिगड जाता है और कभी कभी विषैला फोडा — कैन्सर — भी हो जाता है। यह गदी आदत है। किसी आदमीने मेरा नाम सिगरेटोके साथ जोडनेकी मुझसे अनुमति नही ली है। मै बहुत कृतज्ञ होअूगा यदि यह अज्ञात व्यापारी अिन लेबलोको बाजारमे हटा लेगे अथवा जनता अैसे लेबलोवाले पैकेट खरीदनेसे अिनकार कर देगी।"

४९. अपमानजक दृश्य

मार्च १९३० के अैतिहासिक दाडी-कूचके दिनोमे गाधीजीने भाटगाव (जिला सूरत) मे अेक आत्म-निरीक्षणकी भावनासे पूर्ण भाषण दिया। अुसमे कूचके कुछ यात्रियोकी गलतियोका अिकरार किया गया था। अुस भाषणके दौरानमे गाधीजीने अेक मजदूरका मर्मस्पर्शी हवाला दिया, जिसे रातकी कूचके लिअे किट्सनकी बत्ती ले चलनेको रखा गया था।

"हम किसीको नीचा नही समझ सकते। मैंने देखा कि आप लोगोने रातके सफरके लिये अेक भारी किट्सनकी बत्तीका बन्दोबस्त किया था और अुसे गरीब मजदूर अपने सिर पर अेक तिपाअीके अूपर रखकर चलता था। यह लज्जाजनक दृश्य था। अुस आदमीको तेज चलने पर विवश किया जा रहा था। मै अुस दृश्यको सहन नही कर सका। अिसलिअे मैंने चाल तेज की और मै सारे समुदायसे आगे निकल गया। परन्तु यह सब बेकार हुआ। अुस आदमीको मेरे पीछे पीछे दौडनेको मजबूर किया गया। मेरी लज्जाकी हद हो गअी। अगर वह बोझा ले जाना ही था, तो मै यह देखना पसन्द करता कि हमीमे से कोअी अुसे ले चलता। तब हम तिपाअी और बत्ती दोनोको ही धता बता देते। कोअी मजदूर अैसा बोझा अपने सिर पर नही ले जायगा। हम बेगारका विरोध करते है और वह ठीक ही है। परन्तु यह बेगार नही तो और क्या थी? अैसी हालतमे अगर हम जल्दीसे अपने तौर-तरीके सुधार नही लेगे, तो आपने और मैंने लोगोके सामने स्वराज्यकी जो तसवीर रखी है वैसा स्वराज्य सभव नही होगा।"

५०. मौ० मुहम्मदअलीका तोहफा

८ अक्तूबर, १९२४ को अर्थात् जिस दिन गाधीजीने दिल्लीमे २१ दिनका अुपवास तोडा, अुन्होने मौलाना मुहम्मदअलीको हिन्दू-मुस्लिम अेकताके चिह्नस्वरूप मौलाना द्वारा दी गअी अेक गायकी भेंट स्वीकार करते हुअे निम्नलिखित पत्र भेजा

"मेरे प्यारे भाअी,

"आप मेरे लिअे भाअीसे भी ज्यादा है। मैने गाय देख ली। अुसे देख सकनेके लिअे मेरा विस्तर अूचा कर दिया गया था। अिस कार्यके पीछे जिस प्रेमकी प्रेरणा है अुसका क्या कहना? मै भगवानसे प्रार्थना करता हू कि आप दोनो भाअियोके और मेरे बीचकी यह मुहब्बत हिन्दू-मुसलमानोके अटूट प्रेमका रूप ग्रहण करे, जिससे हमारे अपने अपने धर्मोका, हमारे देशका और मानव-जातिका कल्याण हो। हा, अीश्वर महान है। वह चमत्कार कर सकता है।

सदैव आपका

मो० क० गाधी"

[यह पत्र स्वय गाधीजीने लिखा था और अिस पर हस्ताक्षर अुर्दूमें किये गये थे।]

५१. आत्म-बलिदानका महत्त्व

१९३१ मे दूसरी गोलमेज परिषदसे लौटते हुअे गाधीजी अेक दिनके लिअे रोममे ठहरे। वहा अिटलीके डिक्टेटर मुसोलिनीसे अुनका परिचय कराया गया। वे पोपका महल देखने भी गये। वहा जब अुन्हे सूली पर चढे हुअे अीसाका प्रसिद्ध चित्र दिखाया गया, तो अुसे वे टकटकी लगाकर देखते रहे और बहुत प्रभावित हुअे।

अखबारी रिपोर्टके अनुसार बादमे अुस चित्रकी चर्चा करते हुअे अुन्होने यह कहा था "पोपके भवनमे सूली पर चढे हुअे अीसाकी अुस सजीव तसवीरके सामने सिर झुकानेका अवसर प्राप्त करनेके लिअे मै सब कुछ निछावर कर देता। मानव-जातिके अितिहासकी अुस दुर्घटनाके अिस

सजीव दृश्यसे अपनी आखे मै मुश्किलसे अलग कर सका। मैने वहा फौरन देख लिया कि व्यक्तियोकी भाति राष्ट्रोका निर्माण भी केवल बलिदानके द्वारा ही हो सकता हे और किसी तरह नही। सुख दूसरोको दुःख देकर नही, परन्तु अपने आप कष्ट सहन करके प्राप्त होता हे।"

५२. वैज्ञानिकको प्रत्युत्तर

अेक दिन तीसरे पहर विख्यात बगाली वैज्ञानिक डॉ० प्रफुल्लचद्र राय साबरमती आश्रममें आये। गाधीजीको देखते ही वे बोले "तो आपने दूध लेना छोड दिया?" विटामिनोकी आवश्यकताके विषयमे और भी कुछ कहा।

गाधीजीने अुनकी बातमे सुधार करते हुअे कहा, "छोडा नही है, फिलहाल बन्द कर दिया हे। परन्तु आपको दन्तमजनोके बारेमे क्या अपने ही ये शब्द याद नही है कि 'हम अपने बगाल केमिकल वर्क्समे ये दन्तमजन केवल मूर्खोके लिअे तैयार करते है? अपने लिअे तो मुझे पिसी हुअी खडिया मिट्टी काफी मालूम होती है।' यही बात वैज्ञानिक सिद्धान्तोकी हे, अुन पर पूरा विश्वास मूर्ख ही रखते है, बुद्धिमान अुन्हे सोच-समझ कर मानते है। आज ही मै अेक लेख पढ रहा था, जिसमे विटामिनोके सिद्धान्तको चुनौती दी गअी हे।"

बगाली विद्वानको यह मजाक अितना पसन्द आया कि अुन्होने अुसका खण्डन नही किया और दूसरे विषयो पर बात करने लगे।

५३. अुनका 'स्त्री-स्वभाव'

गाधीजीके घनिष्ठ सम्पर्कमे आनेवाले बहुतसे लोगोने देखा होगा कि जिन स्त्रियोसे अुनका सम्बन्ध आया अुनमे से अधिकाशकी अपेक्षा गाधीजीमे स्त्रियोचित गुण अधिक थे। अुनके चरित्रके अिस अनोखे गुणकी प्रशसा श्री और श्रीमती अेच० अेस० अेल० पोलाक दोनोने की हे।

मिस्टर पोलाकने कहा है, "गाधीने निर्विवाद रूपसे अिस सिद्धान्तको प्रमाणित कर दिया है कि अुत्तम पुरुषो और अुत्तम स्त्रियोमे दोनोके

अुत्तम गुणोका सामजस्य होता है। कोअी स्त्री अुनसे वढ कर धीरज या सहिष्णुता नही दिखा सकती और न अुनसे अधिक सहनशील और क्षमाशील ही हो सकती है।"

श्रीमती पोलाकने कहा है, "महात्मा गाधीको अुनके स्त्री-स्वभावके कारण अनेक स्त्रियोका प्रेम प्राप्त हुआ है। अपनी कल्पनामे मै महात्माजीका —जैसा कि मैने दक्षिण अफ्रीकामे कअी वार देखा था—यह रूप देखा करती हू कि वे अेक कमरेमे अिधर-अुधर टहल रहे है, अुनकी गोदमे छोटा वच्चा है, लगभग स्त्रीकी तरह अनजाने ही वे अुसे प्यार कर रहे है और साथ ही अत्यत स्पष्टताके साथ महत्त्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्नोकी चर्चा भी कर रहे है।"

५४. गोखलेजीका प्रमाणपत्र

जव गोपाल कृष्ण गोखले दक्षिण अफ्रीका गये थे तव साथमे अेक दुपट्टा भी ले गये थे, जो अुन्हे न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडेसे भेटमे मिला था। गोखले अिस स्मृतिचिह्नको वडे जतनसे रखते थे और विशेष अवसरो पर ही काममे लेते थे। अैसा अेक अवसर अुस भोजके समय आ गया, जो जोहानिसवर्गके भारतीयोने अुनके सम्मानमे दिया था। दुपट्टेमे सल पड गये थे और अुस पर अिस्तरी होनेकी जरूरत थी। धोवीके यहा भेजकर समय पर वापस मगवानेका समय नही था। गाधीजीने अपनी कला आजमानेका प्रस्ताव किया।

गोखलेजी वोले, "मै आपकी वकालतकी योग्यता पर विश्वास कर सकता हू, मगर आपकी धोवीकला पर नही कर सकता। आप अिसे विगाड दें तो क्या हो? आप जानते है मेरे लिअे अिसका क्या महत्त्व है?" यह कह कर अुन्होने गाधीजीको वडी खुशीके साथ अुस भेटका किस्सा सुनाया।

गाधीजीने फिर भी आग्रह किया, अच्छे कामका भरोसा दिलाया, गोखलेसे अुस पर अिस्तरी करनेकी अनुमति ले ली और काम अितनी खूवीसे किया कि अुनका प्रमाणपत्र प्राप्त किया। गाधीजीने कहा, "अिसके वाद मैने परवाह नही की कि वाकी दुनिया मुझे प्रमाणपत्र देती है या नही।"

५५. 'कोअी चीज छोटी नहीं'

१९१५ में कांग्रेसका अधिवेशन बम्बअीमे था। अुस समय आचार्य काका कालेलकर भी गांधीजीके साथ थे। अुस समयका निम्नलिखित किस्सा अुन्होंने बयान किया है, जिससे जाहिर होता है कि छोटी छोटी बातोंमे भी गांधीजीको महत्ता दिखायी देती थी

अेक दिन मैंने देखा कि वे कोअी चीज बड़े जोरोंसे ढूंढ रहे हैं।

मैंने अुनसे पूछा, "बापूजी, आप क्या ढूंढ रहे हैं?

अुन्होंने अुत्तर दिया, "मेरी पेंसिल, छोटी-सी है।"

मैंने अपनी चमडेकी पेटीमे से अेक पेंसिल अुन्हें देनेको निकाली।

बापू बोले, "नही, नही। मुझे वही पेंसिल चाहिये जिसे मैं ढूंढ रहा हूं।"

मैंने अुत्तर दिया, "बापूजी, अभी तो अिसे काममें ले लीजिये। आपकी पेंसिल मैं बादमें ढूंढ दूंगा।"

वे बोले, "काका, आप नही समझते। मैं वह छोटी पेंसिल खो नही सकता। वह मुझे मद्रासमे जी० अे० नटेसनके छोटे लडकेने दी थी। कितने स्नेहसे दौडकर वह मुझे दे गया था, मैं अुसे कैसे गवा दूं?"

हम दोनोंने अुस शरारती पेंसिलकी तलाश की और बापूको तभी चैन पडा जब वह मिल गअी।

पेंसिल मुश्किलसे अेक अिंच लम्बी होगी।

५६. 'आप महात्मा हैं?'

अेक पत्रलेखकने अेक बार गांधीजीको प्रश्नोंकी अेक जबरदस्त सूची भेजी। पहला सवाल था

"क्या आप सचमुच महात्मा है?"

गांधीजीका जवाब यह था "मुझे तो अैसा नही लगता। परन्तु अितना जानता हूं कि मैं अीश्वरकी सृष्टिके सबसे तुच्छ प्राणियोंमे से हूं।"

प्र० — यदि अैसा हो तो क्या आप महात्मा शब्दकी व्याख्या करेंगे?

अु० — जब मेरा किसी महात्मासे परिचय ही नही तो मैं व्याख्या भी नही बता सकता।

प्र०—यदि आप महात्मा नही हैं तो क्या आपने अपने अनुयायियोसे कभी कहा है कि आप महात्मा नही हैं?

अु०—मैं जितना अिनकार करता हू अुतना ही ज्यादा अिस शब्दका मेरे लिअे अुपयोग किया जाता है।

प्र०—क्या यह सच है कि पहले आप रेलगाडीके तीसरे दर्जेमे सफर करते थे और अब आप स्पेशल ट्रेन ओर पहले दर्जेके डिब्बोमे यात्रा करते हैं?

अु०—अफसोस! पत्रलेखककी जानकारी सही है। महात्मापन स्पेशल गाडियोके लिअे और पार्थिव शरीर दूसरे दर्जेके पतनके लिअे जिम्मेदार है।

प्र०—काअुण्ट टॉल्स्टॉयके साथ आपका क्या सम्बन्ध है?

अु०—अेक अैसे भक्तका जो जीवनमे अुनका बहुत अृणी है।

प्र०—जब स्वराज्य हो जायगा तब आपकी स्थिति क्या होगी?

अु०—मैं अवश्य ही लम्बी और शायद हककी छुट्टी चाहूगा।

५७. भारतकी छोटी वीरांगनाअें

हरिजन-अुद्धार सम्बन्धी अपनी 'भिक्षा-यात्राओ' में गाधीजी अपनेको माला पहनाने या भेट देनेके लिअे आनेवाली छोटी-छोटी लडकियोसे भी वह जेवर माग लेते थे जो वे पहने हुअे होती थी। वे चाहते थे कि लडकिया न सिर्फ खर्चीली और व्यर्थकी सौन्दर्य-सामग्रीके बिना काम चलाना सीखें, बल्कि आत्म-बलिदानकी अग्नि-परीक्षामे से गुजरना भी सीखे, जिससे भावी जीवनमे वे अैसी सच्ची वीरागनाअे बनकर निकले कि देश अुन पर गर्व करे।

अुदाहरणके लिअे, भोपालमे जब अेक लडकी अुन्हे फूल भेट करने आअी तो अुन्होने अुससे पूछा, "तू अपनी अगूठी हरिजन-कोषमे भेट क्यो नही कर देती?" यह कहकर कि मैं आपको अगूठी दूगी, लडकीने अुसे अपनी अुगलीसे निकालनेकी कोशिश की। तब गाधीजीने अुसे कहा कि तू अगूठी दे देगी तो तेरे माता-पिता पूछेंगे कि क्यो दे दी। परन्तु लडकी अगूठी भेट करनेके अपने निश्चय पर डटी रही। अुन्होने फिर जोर दिया कि तू अगूठी अपने ही पास रख ले। परन्तु अिससे अुसे अितनी बडी निराशा हुअी

कि गाधीजीको भेट स्वीकार कर लेना जरूरी मालूम हुआ। किन्तु अगूठी अुगलीमे आसानीसे नही निकाली जा सकी। पानी लाना पडा और अुगली पर लगाना पड़ा, तब अगूठी निकाली जा सकी। जब अगूठी निकाल ली गअी और लडकी अुसे गाधीजीको भेट कर सकी तब अुसे अत्यत हर्ष हुआ।

अिसी तरह विजगापट्टममे अेक छोटीसी लडकी अुनके गलेमे खादीकी माला डालनेको आअी। अुन्हे मौका मिल गया। अुन्होने अुसका हाथ पकड कर जो चूडिया वह पहने हुअे थी वे माग ली। जब अुसने अनुमतिके लिअे अपने पिताकी ओर देखा तो पिताने खुशीसे मजूरी दे दी और वह भी त्याग करके बडी प्रसन्न हुअी। अुसका अनुकरण आठ वर्षकी अेक और लडकीने किया। वह गाधीजीके पास चली आअी और अपना हाथ बढाकर अुनसे कहा कि मेरी चूडी भी निकाल लीजिये।

५८. गांधीजीके लिअे मंदिर नहीं चाहिये

"मेरी अिच्छा थी कि अेक कृष्ण-मदिर गाधीजीके नाम पर समर्पित करू। परन्तु जब मैने यह विषय (मअी १९४१ मे) अुनके सामने रखा तो वे खिलखिलाकर हस पडे और फिर गभीर स्वरमे बोले

'हा, सुझाव अच्छा है। आप पूरे सद्हेतुसे अैसा करना चाहते है। आप देखते है कि मै जीवन भर सब प्रकारके अध-विश्वासोसे लडता रहा हू, जिन्होने हमारे समाज और धर्मको भ्रष्ट कर दिया है और अुन्हे आजकी गिरी हुअी हालतमे ला पटका है। आपके आश्रममे मन्दिर बनाने और अुसे मेरे नाम पर समर्पित कर देनेसे समय पाकर अुसके चारो ओर नअी तरहके अध-विश्वास पैदा हो जायगे जिनसे आप लड नही सकेगे। अिससे भिन्न भिन्न जातियो और धर्मोमे अेकता अुत्पन्न करनेके बजाय आप न चाहते हुअे भी अेक नअी गाधी-जाति पैदा कर देगे। मै नही चाहता कि कोअी अैसी बात की जाय। मगर मै जिन चीजोके लिअे जिया हू अुन पर आपका विश्वास हो तो मै आपको यह सुझाव दे सकता हू। आप अपने आश्रममे प्रार्थनाके लिअे अेक स्थान अलग रख दे और अुसके चारो ओर अच्छे फूलोके वृक्ष लगा दे। जाति, धर्म या मतका विचार न करके सबको आपके यहा आकर प्रार्थना करनेको निमत्रित करे। प्रार्थना-

भूमि पर जब आप लोग प्रार्थनाके लिअे अिकट्ठे होंगे, तब वृक्षोंसे फूलोंकी जो वर्षा होगी और अुनसे जो ताजगी पैदा करनेवाली सुखद सुगन्ध आयेगी, अुससे भक्तिके लिअे अनुकूल वातावरण अुत्पन्न होगा।'

यह सुझाव अितना अधिक ठीक था कि मैंने मन्दिर बनानेका विचार छोड दिया। मैंने कृपा-आश्रममे प्रार्थना-भूमिके चौतरफ फूलोंके पेड लगा दिये।"

— भिक्कु निर्मलानन्द, तिरुवेन्नैनलुर

५९. अणुबमके मुकाबलेमें प्रार्थना

गाधीजीकी मृत्युसे पहले अुनसे मुलाकात करनेवाले आखिरी विदेशी पत्र-प्रतिनिधियोमे से अेक अमरीकाकी कुमारी मार्गरेट बुर्क व्हाअिट थी। अुन्होंने अुनसे जो प्रश्न किये अुनमे से अेक यह था

"अमरीकियोके मन भावी अनिष्टकी शकाओंसे, खास तौर पर अणुबम-सम्बन्धी शकाओसे भरे है। आप अणुबमोके विरुद्ध अहिंसाका अुपयोग कैसे कर सकते है?"

गाधीजीने अुत्तर दिया "अिस प्रश्नका अुत्तर मै कैसे दू? अणु-बमोका मुकाबला प्रार्थनामय कर्मसे किया जा सकता है।"

प्रश्न "जब सिर पर हवाअी जहाज मडरा रहे होंगे तब आप प्रार्थना करेंगे?"

अुत्तर "मै खुलेमे निकल आअूगा और चालकको देखने दूगा कि मेरे चेहरे पर अुसके प्रति दुर्भावका कोअी चिह्न तक नही है। अवश्य ही चालक अितनी अूचाअीसे मेरा चेहरा नही देख सकेगा, परन्तु मेरे हृदयकी यह आकाक्षा कि अुसे हानि नही पहुचनी चाहिये अुस तक पहुच जायगी और अुसकी आखे खुल जायगी। जिन लोगोको हिरोशिमामे अणुबमसे मौतके घाट अुतारा गया, वे यदि प्रार्थनाके साथ — अपने हृदयमे प्रार्थनाकी पुकार लेकर, मुहसे 'अुफ' निकाले बिना, शातिपूर्वक खुलेमे मरते, तो युद्ध जिस अशोभनीय ढगमे समाप्त हुआ अुस तरह न होता। अब यह प्रश्न है कि विजेता वास्तवमें विजेता है या शिकार। ससारमे शाति नही है। वह और भी भयानक हो गया है।"

६०. 'आभूषण-मात्रसे सुन्दर'

अस्पृश्यता-निवारण आन्दोलनके सिलसिलेमे दक्षिण भारतके दौरेमे मलावारके वडगरा स्थान पर अेक अैसी घटना हुअी, जिससे गाधीजीकी आखे भर आअी। वहाकी सार्वजनिक सभामें अुनकी अपीलके जवावमें कौमुदी नामकी अेक लडकी आगे आअी और अुसने अपनी चूडिया दे डाली। यद्यपि गाधीजीको अिससे सन्तोष हो गया, फिर भी लडकीको नही हुआ। तव अुसने अपने गलेसे अपनी सोनेकी जजीर निकालकर अुन्हे दे दी। गाधीजीने सोचा कि भेट देनेका काम यहा समाप्त हो जायगा। परन्तु लडकी रुकनेवाली नही थी। अुसके हाथ लगभग अनजाने अुसके कानो तक पहुचे और सुन्दर रत्न-जडित बुन्दोकी जोडी अुनके पास पहुचा दी गअी।

गाधीजीने वादमे कहा कि अिस घटनासे मेरा हृदय द्रवित हो गया और मुझे नवीन प्रेरणा मिली। मैने अपने भावोको छुपानेकी कोशिश की, परन्तु कह नही सकता कि मै अिसमे कहा तक सफल हुआ। गाधीजीने लडकीसे पूछा कि 'तुमने यह भेट देनेके लिअे अपने माता-पिताकी अनुमति ले ली है?' अुसके पिताको तो प्रसन्नता ही हुअी। लडकीने आभूषणोके वदलेमें केवल गाधीजीके हस्ताक्षर मागे, परन्तु गाधीजी तो अिससे कही अधिक देनेको तैयार थे। अुन्होने हिन्दीमे अेक कागजके टुकडे पर अिस आशयका अेक वाक्य लिख दिया कि "तुम्हारे दिये हुअे सारे गहनोसे भी खूबसूरत तुम्हारी त्याग करनेकी तैयारी है।" अिस वाक्यके नीचे अुन्होने अपने दस्तखत किये। लडकी वहुत खुश हुअी और अुसने नये जेवर न वनवानेका वचन दिया।

अेक छोटी लडकीका त्याग

जव गाधीजी अपने दौरेकी समाप्तिके दिनोमे दक्षिण कनाराके अुडोपी स्थान पर पहुचे, तो अन्य सार्वजनिक मानपत्रोके साथ-साथ स्थानीय हिन्दी प्रचार सभाकी तरफसे अुन्हे हिन्दीमे अेक मानपत्र भेट किया गया था। यह हिन्दी मानपत्र अेक नौ वर्षकी निरुपमा नामक लडकी द्वारा पढा

गया था। वह अैसे दम्पतिकी पुत्री थी जो कांग्रेसके निष्ठावान कार्यकर्ता थे। अुसे माता-पिताने बचपनसे ही हिन्दीमे बोलना और पढना सिखाया था। जब वह मानपत्र पढना खतम कर चुकी थी और अुसे गाधीजीको भेंट कर रही थी, तब अुन्होने अुससे पूछा कि "तुम जो जेवर पहने हुअे हो वे भी मानपत्रके साथ मुझे दे दो तो?" अिस पर अुसने अपने गलेसे सोनेकी जजीर अुतार कर अुनके हवाले कर दी। तब गाधीजीने अुसके हाथोकी चूडियोकी ओर सकेत करके कहा, "और अिस चीजका क्या करोगी?" अुसने अुन्हे अुतार लेनेके लिअे अपने हाथ फैला दिये, परन्तु जब गाधीजी चूडिया निकालने लगे तो अुन्हे अुसके गालो पर आसू दिखाअी दिये। अुन्होने अुसकी चूडिया लौटा दी और अुसके गालो पर हलकी-सी चपत लगा कर कहा, "तू तो रो रही है। मै रोकर दिया गया दान स्वीकार नही कर सकता।"

लडकीके मा-बाप अिस अवसर पर मौजूद नही थे। वे नगरमे गाधीजीके ठहरनेका अितजाम करनेमे लगे हुअे थे। जब बादमे वह गाधीजी और दूसरे लोगोके साथ अुनके निवास-स्थान पर पहुची, तो अुसकी माने अिस घटनाका हाल सुनकर अपनी बेटीसे कहा कि जेवर दे दो। तब निरुपमाने खुशी खुशी अपने हाथोकी चूडिया निकाल कर गाधीजीको भेट कर दी। फिर वह अपने कानोके बुन्दे निकालने लगी, परन्तु गाधीजीने यह कह कर रोक दिया, "अिन्हे तू रख ले। ये तेरे लिअे है। अितना काफी है।" अुन्होने अुसके त्याग पर बडी प्रसन्नता प्रगट की और अुससे पूछा, "क्या तू मुझे वचन देगी कि भविष्यमे अपने शरीर पर कोअी आभूषण धारण नही करेगी?" अुसने तुरन्त वचन दे दिया।

अिस घटनाको हुअे पूरे बीस साल हो गये। निरुपमा अब (अेम० बी० बी० अेस०) डॉक्टर बनकर काम कर रही है। अुसने बापूको दिया हुआ अपना वचन पालन किया है। अुसके शरीर पर आपको अेक छल्ला भी नही मिलेगा। बापूने कुछ समय तक अुसके साथ पत्रव्यवहार जारी रखा। अुनके पत्रोमे से दो हिन्दी पत्र अिस प्रकार है

चि निरुपमा,

तुमारा खत मिला है तुमारे रुदन को रोकने का इलाज है तुम अब बालिका है. तुमारे तीन चार वर्ष तक बाहर मे बोलना ही नहीं. अभ्यास करना तब बडी होगी तब अपने आप बोलेगी और तुमारे संयम से तुमारी शांति बढेगी.

वर्धा
२२ डिसे

बापुके आशीर्वाद

[मूल हिन्दी पत्रोंकी प्रतिलिपि]

चि० निरुपमा,

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारी भाषा अच्छी है। जेवर अनावश्यक है। जेवरसे लडकिया बाह्य सौदर्य पर मुग्ध होती है। गरीब मुल्कमे जेवरका शौक कम होना चाहिये। यह सब कारण जेवरके विरोधमें है।

२३–५–'३४ बापूके आशीर्वाद

चि० निरुपमा,

तुम्हारा खत मिला है। तुम्हारे रुदनको रोकनेका अिलाज है। तुम अभी बालक हो। तुम्हारे तीन चार वर्ष तक जाहिरमें बोलना ही नही। अभ्यास करना। जब बडी होगी तब अपने आप बोलोगी और तुम्हारे सयमसे तुम्हारी शक्ति बढेगी।

वर्धा, ११–६–'३५ बापूके आशीर्वाद

६१. बापूकी मानवता

२ अक्तूबर, १९४७ को जब राचीमें गाधी जयती अुत्सव हुआ तब श्री जयरामदास दौलतरामने, जो अुस समय बिहारके गवर्नर थे, दो दिलचस्प घटनाअे सुनाअी जो यरवडा जेलमें हुअी थी। वे वहा १९३० में गाधीजी तथा अन्य लोगोंके साथ अेक कैदी थे। श्री जयरामदासने कहा कि अेक दिन जब गाधीजी सुबहकी सैरको नगे पैरो निकले, तो अुनके पैरो पर अेक चीटा चिपट गया और अुनका खून चूसने लगा। परन्तु अिस खयालसे कि कही अुसे चोट न लग जाय या वह मर न जाय गाधीजीने अुसे हटाया नही। अुन्होंने चीटेको जितना अुसने चाहा अुतना खून चूस लेने दिया, यद्यपि अुसके कारण अुन्हे दो रोज बुखारमे पडा रहना पडा।

दूसरी घटना यो है। जब गाधीजीने अपने पीजनको साफ करनेके लिअे जेलके अेक सिपाहीसे दो तीन नीमकी पत्तिया मगवाअी, तो वह पेडकी अेक पूरी डाली तोड लाया। गाधीजीको लगा कि अुन्हे अपनी

नितान्त आवश्यकतासे अधिक प्रकृतिकी अुपजसे लेनेका हक नही है, अिसलिअे अुन्होने जेलके सिपाहीको अुलाहना दिया कि तुमने अकारण जीवहत्या की।

श्री जयरामदासने कहा कि ये घटनाअे बेशक छोटी है, परन्तु किसी व्यक्तिकी सच्ची महानता जितनी अैसे छोटे छोटे कामोमे होती है अुतनी बडी बडी सिद्धियोमे नही होती। "छोटी बातोका ही मनुष्यके जीवनमे सबसे अधिक महत्त्व होता है और अुन्हीसे पता लगता है कि वह किस धातुका बना है। अिस प्रकार, यदि कोअी गाधीजीको, अुनके जीवन और अुपदेशोको, जानना और समझना चाहता है, तो अुसे अध्ययन करके अिस बातका पता लगानेकी कोशिश करनी चाहिये कि सच्ची मानवता क्या है और वह गाधीजीके दैनिक जीवन और अुपदेशोमे कैसे प्रगट होती है।"

६२. 'गांधीको फांसी लगा देनी चाहिये'

'मैन्चेस्टर गार्डियन' (ता० १४–७–'४७)के अेक लेखकके कथनानुसार १९२२ में ही अेच० जे० मैसिघमने लेडी ग्रेगरी और मि० बर्नार्ड शाके साथ हुअी बातचीतके सिलसिलेमे साम्राज्यके छिन्नभिन्न होनेकी भविष्यवाणी कर दी थी।

लेडी ग्रेगरीने अपनी डायरीमे लिखा है कि मैसिघमने यह राय जाहिर की कि यदि ब्रिटेन भारतको अपने अधीन रखना चाहता हो तो अुसे गाधीको फासी लगा देनी चाहिये। लेडी ग्रेगरीने अुत्तर दिया कि दूसरा नेता पैदा हो जायगा। अिससे मैसिघमने अिनकार किया। अुन्होने कहा, "नही, सन्तकी जगह अितनी आसानीसे नही भरी जा सकती।" तब 'जी० बी० अेस०' ने बीचमे टोकते हुअे कहा कि अुन्हे चाहिये कि अेफिल टावर जैसा कुछ बनाये और गाधीको अुसकी चोटी पर रख दे, जहासे फिर वह जनतामे भाषण नही दे सकेगे।

लेडी ग्रेगरीने कहा कि यह तो वैसा ही खतरनाक होगा जैसा मेहदीको अुसकी कब्रसे खोदकर घसीटना था। अपनी डायरीमे वे आगे लिखती है "मैसिघमको अपने अधिकारियोसे मालूम हुआ है कि भारतको

अब अिंग्लैण्डका कोअी अुपयोग नही रह गया है, अिंग्लैण्डसे अुसे जो कुछ सीखना था वह सब सीख चुका हे और अब मुक्त होना चाहता है। वे और जी० बी० अेस० सहमत हैं कि भारत हाथसे निकल जायगा, ब्रिटिश साम्राज्य भग हो रहा है और आयरलैण्डने जो तरीके अितनी सफलतापूर्वक अीजाद किये है, वे दूसरे विद्रोही देशोंको भी अुसने सिखा दिये है।"

६३. 'मेरी बुरीसे बुरी घड़ी'

शैतान अर्थात् मानव-हृदयमे छुपा हुआ पाप सदा जागरूक रहता है और स्त्री-पुरुषोकी विरोध-शक्तिकी परीक्षा लेनेके लिअे अुन्हे ललचानेके अवसर ढूढता रहता है। गाधीजीके जीवनकालमे अुन्हे भी प्रलोभनकी अैसी अनेक बुरी घडियोंमे से होकर गुजरना पडा था। जिसे वे अपने जीवनकी बुरीसे बुरी घडी समझते थे, अुसका वर्णन अुन्होने महान अीसाअी धर्मप्रचारक डॉ० जॉन मॉटके समक्ष किया था, जो दिसम्बर १९३६ मे अुनसे मिलने सेवाग्राम आये थे। गाधीजीने कहा

"मेरी बुरीसे बुरी घडी वह थी जब मै कुछ मास पूर्व बम्बअीमे था। वह मेरे प्रलोभनकी घडी थी। जब मैं सो रहा था तो मुझे अचानक अैसा महसूस हुआ मानो मै किसी स्त्रीको देखना चाहता हू। भला, जिस आदमीने काम-वासनासे लगभग चालीस वर्ष तक अूपर अुठनेका प्रयत्न किया हो, अुसे यह भयानक अनुभव होने पर गहरी वेदना तो होनी ही थी। मैंने अिस भावना पर अन्तमे विजय प्राप्त कर ली, परन्तु मुझे अपने जीवनके सबसे काले क्षणका प्रत्यक्ष दर्शन हो गया। और यदि मैं अुसके अधीन हो जाता तो मेरा सर्वनाश हो जाता। मेरा अन्तरतम हिल गया, क्योकि शक्ति और शान्ति ब्रह्मचर्यके जीवनसे प्राप्त होती है। मै जो शान्ति भोगता हू अुससे बहुतसे अीसाअी मित्रोको अीर्ष्या होती हे। यह शान्ति अीश्वरकी देन है, जिसने मुझे प्रलोभनोसे लडनेका बल दिया है।

हरिजन, २६-१२-'३६

६४. स्वागत करनेवाले क्या न करे ?

१९२९ के अपने आन्ध्रके दौरेमें गाधीजी जहा कही जाते थे वहा होनेवाले सार्वजनिक समारोह अितने अधिक श्रमसाध्य होते थे कि वे अुन्हे बरदाश्त नही कर सकते थे। वे चाहते थ कि जिनके सुपुर्द कार्यक्रमोकी व्यवस्था हो वे विवेकसे काम ले और तमाम महत्त्वहीन समारोह कम कर दे। अुनके लाभके लिअे गाधीजीने कुछ निषेधोकी अेक सूची जारी की, जो अिस प्रकार थी

अिस शरीरको छह घटेसे ज्यादाका काम न दो।

सभाओमे या अन्यत्र भी शोर न मचाओ।

जुलूस न रखे जाय।

केवल प्रदर्शनकी दृष्टिसे कुछ न किया जाय।

अेक दिनमे बहुत ज्यादा कार्यक्रम न रखे जाय।

जहा दौरेके अुद्देश्यके रूपमे रुपया अथवा कार्य न हो, अैसी जगहो पर अिस शरीरको न ले जाओ।

किसीकी सनक या अहकारको सतुष्ट करनेके लिअे अिस शरीरको कही न ले जाओ।

अिसे बहुत अधिक जगहो पर न ले जाओ।

यह समझनेकी भूल न करो कि यह निरा अेक मिट्टीका ढेला है, मिट्टीका ढेला तो अवश्य है, मगर अुसके भीतर अेक छोटासा बहुत ही चेतन जीव बैठा है, जो अिस पार्थिव चोलेके साथ की जानेवाली प्रत्येक चेष्टाको देखता रहता है।

६५. अुनके छोटे छोटे मित्र

वहुतसे काम होने पर भी गाधीजी वच्चोके साथ हिलने-मिलनेके लिअे हमेशा थोडासा वक्त निकाल ही लेते थे। जब सावरमती आश्रममें कुछ समय ठहरनेके वाद अुन्हे राजनीतिक कामसे कलकत्ते वुलाया गया, तो अुन्होने आश्रमवासियोसे विदा ली। और अुनकी चलते समयकी सलाहमे अुनका यह अफसोस प्रतिध्वनित हुआ कि वे चाहते थे अुतनी आजादीके साथ आश्रमके वच्चोके साथ न रह सके। अुन्होने कहा

"अन्तमे जहा तुम लोगोके वीच रहनेके अिस कालको मै सदा खुशी और सतोपके साथ याद करूगा, वहा मुझे अेक दु ख भी है। वह दु ख यह है कि मै अितने दिन तुम्हारे वीच रहा, परन्तु मै आश्रमके वच्चोके साथ खेल नही सका, अुनको अलग अलग नामोसे पहचान नही सका और जैसा मै चाहता था, अुनकी व्यक्तिगत मित्रता और विश्वास सम्पादन नही कर सका। परन्तु मै क्या कर सकता था? मुझ पर कामका दवाव अितना भारी था!"

६६. चारो खाने चित्त!

अहमदावादमे गुजरात विद्यापीठकी तरफसे विद्यापीठके विद्यार्थी दलित जातियोके वालकोके लाभार्थ अेक रात्रि-पाठशाला चलाते थे। अुस पाठशाला पर वे वडा परिश्रम करते थे और अुसमे ढेढोके वच्चोकी काफी अुपस्थिति रहती थी। शिक्षकोको मेहतरोके वच्चोका खयाल आया और अुन्होने अुनके मा-वापोको अपने वच्चोको पाठशाला भेजनेके लिअे राजी कर लिया। परन्तु ज्यो ही वे आये, अधिकाश ढेढोने अपने वच्चे पाठशालासे हटा लिअे। शिक्षकोने कोअी रास्ता निकालनेके लिअे गाधीजीकी शरण ली।

गाधीजीने कहा "अिसलिअे मै वहा गया। वहुत कम ढेढोके वच्चे सभामे आये। अुनमे से अेकने, जिसे मैने टटोला, परम्परागत धर्मका आधार लेकर साफ साफ कहा 'ढेढ मेहतरको कैसे छू सकता है?' मैने

पूछा, 'अगर मेहतरको छूनेसे ढेढ भ्रष्ट हो जाता है, तो अुच्च वर्णके लोग ढेढोको क्यो छुअें ?' अुसने झटसे यह प्रत्युत्तर देकर कि 'हमने अुन्हे अैसा करनेको कभी नही कहा' मुझे चारो खाने चित्त कर दिया।'

६७. दर्पणका क्या काम ?

यूनाअिटेड प्रेस ऑफ अिंडियाके शिमला-स्थित सम्वाददाताने अेक वार गाधीजीसे प्रश्न करके नीचे लिखे अुत्तर प्राप्त किये

प्र० आप दर्पणमे अपना मुह कभी भी क्यो नही देखते ?

अु० चूकि जो मुझसे मिलने आते है वे सब मेरा मुह देख लेते है, अिसलिअे मुझे दर्पण काममे लेनेकी क्या जरूरत है ?

प्र० आप जमीन पर क्यो सोते है ? मोटा गद्दा क्यो नही अिस्तेमाल करते ?

अु० मै यह सब भारतके करोडो गरीबोमे मिल जानेके लिअे करता हू।

प्र० आप रेलमे सदा तीसरे दर्जेमे क्यो सफर करते हैं ?

अु० अिसका अुत्तर अूपरवाले जवाबमे आ गया।

प्र० आप अपने भोजनमे नमक और मसाले क्यो नही लेते ?

अु० मुझे कोअी भी असी बात जो मेरी शारीरिक आवश्यकताके लिअे अत्यत जरूरी नही है क्यो करनी चाहिये ?

६८. गरीब स्त्रीका दान

गाधीजीको अपनी काम और रुपये-पैसेकी अपीलोके जवाबमे स्त्रियोकी ओरसे जो सहयोग मिलता था, अुससे अुनका दिल सदा आशा और हर्षसे भर जाता था। अुनके लिअे कार्यके पीछे रहनेवाली सचाअीका महत्त्व था। तूनीमे स्त्रियोकी अेक सभामे लगभग ७५ वर्षकी अेक गरीब दिखाअी देनेवाली वुढियाने, जिसकी कमर अुम्रके बोझसे झुक गअी थी, परन्तु जिसके मुखमडल और नेत्रोमे सचाअीकी ज्योति जगमगा रही थी, अुनके हाथोमे चार आने रख दिये। अुन आखोमे,

जो कभी भुलाओ नही जा सकती, खेदका कोओी चिह्न नही था। अुसके तुरत बाद अेक अधेड वयकी खादीधारी महिलाने अुनके हाथोमे पाच रुपये और अेक पैसा थमा दिया। गाधीजीने अुससे सीधे ही पूछ लिया "किसका दान बडा है, तुम्हारा या अिस बूढी बहनका?"

अुसने साहसके साथ निश्चयपूर्ण अुत्तर दिया, "दोनो बराबर है।"

"मै अिस अत्यत बुद्धिपूर्ण और गहरे जवाबके लिअे तैयार नही था। मुझे अपार हर्ष हुआ और मात खानेमे खुशी हुअी," गाधीजीने अिस घटनाका अुल्लेख करते हुअे कहा।

६९. राष्ट्रीय पोशाकका बचाव

'पायोनियर' ने, जिसके मालिक और सम्पादक अुन दिनो यूरोपियन थे, गाधीजीकी राष्ट्रीय पोशाककी खिल्ली अुडाओी थी। गाधीजीने अुसके ४ जुलाओी, १९१७ के अकमे यह अुत्तर दिया था

"मै राष्ट्रीय पोशाक अिसलिअे पहनता हू कि वह अेक भारतीयके लिअे अत्यत स्वाभाविक और शोभास्पद है। मेरा विश्वास है कि हमारा यूरोपियन वेषकी नकल करना हमारे पतन, अपमान और दुर्बलताका चिह्न है, और हम अेक अैसी पोशाकको छोडकर राष्ट्रीय पाप कर रहे है, जो भारतीय जलवायुके सबसे अधिक अनुकूल है, जो अपनी सादगी, कला और सस्तेपनके कारण ससारमे अद्वितीय है और जो स्वास्थ्य-सबधी सब आवश्यकताअे पूरी करती है। अगर यहा रहनेवाले अग्रेजोको मिथ्याभिमान और अुतनी ही मिथ्या शानका खयाल न होता, तो वे भी बहुत पहले ही भारतीय वेषको अपना लेते। ... जूते मै पवित्र कारणोसे नही पहनता, परन्तु अिसमे भी मै देखता हू कि जब कभी सभव हो जूते न पहनना अधिक स्वाभाविक और स्वास्थ्यप्रद है।"

७०. ‘गांधी-कवच’

अेक भाओीको, जिन्हे शकाअे सताया करती थी, गाधीजीने अेक पत्र लिखा था। यह पत्र तो खो गया, परन्तु बादमे किसी मौके पर अुसके शब्द याद करके लिख लिये गये। पत्रका पाठ यह है

“मै आपको अेक कवच देता हू। जब कभी आपको शका हो या खुदी बहुत सताने लगे तो यह अुपाय आजमाअिये।

“आपने जो गरीबसे गरीब और लाचारसे लाचार मनुष्य देखा हो, अुसका चेहरा याद करके अपने आपसे पूछिये कि क्या आप जो कदम अुठानेका विचार करते हैं, वह **अुस आदमीके** लिअे किसी कामका होगा? क्या अिससे अुसे कोअी लाभ हो सकेगा? क्या अिससे अुसे अपने खुदके जीवन और भाग्य पर फिरसे काबू प्राप्त हो जायगा? दूसरे शब्दोमे, क्या अिससे हमारे देशके करोडो भूखे पेट और भूखी आत्मावाले लोगोको स्वराज्य मिलेगा?

“तब आप देखेगे कि आपकी शकाअे और आपकी खुदी गायब हो रही है।

—मो० क० गाधी”

७१. विद्यार्थियोंको फटकार

सक्करमे विद्यार्थियोने गाधीजीको मानपत्र भेट किया। गाधीजीसे कुछ नतिक प्रश्नो पर, जिनका वातावरणसे कोअी मेल नही बैठता था, अपनी राय देनेका अनुरोध किया गया। जिरह करने पर विद्यार्थियोने स्वीकार किया कि मानपत्रका मसौदा तैयार करनेमे पहले या पीछे अुनसे मशविरा नही किया गया था। सारे मामलेकी अवास्तविकतासे गाधीजीको आघात पहुचा। अुन्होने अिसे अनजाने किया गया असत्य बताया।

अुन्होने विद्यार्थियोसे कहा “तुमने मुझे अेक अैसा मानपत्र भेट किया है, जिसमे क्या लिखा है यह तुम्हे मालूम नही है। तुमने अपने मानपत्रमे खादीकी सराहना की है, मगर तुम विलायती कपडे पहनकर आये हो।

तुमने मुझसे प्रश्न पूछे है, जो मुझे निरा ढोंग दिखाओी देता है। अिस तरह तुमने अपना कीमती वक्त बरबाद किया है। सक्करके बाजारकी सफाओी करके या और कोओी प्रामाणिक काम करके और अुसकी कमाओी लालाजी स्मारक निधिमे देकर तुम अुसका कही अच्छा अुपयोग कर सकते थे। ज्ञान जिज्ञासुको ही दिया जा सकता है। परन्तु यह देखते हुअे कि मानपत्रमें क्या लिखा है यह तुम्हे मालूम ही नही है, तुम्हे अुत्तर जाननेकी अिच्छा नही हो सकती। अिसलिअे मैं अुन पर गभीरता-पूर्वक ध्यान देनेसे अिनकार करता हू। यदि प्रश्न तैयार करनेवाला जवाब पाना चाहता हो, तो अुसे दूसरा मौका तलाश करना चाहिये।"

७२. सुखका निवास

दिसम्बर १९३१ मे लदनकी गोलमेज परिषदसे भारत लौटते हुअे महात्मा गाधी पेरिस ठहरे थे। वहा अुन्होने २००० से अधिक व्यक्तियोकी सार्वजनिक सभामे भाषण दिया। अिस सभाका आयोजन स्थानीय बुद्धिजीवी वर्गने किया था। भाषणके अन्तमे अुन्होने कुछ प्रश्नोके अुत्तर दिये, जिनमें से अधिकाश अुनके फ्रासीसी श्रोताओने किये थे। जो प्रश्न पूछे गये अुनमे ये भी थे

प्र० — मनुष्यका सुख ज्ञानमे रहता है या अज्ञानमे? (हसी)

अु० — दोनोमे ही नही। वह प्रत्येक मनुष्यके भीतर ही निवास करता है और पूर्णता तथा सत्यकी खोजमे रहता है।

प्र० — क्या सभी मनुष्य पूर्णता प्राप्त कर सकते है?

अु० — हा, पूर्णता स्वय अुनके भीतर ही विद्यमान है।

प्र० — कुछ वर्ष हुअे मैने आपको यूरोपियन वेषमें देखा था। आपने अुसे छोड क्यो दिया?

अु० — मै गरीब आदमी हू और हजारो भारतीयोकी भाति यूरोपियन वेष धारण नही करता। प्रथम तो अिसलिअे कि वह हमारे देशकी आबोहवाके बिलकुल प्रतिकूल है और दूसरे अिस कारण कि अगर हम हिन्दुस्तानी कपडे पहनते है तो हमारे भारतीय मजदूरोको काम मिलता है।

७३. मनुष्य-स्वभाव मूलमें अेक

प्रसिद्ध फ्रासीसी विद्वान रोमा रोलाने लिखा है, "जव मैने अपनी ताजी ही प्रकाशित पुस्तक गाधीको भेजी, तो मैने यह भय प्रगट किया कि शायद मैने हर जगह आपके विचारोको अच्छी तरह न समझा हो, अिसलिअे आप मुझमे कोअी भूल हुअी हो तो वताअिये, जिससे मै अुसे ठीक कर दू। अुन्होने मुझे अुस आरोग्य-भवनसे, जहा वे वीमारीके वाद आराम ले रहे थे, यह अुत्तर दिया

अधेरी,
२२ मार्च, १९२४

प्रिय मित्र,

मै आपके कृपापूर्ण पत्रके लिअे कृतज्ञ हू। आपसे अपने निवंधमे यत्र-तत्र थोडीमी भूले हो भी गअी हो तो क्या हुआ? मेरे लिअे आश्चर्यकी वात तो यह है कि आपने अितनी थोडी गलतिया की है और अेक दूरस्थ तथा भिन्न वातावरणमें रहकर भी मेरे विचारोका अितना मही अर्थ करनेमे आप समर्थ हुअे है। अिससे फिर अेक वार यह सावित होता हे कि मनुष्यका स्वभाव भिन्न-भिन्न वातावरणमे विकसित होने पर भी मूलमे अेक ही है।

——मो० क० गाधी

७४. 'सव झूठे'

१९२५ के अपने वगालके दौरेमे गाधीजी सयोगवश नवावगज भी गये थे। रातभर भारी वर्षा होती रही थी और (हरिपदवावूकी राष्ट्रीय पाठशालाके) विद्यार्थी, जिनसे गाधीजी प्रस्थान करनेसे पहले तडके ही मिलना चाहते थे, समयकी पावदी न कर सके और देरसे आये। अिस-लिअे अुन्हे पाच मिनटमे अधिक नही दिये जा सके। गाधीजीने अुनमे कहा, "तुम मव कातते और खद्दर पहनते हो। परन्तु मुझे वताओ कि तुममें मे कितने मदा सच वोलते हे और कभी झूठ नही वोलते?" थोडेसे लडकोने अपने हाथ अुठाये। "अच्छा, अव मुझे वताओ

कि तुममे से कभी कभी झूठ बोलनेका मयोग कितनोंके जीवनमें आता है?" दो लडकोंने तुरत अपने हाथ अुठा दिये, फिर तीनने और फिर चारने और अन्तमें लगभग सभीने।

गांधीजीने अुनसे विदा लेते हुअे कहा, "तुम्हे धन्यवाद है। तुममे से जो जानते है और मानते है कि हम कभी कभी झूठ बोल देते है, अुनके लिअे जीवनमे सदा सुधरनेकी आशा रहेगी। जो यह समझते है कि हम कभी झूठ नही बोलते अुनका मार्ग कठिन है। मैं दोनोंकी सफलता चाहता हू।"

७५. देशसेवा कैसे करें?

दूसरी गोलमेज परिषदके सिलसिलेमे गांधीजी १९३१ के अुत्तरार्द्धमें अिंग्लैण्ड गये थे। अपने अुस प्रवास-कालमें वे अेक बार श्री और श्रीमती पारधीके बर्मिंघमवाले मकान पर अपने कअी देशबन्धुओंसे मिले थे। अुनमें से किसीने अुनसे पूछा कि भारतकी सेवा करनेका अुत्तम मार्ग क्या है? अुन्होंने अुत्तर दिया

"अपनी बुद्धिको रुपये-आने-पाअीमे भुनानेके बजाय अपने देशकी सेवामे लगा दीजिये। अगर आप डॉक्टर है तो भारतमे काफी बीमारी है, जिसमें आपकी सारी डॉक्टरी दक्षताकी जरूरत होगी। यदि आप वकील है तो भारतमे मतभेद और झगडे है। झगडोंको बढानेके बजाय आप अुन्हे मिटाअिये और मुकदमेबाजी बन्द कराअिये। अगर आप अिंजीनियर है तो अैसे आदर्श घर बनाअिये जो हमारे यहांके लोगोंकी आवश्यकताके अनुकूल और शक्तिके भीतर हो और फिर भी हवा और प्रकाशसे पूर्ण तथा स्वास्थ्यप्रद हो। कोअी अैसी चीज नही जिसे आपने सीखा हो और जिससे लाभ नही अुठाया जा सकता हो।"

७६. गांधी और थोरो

कुछ हलकोंमें यह खयाल फैला हुआ है कि महात्मा गाधीको सविनय आज्ञाभग (Civil Disobedience) का विचार थोरोकी रचनाओसे मिला है। अिसे स्वय गाधीजीने निराधार बताया है। अिस सम्बन्धमें किये गये अेक प्रश्नके अुत्तरमें अुन्होने १० सितम्बर, १९३५ को अेक पत्र भारत सेवक समितिवाले श्री पी० कोदण्डरावको, जो अुस समय अमरीकामें थे, लिखा था। अुसमें अुन्होने कहा था

"यह बयान गलत है कि मैंने अपना सविनय आज्ञाभगका विचार थोरोके लेखोसे लिया है। सविनय आज्ञाभग पर थोरोका निबंध जब मुझे मिला, अुससे पहले दक्षिण अफ्रीकामे सरकारी सत्ताका विरोध काफी आगे बढ चुका था। परन्तु अुस समय वह आन्दोलन निष्क्रिय प्रतिरोध (Passive Resistance) के नामसे मशहूर था। चूकि वह अपूर्ण था, अिसलिअे मैंने गुजराती पाठकोके लिअे सत्याग्रह शब्द गढ लिया था। जब मैंने थोरोके महान निबंधका शीर्षक देखा, तो मै अंग्रेजी पाठकोको अपना सग्राम समझानेके लिअे थोरोका शब्द काममे लेने लगा। लेकिन मैंने देखा कि सग्रामका पूरा अर्थ 'सविनय आज्ञाभग' शब्दसे भी व्यक्त नही होता। अिसलिअे मैंने 'सविनय विरोध' (Civil Resistance) शब्द अपनाया। अहिंसा तो हमारे सग्रामका अविभाज्य अग सदैव ही रही।

७७. अहिंसाका पदार्थपाठ

१९४७ के शुरूमें अपने नोआखाली जिलेके स्मरणीय दौरेमे गाधीजी बरमपुरमें असगर भूयान नामक अेक मुसलमान ग्रामवासीके घर पर कुछ मिनटके लिअे ठहर गये थे। वहा गाधीजीका हार्दिक स्वागत किया गया और मुस्लिम देहातियोने अुन्हें मालाअें पहनाअी। घरके बच्चोने गाधीजीको घेर लिया और गाधीजीने अुनकी पीठ थपथपाकर कहा, "तुम सब मेरे दोस्त हो।"

असगर भूयानने गाधीजीको अेक वृक्षकी टहनी दिखलाकर कहा, "देखिये, गाधीजी, अिस शाखामे दो प्रकारकी पत्तिया है। क्या यह आश्चर्यकी बात नही है?" अुन्होने पूछा।

गाधीजी हसे और बोले "अिसमे आश्चर्यकी कोअी वात नही। यह सब अीश्वरकी सृष्टि है। अेक ही वृक्षकी ये दो भिन्न भिन्न प्रकारकी पत्तिया अेक ही देशके हिन्दुओ और मुसलमानोकी तरह है। लेकिन देखो, ये दोनो अेक ही वृक्ष पर साथ साथ कैसी फल-फूल रही है? वे हमें वताती है कि जैसे ये दो प्रकारकी पत्तिया अेक ही पेड पर रह रही है, वैसे ही हमे भी अेक ही भूमि पर दो सगे भाअियोकी तरह रहना चाहिये।"

मुस्लिम ग्रामवासी गाधीजीके अुत्तरसे वडे खुश हुअे और बोले कि गाधीजीने जो कुछ कहा है वह बिलकुल ठीक है। हिन्दू-मुसलमानोको अेक ही देशके सगे भाअियोकी तरह रहना चाहिये।

७८. आत्महत्याका निमंत्रण

अेक अग्रेज पत्रलेखकने गाधीजीको 'ब्रिटानिया' (ता० १५-२-'२९) मे छपे हुअे 'Cheer Up' (खुश हो जाओ) शीर्षक अेक लेखकी कतरन भेजी। लेखमे ब्रिटेन द्वारा विजित लोगोके, अुसके व्यापारी जहाजोके और निर्यात मालके व्योरेवार आकडे थे और अतमे यह दर्पोक्ति थी कि "हमारा व्यापारी जहाजी बेडा ससारमे सबसे वडा है। वह भारतको हर साल दस लाख पौण्डकी यत्र-सामग्री पहुचाता है और वहासे अग्रेज हिस्सेदारो, रुपयेका लेन-देन करनेवाले साहूकारो और अधिकारियोको प्रतिवर्ष कोअी तीन करोड पौण्ड मिलते है!"

पत्रलेखकने अुक्त कतरन पर निम्नलिखित टिप्पणी लिखी थी

"अगर मददृष्टि गाधी यह सब हालत देख पाये तो शायद वह अपने ही चरखेसे अपना गला काट ले।"

अिस पत्र पर गाधीजीकी टीका यह थी

"मैने निश्चय किया है कि अभी कुछ समय तक अपना गला न काटू। मै यह देखना चाहता हू कि 'ससारका सबसे वडा व्यापारी जहाजी बेडा' जो करोडो गज कपडा अिग्लैण्डसे भारतमे लाता है वह सबका सब चरखे द्वारा अुत्पन्न हो। भारतको सिर्फ अपनी नींद छोडनी होगी।"

७९. जेलका अेक अनुभव

जब गाधीजी यरवडा जेलमे थे अुन दिनो कैदखानेके सुपरिन्टेन्डेन्ट, कर्नल डल्जियल, बहुत चाहते थे कि गाधीजी मक्खन ले। और मक्खन रोटीके साथ लेनेके लिअे, अुन्होने गाधीजीके लिअे काफी बडी मात्रामे आटा भिजवा दिया। फिर जो कुछ हुआ अुसका वर्णन १९२४ के शुरूमे गाधीजीने अपनी रिहाअीके बाद अिस प्रकार किया था

"थोडी आजमाअिशके बाद मुझे महसूस हुआ कि मुझे न आटेकी जरूरत है, न मक्खनकी। मैंने कह दिया कि आटा वापिस ले लिया जाय और मक्खन देना बन्द कर दिया जाय। कर्नल डल्जियल सुननेको तैयार नही थे। जो दे दिया सो दे दिया। शायद बादमे मै ललचा जाअू। मैंने दलील दी कि यह सब सार्वजनिक धनकी बरबादी है। मैंने धीमेसे कहा कि मुझे जनताके रुपयेके अुपयोगका अुतना ही खयाल है जितना स्वय अपने रुपयेका। अुनके मुह पर अविश्वाससूचक मुसकुराहट दिखाअी दी। तब मैंने कहा, 'बेशक यह मेरा रुपया है।'

"तुरन्त प्रत्युत्तर मिला, 'आपने सार्वजनिक कोषमे कितना रुपया दिया है?' मैंने नम्रतापूर्वक अुत्तर दिया, 'आप तो केवल राज्यसे मिलनेवाले वेतनका कुछ प्रतिशत ही देते है, जब कि मै अपना सारा परिश्रम, बुद्धि और सब कुछ देता हू।' अिस पर बडी जोरकी अर्थपूर्ण हसी हुअी। परन्तु मै अप्रतिभ नही हुआ, क्योकि मैंने जो कुछ कहा वही मै मानता था।"

८०. रामनामका मंत्र

"मेरा भतीजा बीमार था। अुसके रिश्तेदार अुसके अिलाजके लिअे दवाका आश्रय न लेकर मतर-जतरका आश्रय लेते थे। अिनसे कोअी लाभ हुआ हो अैसा नही कहा जा सकता। आपकी माताजीने भी जरूर अिन चीजोसे काम लिया होगा। अब आप रामनामकी बात करते है। क्या यह वही जादू-टोना नही है?" अेक पत्रलेखकने महात्माजीसे पूछा। अुनका जवाब यह था

"मै किसी न किसी रूपमे अिस प्रश्नका अुत्तर अबसे पहले दे चुका हू। परन्तू फिर दे देना अच्छा ही होगा। जहा तक मुझे याद है

मेरी मा मुझे औषधियां देती थी, परन्तु अुसका जादू-टोनेमे विश्वास जरूर था। मेरे बहुतसे पंडित मित्रोंका भी अिसमें विश्वास है। मेरा नहीं है। और चूंकि मैं अिन बातोंको नहीं मानता, अिसलिअे मैं निर्भय होकर कह सकता हूं कि मेरी कल्पनाके रामनाममे और जंतर-मंतरमे कोअी संबंध नहीं है। मैंने कहा है कि हृदयसे रामनाम लेनेका अर्थ अेक अतुलनीय सत्तासे सहायता प्राप्त करना है। अुस सत्तामे सब प्रकारकी पीडा मिटानेका सामर्थ्य है। परन्तु यह स्वीकार करना पडेगा कि यह कहना आसान है कि रामनाम हृदयसे निकलना चाहिये, परन्तु सचमुच अैसा कर सकना बडा कठिन है। फिर भी मनुष्य जिन्हे प्राप्त कर सकता है अुनमे यह सबसे बडी चीज है।"

८१. 'अशुद्ध' कौन है?

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके भूतपूर्व अध्यक्ष श्री सी० विजयराघवाचार्यके दामाद श्री तथाचार्यने महात्मा गांधीको जो 'खुली चिट्ठी' भेजी थी, अुसके अुत्तरमे अुन्होंने निम्नलिखित पत्र लिखा था। अिस 'खुली चिट्ठी' में श्री तथाचार्यने हरिजनोंको मन्दिर-प्रवेशकी अिजाजत देनेसे पहले अुनकी 'शुद्धि' की आवश्यकता पर जोर दिया था

"प्रिय मित्र,

जिसे आपने 'खुली चिट्ठी' का नाम दिया है वह मुझे मिल गअी है। मैं स्वीकार करता हूं कि आपकी दलील मुझे जंची नहीं। मेरा दृढ विचार है कि शुद्धि और प्रायश्चित्त सवर्ण हिन्दुओंको करना है, न कि हरिजनोंको, क्योंकि अुनकी बाहरी अस्वच्छताके लिअे भी सवर्ण हिन्दू ही जिम्मेदार हैं।

भीतरमे तो हमें पता नहीं कि कौन अशुद्ध है, परन्तु हम अपने पिछले अनुभवसे यह नतीजा निकाल सकते हैं कि विशेषाधिकार-प्राप्त और सबल लोगोंके दिल दलितों और घृणाके शिकार बने लोगोंसे अधिक अशुद्ध होते हैं।

आपका

मो० क० गांधी"

८२. गांधीजी और साम्यवादी

साम्यवादियोका न केवल गाधीजीके सिद्धान्तोसे मतभेद था, परन्तु वे अिस शताब्दीके तीसरे दशकमे काग्रेसकी सभाओमे वहुत अुत्पात भी करते थे । परन्तु चूकि गाधीजीके मनमे अुनके प्रति कोअी दुर्भाव नही था, अिसलिअे वे सदा साम्यवादियोका हृदय जीतनेका प्रयत्न करते थे। जव वे १९२९ मे मेरठमे थे तव अुन्होने वहाकी जेलमे रखे गये साम्यवादी कैदियोसे मिलनेकी प्रवल अिच्छा प्रगट की। अिन लोगो पर प्रसिद्ध मेरठ षड्यत्रके सिलसिलेमे मुकदमा चलाया जा रहा था।

जव वे जेलमें पहुचे तो कैदियोको अेक अैसे मुलाकातीको देखकर आश्चर्य हुआ, जिसके आनेकी अुन्हें कमसे कम आशा थी। अुन्होने गाधीजीका अिन शब्दोके साथ अभिवादन किया, "साफ वात यह है कि हमें आपके आनेकी आशा नही थी।"

गाधीजीने अुत्तर दिया, "अवश्य ही आपको आशा नही होगी। आप मुझे नही जानते। आपके साथ मेरा मतभेद हो सकता है। आप काग्रेसकी सभाओमें अुपद्रव भी मचा सकते है। परन्तु मेरा धर्म मुझे यह सिखाता है कि मै विशेष प्रयत्न करके भी अपने विरोधियोके प्रति आदर प्रगट करु और अिस प्रकार अुन्हे प्रत्यक्ष दिखा दू कि मै अुनका वुरा नही चाहता।"

८३. 'अहिंसक' शहद

गाधीजीको अपने मित्रोमें 'अहिंसक शहद' का विज्ञापन करनेका शौक था। अेक वार जव अुन्होने अेक मित्रसे अैसे शहदका जिक्र किया, तो अुसने अुनसे पूछा कि अिस शब्दसे आपका मतलव क्या है। गाधीजीका जवाव यह था

"वैज्ञानिक मधुमक्खी-पालको द्वारा वैज्ञानिक ढगसे निकाला हुआ शहद। वे मक्खिया पालते है और अुन्हें मारे विना अुनसे शहद अिकट्ठा करवाते है। अिसीलिअे मै अिसे निर्दोष या अहिंसक शहद कहता हू। यह अैसा अुद्योग हे जिसमें विस्तारकी वडी गुजाअिश है।"

मित्रने शका प्रगट की, "लेकिन क्या आप अिसे सर्वथा अहिंसक कह सकते है? आप मक्खीसे वैसे ही शहद छीन लेते है जैसे बछडेसे दूध।"

गाधीजी बोले, "आप ठीक कहते है, परन्तु दुनियाका काम पूरी तरह तर्कसे नही चलता। स्वय जीवनमें कुछ न कुछ हिंसा रहती ही है और हमें कमसे कम हिंसाका मार्ग पसन्द करना पडता है। आप मानेंगे कि शाकाहार तकमें हिंसा है। अिसी तरह, मुझे शहद चाहिये तो मुझे मक्खीसे दोस्ती करके जितना भी शहद वह पैदा करके दे सकती है अुतना अुससे पैदा करवाना है। साथ ही यह बात भी है कि वैज्ञानिक मक्खी-पालनमें मक्खीको अुसके शहदसे पूरी तरह कभी वचित नही किया जाता।"

८४. कालीका मन्दिर

१९२८ की समाप्तिके आसपास अेक खादी-कार्यकर्ताने चाहा कि गाधीजी अुसके साथ कलकत्ते जाय। कार्यकर्ताका तर्क यह था कि "अगर हम कलकत्तेका कायापलट कर सकें तो सारे भारतका कर देंगे।" गाधीजी वहा चले जाते और अपनी सारी प्रवृत्तियोका केन्द्र वही बना लेते। परन्तु अुन्होने अेक दु खपूर्ण रहस्यका अुद्घाटन किया, जिसे अुन्होने पिछले कअी वर्षोंसे अपने हृदयमें छुपा रखा था। वह रहस्य था कालीका मन्दिर। अुन्होने कहा, "मेरी कठिनाअी यहा है। मैं अुसे देख नही सकता। मेरी आत्मा अुस हृदयहीन अमानुषिकताके प्रति विद्रोह करती है, जो वहा धर्मके नाम पर होती रहती है। मुझमें बल होता तो मैं मदिरके द्वार पर आसन जमा देता ओर अुसके सचालकोसे कह देता कि अेक भी निर्दोष पशुकी बलि चढानेसे पहले अुन्हे मेरा गला काटना होगा। परन्तु मैं जानता हू कि मेरे लिअे अिस समय अैसा करना असत्य होगा, केवल यात्रिक क्रिया होगी, क्योकि मैं अभी तक जीनेकी अिच्छा पर पूर्ण विजय प्राप्त नही कर पाया हू। और जब तक मैं अैसा न कर सकू तब तक मुझे अपने अपूर्ण जीवनका भार वहन करना ही होगा।"

८५. 'दुनियाका सबसे बड़ा प्रयोग'

"गाधीजीने हमे डरा दिया था। अुनका प्रयोग अितिहासमें सबसे बडा प्रयोग था और अुसके सफल होनेमे बालभरकी ही कसर रही थी।" यह बात लॉर्ड लॉयडने खानगीमें १९२२ में — जब गाधीजी ६ सालकी कैदकी मियादमें से १८ मास जेलमें बन्द रखे जा चुके थे — स्वीकार की थी। लॉर्ड लॉयड १९१८ से १९२३ तक बम्बअीके गवर्नर थे और यह बात अुन्होने प्रसिद्ध अमरीकी पत्रकार मि० ड्रयू पियर्सनके सामने स्वीकार की थी, जब वे अुनसे पूना मिलने गये थे। लॉर्ड लॉयडके साथ मि० पियर्सनकी मुलाकातका समाचार अडीलेड, आस्ट्रेलियाके अखबार 'दि अेडवर्टाअिजर' में छपा था और अुसमें मि० पियर्सनने लॉर्ड लॉयडका अुल्लेख अुनका नाम लेकर नही, अुन्हे 'भारतका अेक अुच्चतम अधिकारी' बताकर ही किया था।"

गवर्नरने मि० पियर्सनको जेलमें गाधीजीसे मुलाकात करनेकी अिजाजत देनेसे साफ अिनकार कर दिया और कहा, "गाधीको जेलमें बन्द रखनेका अेक ही तरीका है कि अुसे जिन्दा गाड दिया जाय। अगर हम लोगोको यहा आकर अुसके बारेमें शोर मचाने देंगे, तो वह शहीद बन जायगा और जेल दुनियाके लिअे मक्का हो जायगी। हमने गाधीको अिसलिअे तो कैद नही किया कि अुसके सिर पर काटोका ताज रखकर अुसे शहीदका सम्मान दे।"

८६. बापू और बा

१९१५ के शुरूमे भारत लौट आनेके बाद जब गाधीजी कस्तूरबाके साथ मद्रास गये थे, तब वे अनुभवी पत्रकार श्री जी० अे० नटेसनके मेहमान हुअे थे। अैसा मालूम होता है कि श्री नटेसनने कस्तूरबाको अनेक अवसरो पर अुदास देखकर अिस बात पर गाधीजीका ध्यान दिलाया। श्री नटेसनके कथनानुसार गाधीजी अुत्तरके लिअे ठहरे नही, अुन्होने तुरन्त कहा कि "यह अुसका खुदका ही मोल लिया हुआ रोग है।" और यह भी कहा "वह चाहती है कि मै अुसके पोते-पोतियोके लिअे कीमती कपडे खरीदनेको रुपया दू।"

श्री नटेसनके मजाकमें यह कहने पर कि आप तो निर्दय पति है, गाधीजीने फौरन यह प्रत्युत्तर दिया "देखिये, आप मुझ पर ज्यादती कर रहे है। अगर मै अिन और दूसरे मामलोमें अुसकी अिच्छाओके सामने झुकने लगू, तो अिसका यह मतलब होगा कि मै अपने सिद्धान्तोको तिलाजलि दे दू। वह मेरे विचार पूरी तरह जानती ह और मेरे रहन-सहनके ढगसे पूर्णतया परिचित है। मैने कजी वार अुससे प्रार्थना की है कि वह मुझसे अलग रहकर अपनेको असुविधासे वचा ले और अपने वच्चोके साथ सुखसे रहे। परन्तु वह तैयार नही होती। वह पतिपरायणा हिन्दू पत्नीकी भाति जहा कही मै जाअू वही मेरे पीछे पीछे चलनेका आग्रह रखती है।"

८७. मौ० मुहम्मदअलीको सन्देश

१९२३ में जेलखानेमे छूटनेके वाद मौलाना मुहम्मदअली वडी दुविधाकी अवस्थामें पड गये। अेक तरफ तो अुन पर स्वराज्यवादियोका असर पड रहा था, क्योकि अधिकाश स्वराज्यवादी अुनके निकटतम और प्रियतम मित्र थे। दूसरी तरफ गाधीजीके प्रति अुनकी वफादारी थी और गाधीजी अुस समय भी यरवडा जेलमें थे। अिसलिअे जव देवदास गाधी अुनसे मिले तव अुन्हे यह जाननेकी अुत्सुकता थी कि वापूने अुनके लिअे कोअी सदेश भेजा है या नही। सन्देश भेजा गया था और वह अिस प्रकार था

"मै आपको कोअी सन्देश नही भेज सकता, क्योकि मे कैदी हू। मैने जेलखानेसे सन्देश भेजनेका सदा ही विरोध किया है। परन्तु मे कह सकता हू कि मेरे प्रति आपकी वफादारीसे मुझ पर गहरा असर हुआ है। फिर भी मै आपसे कहूगा कि आप पर मेरे प्रति रही आपकी वफादारीका अितना असर नही होना चाहिये जितना देशके प्रति आपकी वफादारीका। मेरे विचार वहुत सुपरिचित है। मैने जेल जानेसे पहले अुन्हे प्रगट कर दिया था और तवसे अुनमें कोअी परिवर्तन नही हुआ है। मै आपको विश्वास दिला दू कि अगर आप मुझसे भिन्न मत रखना पसन्द करेगे, तो आपके और मेरे मीठे सम्बधोमें रत्तीभर भी फर्क नही पडेगा।"

सुनकर मौलाना अेकदम कह अुठे, "यह बिलकुल बापूके लायक ही है! मै अिसे सुननेसे पहले ही लिख कर दे सकता था। वे अैसे आदमी ही नही जो किसीके विचार और कार्यकी स्वतत्रतामे बाधक हो और अिसीलिअे वे हमारे डिक्टेटर बननेके लिअे सबसे योग्य है।"

८८. दूसरोके पापकी सजा अपनेको

जो लोग गाधीजीके अनुयायी होनेका दावा करते थे या अुनकी देखरेखमें रहते थे, वे यदि अपनी प्रतिज्ञाका पालन करनेमें चूकते या गुप्त पाप करते, तो गाधीजी अुन्हें कोअी सजा न देकर हमेशा अपनेको दण्ड देते थे। दक्षिण अफ्रीकाके फिनिक्स आश्रममें और साबरमती आश्रममें अुन्होने कुछ आश्रमवासियोके नैतिक पतनके लिअे जो अुपवास किये वे सर्वविदित है। स्वामी भवानीदयालने, जो कुछ वर्ष तक फिनिक्स आश्रममें गाधीजीके साथ रहे थे, बापूके अिस प्रकार दूसरोके खातिर आत्म-ताडना करनेके अेक विशेष अुदाहरणका वर्णन किया है। अेक बार कुछ युवा आश्रमवासी, जो हालमें ही अेक महीने तक बिना नमकका भोजन लेनेकी प्रतिज्ञा करनेके बाद आश्रममे भरती हुअे थे, सादे भोजनसे अितने अुकता गये कि अुन्होने डर्बनसे मसालेदार और स्वादिष्ठ भोजन मगवाकर चुपकेसे खा लिया। अुनमें से अेकने, जो अिस भोजनमें शरीक हुआ था, बापूको अिसकी सूचना दे दी। शामकी प्रार्थनामें जब बापूने अुनमे अेक अेक करके प्रश्न किया, तो सबने अिलजामसे अिनकार कर दिया और सूचना देनेवालेको झूठा बताया। स्वामीजी कहते है, "अिस पर बापूने बडे जोरसे अपने ही गालोको पीटना शुरू कर दिया और कहा, 'मुझसे सचाअी छुपानेमें कसूर तुम्हारा नही मेरा है, क्योकि अभी तक मैने सत्यका गुण प्राप्त नही किया है, सत्य मुझसे दूर भागता है।' वे अपनेको ताडना देते ही रहे। यह बरदाश्तके बाहरकी बात थी, अिसलिअे अुक्त आश्रमवासी अेक अेक करके सामने आये और अुन्होने सच बात स्वीकार कर ली।"

८९. 'कैदी न० १७३९'

जब महात्मा गांधी नवम्बर १९१३ में व्लूमफॉण्टीन जेलमें दक्षिण अफ्रीका सरकारके कैदी थे, तब अुनके जेलकार्ड पर, जो अब श्री लोकमल गोविन्दवल्लभ मलकानीके पास है, और बातोंके साथ यह ब्योरा भी लिखा हुआ था

न० १७३९

नाम मोहनदास करमचन्द गांधी

धर्म हिन्दू

अुम्र ४३

पेशा वकालत

सजाकी तारीख ११–११–'१३

रिहाजीकी तारीख १०–११–'१४

सजा हुअी २० पौण्ड या ३ महीने (चारों अपराधोंमें से प्रत्येक पर)।

गांधीजीको नेकचलनीके लिअे ६० नंबर मिले थे। चूंकि अुन्होंने जुर्माना अदा नहीं किया था, अिसलिअे अुन्हें पूरी सजा काटनी पड़ी थी। कार्ड पर अुनके अंगूठेकी निशानियां लगी हुअी हैं।

कार्ड पर अुनको जेलमें जो भोजन दिया जाता था, अुसके बारेमें ये शब्द भी लिखे हुअे हैं "धार्मिक सिद्धांतोंके कारण शाकाहारी भोजन दिया गया। खुराक १२ केले, १२ खजूर, ३ टमाटर और १ नींबू हर बार, २ औंस जैतूनका तेल और ३ चुनी हुअी मूंगफलियां।"

९०. अखबारी झूठ

जब भारतके भूतपूर्व वाअिसरॉय लॉर्ड अर्विन (जो बादमें लॉर्ड हैलीफेक्स कहलाये) संयुक्त राज्य अमरीकामें ब्रिटिश राजदूत होकर गये, तो लंदनके अखबार 'पिक्चर पोस्ट' में अेक लेखकने अुनके विषयमें यह मनगढ़त किस्सा लिखा था

"वे (लॉर्ड अर्विन) भारत गये और पांच साल रहे। वे मोहनदास क० गांधीसे मिले और भारतके अुस दुबले-पतले सन्तसे जितना धार्मिक

अुत्साह हो सकता या अुसकी अपेक्षा प्रबलतर धार्मिक अुत्साह दिखाकर अुन पर विजय प्राप्त की।

"अेक बार लॉर्ड अर्विनसे अेक लम्बी बातचीतमे मात खानेके बाद अुस पर अपना मतव्य जाहिर करते हुअे महात्माने यह कहा था कि '**आप अीसा मसीहसे तर्क नहीं कर सकते।**'

"समय समय पर गाधीजी जो भूख हडताले किया करते थे अुनमे से अेकके समय लॉर्ड हेलीफेक्सने युक्तिपूर्वक कहा, "गाधी अब अैसी भाषामे बोल रहे है जिसे भारतके लोग समझते हैं। अगर मै नअी दिल्लीकी सरकारी अिमारतोके मुख्य मार्गमे पहुच जाअू और फर्श पर बैठकर अुस वक्त तक कुछ भी खानेसे अिनकार कर दू जब तक भारतीय सविनय कानून-भग आन्दोलनके विषयमे समझौता न हो जाय, तो चद रोजमे झगडा खतम हो जाय। हा, ये चन्द रोज बीतनेसे पहले ही लदनके मेरे अुदार, अनुदार ओर मजदूर दलोके साथी मुझे घर बुला लेगे और मेरे वहा पहुचने पर मेरे लिअे अेक काल-कोठरी तैयार रखेगे।"

जब प्रसिद्ध भारतीय पत्रकार ख्वाजा अहमद अब्बासने अुपरोक्त 'कहानी' की तरफ महात्माजीका ध्यान दिलाया, तो अुन्होने ख्वाजाको सेवाग्रामसे यह लिखा

"आपका निशान लगाया हुआ हिस्सा बिलकुल झूठ है। लॉर्ड अर्विनके बारेमे जो कहा गया है वह भी झूठ है। हमारी मुलाकात विशुद्ध राजनीतिक मुलाकात थी।"

९१. कच्छ कैसे आया?

गाधीजीने पूरी पोशाक, जो वे तब तक पहनते रहे थे, कैसे छोडी और कच्छ ही पहनना क्यो शुरू कर दिया, अिसका हाल अुन्होने अेक मुलाकातके दौरानमे बताया था। अुन्होने कहा

"१९२१ मे मौलाना मुहम्मदअली और मै जब दक्षिणके दौरे पर जा रहे थे तब अुन्हे वाल्टेरमे गिरफ्तार कर लिया गया। बेगम मुहम्मद-अली भी हमारे साथ सफर कर रही थी। अुनसे मौलानाको जुदा कर दिया गया। मुझ पर अिसका गहरा असर हुआ। बेगम साहबाने जुदाअीको

वहादुरीके साथ वरदाश्त किया और मद्रासमें सभाओंमें गओी। मैंने अुन्हें मद्रासमें छोड दिया और मदुरा तक गया। रास्तेमें मैंने हमारे डिब्बेमे जिन लोगोंको देखा अुन्हे कुछ खयाल ही नही था कि क्या घटनाअे हुअी हैं। लगभग निरपवाद रूपमें वे सव वढिया विदेशी वस्त्रोंमें सुसज्जित थे। मैंने अुनमे से कुछके साथ वातचीत की और खादीकी वकालत की। कारण, मेरे पास अैसी वस्तुओंकी रिहाअी करानेका खादीके सिवा और कोअी अुपाय नही था। अुन्होने सिर हिलाते हुअे कहा, 'हम जितने गरीव है कि खादी नही खरीद सकते। वह वहुत महगी है'। मै अुनके वचनोंकी सच्चाअीका सार समझ गया। मैं कुर्ता, टोपी और पूरी धोती पहने हुअे था। अिन लोगोंने तो आंशिक सत्य ही कहा था जव कि करोडों लोग, जो अपनी चार अिंच चौडी और लगभग अुतने ही फुट लम्वी लंगोटीके सिवा मजवूरन् नंगे रहते है, अपने हाथ-पैरों द्वारा नग्न सत्यको प्रगट कर रहे थे। अगर मैं सभ्यताकी हदमें रहते हुअे अपने पहनावेमे से जितना कपडा कम कर सकता था अुतना न करता और अिस प्रकार अर्द्धनग्न जनसाधारणके और भी वरावर न वन जाता, तो मै अुन्हे क्या कारगर जवाव दे सकता था? मदुराकी सभाके वाद दूसरे दिन सुवह ही मैंने अपना यह निश्चय पूरा किया।"

१२. 'ताजके सच्चे हकदार वे है'

गाधीजी दक्षिण अफ्रीकासे भारत लौटे, अुसके थोडे ही समय वाद अप्रैल १९१५ मे मद्रासमे अुन्हे और कस्तूरवाको अेक मानपत्र भेंट किया गया। अुसका अुत्तर देते हुअे गाधीजीने कहा

"अध्यक्ष महोदय, अिस मानपत्रमे जो भाषा अिस्तेमाल की गअी है यदि मै और मेरी पत्नी अुसके दसवें हिस्सेके भी हकदार हैं, तो आप अुन लोगोंके लिअे किस भाषाका अुपयोग करेंगे जिन्होंने दक्षिण अफ्रीकामे हमारे पीडित देशवासियोंके खातिर अपने प्राण गवा कर अपना काम पूरा किया? नागप्पन और नारायणस्वामी जैसे सत्रह-अठारह वर्षके लडकोंके लिअे आप किस भाषाका प्रयोग करना चाहेंगे, जिन्होंने शुद्ध श्रद्धासे मातृभूमिकी अिज्जतके लिअे तमाम तकलीफें, तमाम कष्ट और

तमाम अपमान वहादुरीसे वरदाश्त किये ? अुस सत्रह वर्षकी प्यारी लडकी वल्लिअम्माके वारेमे आप कौनसी भाषा काममे लेना चाहते है, जो मेरित्सवर्ग जेलमे हाड-पजर वनकर और वुखारकी हालतमे छूटी थी और फिर महीने भरके वाद ही अुसकी शिकार वनकर चल वसी थी ? यह दुर्भाग्य हे कि मुझे और मेरी पत्नीको प्रकाशमे रहकर काम करना पडा है और हम जो काम कर पाये अुसे आपने वेहद वढा-चढा रूप दे दिया। आप जो ताज हमारे सिर पर थोपना चाहते है अुसके सच्चे हकदार वे है।"

अुन्होने आगे कहा "आपने जिन विशेषणोकी हम पर प्रेमपूर्वक किन्तु अधश्रद्धासे वर्षा की है, अुन सवके हकदार वे नौजवान है। अुस सग्राममे केवल हिन्दू ही नही थे, अुसमे मुसलमान, पारसी, अीसाअी तथा भारतके लगभग हर भागके प्रतिनिधि थे। अुन्होने हम सब लोगोके सामने जो खतरा मुह वाये खडा था अुसे देख लिया था और यह भी समझ लिया था कि भारतीयोके नाते अुनका भाग्य क्या होगा, और अुन्होने—केवल अुन्होने पशुवलके मुकावलेमे अपने आत्मवलको खडा किया।

९३. डॉक्टरसे द्वन्द्वयुद्ध

आगाखा महलकी नजरकैदके जमानेमे गाधीजीको मलेरिया वुखार हो गया था। परन्तु दिल्लीके अधिकारियोने वम्बअी सरकारकी यह प्रार्थना स्वीकार नही की कि गाधीजीको कलकत्तेके विख्यात चिकित्सक (और अव वगालके मुख्यमत्री) डॉ० वी० सी० रायके अिलाजमे रख दिया जाय। डॉ० राय अुस समय सयोगवश वम्बअीमे ही थे। वहुत पत्र-व्यवहारके वाद डॉ० रायके लिअे आगाखा महलमे गाधीजीसे मिलनेकी अनुमति प्राप्त कर ली गअी।

डॉ० राय "परन्तु, महात्माजी, आप समझते है मै किसका अिलाज करने आया हू ? मोहनदास क० गाधीका नही, परन्तु अुस व्यक्तिका अिलाज करने आया हू जो मेरी दृष्टिमे ४० करोड आदमियोका प्रतिनिधि हे। कारण, मै अनुभव करता हू कि वह मर गया तो ४० करोड मर जायगे, और वह जीवित रहा तो ४० करोड जीवित रहेगे।"

अिसका कोअी अुत्तर नही मिला । गांधीजीके पास झुक जानेके सिवा कोअी चारा नहीं था। कुछ देर ठहरकर वे बोले "बहुत अच्छा, डॉ० विधान, आपकी जीत हुअी। आप मुझे जो दवा देना चाहे दीजिये । मै ले लूगा । परन्तु मुझे आश्चर्य है कि आपने औषधिके बजाय कानूनका अध्ययन क्यो नही किया । आपमे अितनी विलक्षण कानूनी सूझ है।"

डॉ० रायने गर्वके साथ कहा, "अीश्वरने मुझे डॉक्टर अिसलिअे बनाया है कि वह जानता था कि अेक दिन अैसा आयेगा जब मुझे अुसके सबसे प्रिय पुत्र, हमारे महात्मा गांधीकी चिकित्सा करनेका सौभाग्य प्राप्त होगा।"

"फिर भी आप वकीलकी तरह ही दलील कर रहे है," गांधीजीने कहा।

९४. कजूस बापू

"सेवाग्राम आश्रमके भोजनालयमे अेक तख्ती है जिस पर बापूकी ओरसे यह सूचना दी गअी है 'मुझे आशा है कि सब लोग आश्रमकी सम्पत्तिको स्वय अपनी और गरीबसे गरीब लोगोकी सम्पत्ति समझेगे। नमक भी जरूरतसे ज्यादा नही परोसा जाना चाहिये। पानी भी व्यर्थ खर्च नही करना चाहिये।' मै अिस मितव्ययिताका तभीसे साक्षी रहा हू, जब मै जून १९१९ मे पहले-पहल बम्बअीके मणिभवनमे गांधीजीके साथ हुआ। अुस समय मेरा अेक काम यह था कि गांधीजीके लिखाये या बताये मुताबिक पत्र लिखू। अेक बार अुनके आदेश प्राप्त करनेके बाद मैने पत्र लिखनेका कागज अुठाया। मै पत्र शुरू ही करनेवाला था। परन्तु बापू मेरी गतिविधि ध्यानसे देख रहे थे। अुन्होने तुरन्त मुझे अुलाहना देते हुअे टोका, 'क्या कार्डसे काम नही चलेगा?' और फिर कार्ड ही लिखा गया।

"युद्ध आरम्भ होनेसे पहले भी जब कागज न तो महगा था, न दुर्लभ, बापू केवल अेक तरफ लिखे हुअे कागजको रद्दीमे डालने नही देते थे। अैसे सारे टुकडे अुनके आनेवाले भारी पत्रव्यवहारमे से ध्यान-पूर्वक छाट लिये जाते है। वे अपने लेखोका कच्चा मसौदा बनाने

और दूसरे कामोके लिअे कागजकी पिछली तरफका अुपयोग करते है। वे पत्र लिखनेके अेक कागजकी आधी दर्जन पर्चिया काटकर अुन पर कअी आश्रमवासियोको अुतने ही अलग अलग व्यक्तिगत पत्र लिखते है और अुन सवको अेक ही लिफाफेमे भेज देते है।

"असलमें, वापू न सिर्फ आश्रमवासियोके ही वापू है, किन्तु भारतके करोडो नगे-भूखोके वापू है, दरिद्रनारायणके पुजारी है। वे अन्नका अेक दाना या पानीकी अेक वूद भी वरवाद करना वरदाश्त नही कर सकते।" ये अुद्गार श्री अप्पासाहव पटवर्धनने अुपरोक्त घटनाका वर्णन करते हुअे प्रगट किये है।

९५. अडयारमें गांधीजी

१९१५ मे दक्षिण अफ्रीकासे लौटनेके वाद गाधीजी मद्रासमे स्वर्गीय श्री जी० अे० नटेसनके मेहमान होकर रहे थे। अुन्होने अपने सस्मरणोमे अुन दिनोकी अेक घटनाकी याद दिलाअी है। अुनके मद्रासके निवास-कालमे गाधीजीको डॉ० अेनी वेसेटने अपने मुख्य केन्द्र अडयार आनेका निमत्रण दिया था। जव गाधीजी अडयार पहुचे तो थियॉसॉफीकल सोसायटीकी सुन्दर भूमि पर अुनका स्वागत किया गया और शालीन तथा मनोहर शिष्टाचारके साथ अुनकी आव-भगत की गअी। गाधीजीको अुस पूजनीया महिलाके प्रति, जिसने अिस देशकी सेवामे अपना जीवन पूरी तरह समर्पित कर दिया था, अत्यत आदर और भक्तिभाव था। डॉ० वेसेण्टने अिस विशिष्ट अतिथिको सस्थाके शानदार सभा-भवन और खूब सजे हुअे कमरोमे घुमाया और फिर अुन्हे अेक सादेसे छप्परके पास ले गयी, जिसके पडोसमे 'अछूतो' की पाठशाला थी। डॉ० वेसेण्ट अेक प्रकारसे पचमोकी शिक्षाके लिअे सुविधाअे देनेके मामलेमे अग्रणी थी। परन्तु गाधीजीके लिअे अेक तरहके लोगोके लिअे महल ओर दूसरोके लिअे घटिया झोपडियोके वीच दिखनेवाला अन्तर असह्य था।

अुन्हे यह अन्तर अितना चुभ गया कि अुन्होने रातको वहा ठहरनेका कार्यक्रम वदल देनेका निश्चय किया और जॉर्ज टाअुनमें अपने डेरे पर लौट जानेका आग्रह किया। श्री नटेसन कहते है कि मैंने गाधीजीकी

अिस बात पर अपना विरोध प्रगट किया और बताया कि अिससे डॉ० बेसेण्टको गहरी पीड़ा होगी और वे मुझसे भी बहुत नाराज होंगी। लेकिन गांधीजी अपने निश्चय पर दृढ रहे। श्री नटेसन कहते हैं कि बहुत रात गये गांधीजीने अडयारके अुन भवनोंसे विदा ली।

९६. अिच्छा और आचरण

जब गांधीजी अपने सिंधके दौरेमें कोटरी पहुंचे तो वहांकी कांग्रेसके मंत्रीने अुस अवसर पर अुन्हें २०० रुपयेकी थैली भेट करते हुअे अिस छोटी रकमके लिअे नगरके लोगोंकी तरफसे क्षमा मांगी और यह आशा प्रगट की कि गांधीजी रकमकी तरफ न देखकर अुसके पीछे जो भावना है अुसे देखेंगे और आचरणकी जगह अिच्छाको स्वीकार कर लेंगे। गांधीजीने अिसकी आलोचना करते हुअे कहा कि "आचरणकी जगह अिच्छाको तभी माना जा सकता है जब आचरणमें भरसक अधिकसे अधिक कुर्बानी दिखाअी दे। कण्डियाराके जिन ६२ विद्यार्थियोंने ६५ रुपये भेट किये वे अैसी दलील दे सकते हैं, मगर आप लोगोंने अपनी दानशक्तिके हिसाबसे कुछ भी नहीं दिया है। अिसलिअे मैं आपकी दलीलको स्वीकार नहीं कर सकता और आशा रखता हूं कि अपना चन्दा बढ़ाकर आप अब भी अपनी लाज रखेंगे।"

अिस गंभीर अपीलका श्रोताओं पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा, क्योंकि अुन्होंने अुसके जवाबमें तुरन्त अपनी थैली २०० रुपयेसे बढ़ाकर ५०० रुपयेकी कर दी।

९७. नामशूद्रकी श्रद्धा

१९२५ में गांधीजीके पूर्व बंगालके दौरेके दिनोंमें ढाकामें लगभग ७० वर्षके अेक बूढ़े नामशूद्र ('अछूत') को अुनके सामने लाया गया। वह गलेमें गांधीजीका चित्र पहने हुअे था और ज्यों ही अुसने गांधीजीको देखा, वह अुनके पैरोंमें गिर गया और खूब रोते हुअे बार बार अपनी पुरानी लकवेकी बीमारीसे अच्छा हो जानेके लिअे अुन्हें धन्यवाद देता रहा। अुसने कहा कि "जब और सब अुपाय बेकार हो गये तो मैंने गांधीजीका

नाम लेना शुरू कर दिया और अेक दिन देखा कि मेरा सारा रोग जाता रहा।"

गाधीजीने कहा, "मैने नही, अीश्वरने ही तुम्हे अच्छा किया है।" परन्तु अुसे कैसे विश्वास होता? अुसके लिअे तो गाधीजीके चित्रके रूपमे ही अीश्वरने दर्शन दिये थे। अुसके साथ वहस करना व्यर्थ था। गाधीजीने कहा, "मगर भाअी मेरे, तुम अपने गलेसे वह चित्र तो कृपा करके हटा दो।" अुसने वैसा ही किया और अीश्वरका नाम लेता हुआ चुपचाप चला गया। शायद अुसे यकीन हो गया कि जिस आदमीने अुसको अच्छा करनेकी जिम्मेदारी लेनेसे अिनकार कर दिया, वह अवश्य ही 'गाधी महाराज' नही हो सकते, जिन्होने अुसे अच्छा किया था।

९८. 'दक्षिण अफ्रीकाका विचित्र पुरुष'

स्वर्गीय श्रीमती सरोजिनी नायडूने महात्माजीके साथ अपनी पहली मुलाकातका वर्णन अिस तरह किया है

प्रथम महायुद्धके पहलेकी वात है। हमने यह अफवाह सुनी कि दक्षिण अफ्रीकासे अेक अजीव आदमी अिंग्लैण्ड आ रहा है। अुसके आनेके वारेमे लोग वडी दिलचस्पी ले रहे थे। अुसका नाम गाधी था।

लदनके अेक वहुत मामूली वेरौनक मुहल्लेमे मै अेक मकानकी सीढिया चढकर अेक खुले द्वारकी देहली पर खडी हुअी, तो देखती हू कि अेक आदमी फर्श पर काले कम्वल पर बैठा है, अुसके चारो ओर अजीव-सी छोटी छोटी पेटिया रखी है और वह लकडीके कटोरेमे से लकडीके चम्मचसे किसी अजीव-सी चीजके टुकडे निकाल निकाल कर खा रहा है।

अुसने आखे अुठाकर देखा और कहा "अच्छा आप है?" मैने कहा, "जी हा।" अुसने पूछा, "खाना खायगी?" मैने कहा, "हरगिज नही, मुझे तो यह भयकर दिखाअी देता है।" अिस प्रकार हसते हुअे हमारी मित्रता हो गअी, जो अितने सारे वर्षो तक वनी रही, वढती गअी और गहरी होती गअी है।

९९. वचन-पालन

१९२१ मे अपने सिन्धके दौरेमें गाधीजीने नौशहरो और पडोसी गावोंके लोगोको वचन दिया था कि जब मै हैदराबाद जाते हुअे पडीडन रेलवे स्टेशनसे गुजरूगा तब आप लोगोसे मिलूगा। परन्तु जब बहुत रात गये गाडी वहा पहुची तो अुन्हें यह खयाल नही रहा कि यह वही जगह है जहा अुन्हे अिन भले लोगोसे मिलना था। वे अितने थक गये थे कि स्वय पूछताछ न कर सके और श्री जयरामदास दौलतराम भी, जो अुनके साथ अुसी डिब्बेमे थे, अुनसे यह कहनेकी हिम्मत नही कर सके कि ये वही लोग है जिनसे मिलनेका अुन्होने वादा किया था। बादमें जब गाधीजीको अपनी भूलका पता लगा तो अुन्होने नौशहरोके लोगोको तार दिया और अुसमें अपनी गलती पर अफसोस जाहिर किया और वचन दिया कि अगली बार जब सिन्ध आअूगा तब आपसे मिले बिना नही रहूगा। आठ वर्ष बीत जाने पर भी अुन्हे अपना वादा याद रहा। (१९२९ की अपनी मुलाकातके समय) गाधीजीने नौशहरोकी अेक सार्वजनिक सभामे अिस घटनाका भावपूर्ण अुल्लेख किया और ओीश्वरको धन्यवाद दिया कि अुसने अुन्हे अितने दिन जिन्दा रखकर अपना वचन पालन करनेमे समर्थ बनाया।

१००. गुप्तचरोको 'सप्रेम'

दिसम्बर १९३१ मे लदनकी गोलमेज परिषदमे भारत वापिस आते समय ब्रिंडीसी छोडनेके पहले स्कॉटलैण्ड यार्डके जिन दो हट्टे-कट्टे गुप्तचरोने गाधीजीके तीन माहके यूरोपीय निवास-कालमें दिन-रात अुनकी रक्षा की थी, अुन्हे गाधीजीने 'सप्रेम' अपने हस्ताक्षर-युक्त चित्र भेट किये थे। यह अुनकी अिस यात्राका अन्तिम कार्य था। अिन गुप्तचरोके नाम श्री विलियम अिवास और श्री विलियम जे० रोजर्स थे और अुन्हें भारत-मत्री श्री सैम्युअल होरने शिष्टताके तौर पर गाधीजीके साथ भेजा था। क्योकि महात्माजीने यह अिच्छा प्रगट की थी कि कोओी अुन्हें शत्रुओसे नही, बल्कि मित्रोसे बचाये। ये मित्र, जैसा कि अुन्होने कहा था,

अुन्हे कृपाके भारसे मार डालेंगे। दोनो गुप्तचरोको गाधीजीसे वडी ममता हो गअी थी। गाधीजीने जब अुन्हे हस्ताक्षर करके अपने चित्र दिये, तो अुनके अिस कार्यसे अुन पर गहरा असर हुआ, और जब अुन्होने यह वचन दिया कि भारतसे मैं आप दोनोके लिअे योग्य लेख खुदवाकर अेक अेक वढियासे वढिया अग्रेजी हाथ-घडी भेजूगा, तब तो वे गद्‌गद ही हो गये।

१०१. पाटौदीका किस्सा

जव नवाव पाटौदी आखिरी वार गाधीजीको प्रणाम करने गये, तो अुनके कथनानुसार "गाधीजीने सामयिक समस्याओकी चर्चामे परिवर्तन करनेकी अिच्छासे अचानक मजाक करते हुअे कहा कि 'मैंने आपसे अेक विकेटका क्रिकेट मैच खेलनेका निश्चय कर लिया है। आप मेरी चुनौती स्वीकार करेगे?' मैंने अुत्तर दिया कि 'स्वीकार तो कर लूगा, मगर अिस शर्त पर कि जब मैच खतम हो जायगा तब आप मुझे अपनेको राजनीतिमे चुनौती देने देगे।' मेरा प्रस्ताव मजूर हो जाने पर मैंने गभीर मुद्रा वनाकर कहा कि 'जहा मुझे यह भरोसा है कि आप मुझे क्रिकेटमे हरा देगे, वहा मुझे यह भी भरोसा हे कि मै आपको राज-नीतिमे हरा दूगा।' गाधीजी प्रसन्न बालककी तरह हसे और प्रेमसे मेरी पीठ पर थप लगा कर (हिन्दीमे) वोले, 'नवाव साहव, आपने तो अभीसे मुझे वाअुल्ड कर दिया।' कैसे वडे आदमी थे वे! अुनके जैसा कोअी आदमी हमे फिर देखनेको नही मिलेगा।"

१०२. अखबारवालोंको मूक भाषण

जून १९४४ के मध्यमे वम्वअीके पास जुहूमे अखवारवालोकी अेक मडली गाधीजीकी सेवामे अुपस्थित हुअी। वहा वे आगाखा महलकी नजर-वन्दीमे छूटनेके थोडे ही दिन वाद स्वास्थ्यलाभ करनेके लिअे पूनासे आये हुअे थे। परन्तु चूकि गाधीजीका मौनदिन था, अिसलिअे वे अुनसे वोले नही। अिससे पत्रकारोको गहरी निराशा हुअी। तव अुनमे से अेकने कागजके अेक पर्चे पर नीचे लिखे वाक्य लिखकर पर्चा गाधीजीको भेट किया

"हमे अिस मूक मुलाकातमे सन्तोष नही है। हम अुस दिनकी अुत्सुकतासे प्रतीक्षा कर रहे है जब आप फिरसे बिलकुल तन्दुरुस्त होकर हमसे पहलेकी तरह बाते करेंगे। हमी नही, सारा भारत और ससारका खासा हिस्सा आपको सुननेका अिन्तजार कर रहा है।—प्रेम।"

अेक भी शब्द न कहकर गाधीजीने अुस पर्चेके नीचे यह लिख कर अखबारवालोके प्रवक्ताको लौटा दिया

"आमीन! अीश्वर हमारी अैसी सहायता करे। करार यह है कि दोनो ओरसे मौन रखा जाय। अिस मौनमे आप जो चाहे समझ सकते है।"

१०३. 'मजेदार झूठ'

सरदार वल्लभभाअीने, जब वे गाधीजीके साथ सेवाग्राममे ठहरे हुअे थे, अेक दिन अुनसे पूछा, "अखबारोका कहना है कि लॉर्ड लिनलियगोने अपने भाषणकी अेक प्रति आपके पास पहले ही भेज दी थी। यह सुझावोके खातिर किया था या फेरबदलके लिअे?"

"यह अैसी मजेदार झूठ है जिसे न सुझावोकी जरूरत है, न फेरबदलकी। यह तो अेकदम रद करनेके काबिल है।"

सरदारने हसकर कहा, "परन्तु आपको सभी देवताओको प्रसन्न करनेकी कला मालूम है। जिस लेखमे आपने वाअिसरॉयके भाषणकी तारीफमे अेक-दो शब्द कहे है, अुसीमे आपने जयप्रकाश और समाजवादियोकी प्रशसामे भी कुछ कहा है।"

गाधीजीने हसीमे शरीक होकर कहा, "हा, हा। मेरी माने यही तो सिखाया था। वह मुझे हवेली (विष्णु-मदिर) मे जानेको भी कहती थी और शिवालय जानेको भी। और आपको यह सुनकर मजा आयगा कि जब हमारा ब्याह हुआ तो हमे पूजा करनेको न केवल सारे हिन्दू मदिरोमे ही बल्कि अेक फकीरके पूजास्थान पर भी ले जाया गया था।"

१०४. नकलकी कलामें नापास

जब गाधीजी हाअीस्कूलके प्रथम वर्षमे थे तब परीक्षाके समय अेक अैसी घटना हुअी जो अुल्लेखनीय है। शिक्षा-विभागके निरीक्षक मि० जाअिल्स निरीक्षणके लिअे आये हुअे थे। अुन्होने अंग्रेजी हिज्जोकी जाच करनेके लिअे लडकोको पाच शब्द लिखवाये थे। अिन शब्दोमे अेक 'Kettle' था।

मोहनदासने अुसके हिज्जे गलत किये थे। शिक्षकने अुन्हे अपने जूतेकी नोकसे बतानेकी कोशिश की, परन्तु अुनकी समझमे कुछ न आया। यह अुनकी समझमे ही नही आ सकता था कि शिक्षककी यह अिच्छा है कि वे अपने पडोसी विद्यार्थीकी स्लेटसे नकल कर ले, क्योकि वे समझते थे कि शिक्षक तो वहा अुन्हे नकल करनेसे रोकनेके लिअे निगरानी कर रहे हैं।

नतीजा यह हुआ कि अुनके सिवा सब लडकोके प्रत्येक शब्दके हिज्जे सही पाये गये। केवल वे ही बुद्धू ठहरे। शिक्षकने बादमे अुन्हे यह बुद्धूपन समझानेकी कोशिश की, लेकिन बात अुनके गले नही अुतरी। वे 'नकल करने' की कला कभी नही सीख सके।

१०५. दुःखदायी दांत

१९०६ के अन्तमे जब गाधीजी लदनमे ठहरे हुअे थे और ब्रिटिश राजपुरुषोके सामने दक्षिण अफ्रीकाके अपने देशबान्धवोकी वकालत कर रहे थे, तब अुनके अेक दातमे दर्द अुठ खडा हुआ। वे अपनी दक्षिण अफ्रीकी समितिके काममे व्यस्त थे तभी अुनके शाकाहारी मित्र डॉ० जोशिया ओल्ड-फील्ड अुनसे मिलने आये। गाधीजीने समितिसे बाहर आकर डॉक्टरसे पूछा, "मुझे अेक दात परेशान कर रहा है, क्या आप अुसे निकाल सकते है?" अिसके बाद जो हुआ वह स्वय डॉक्टरकी जबानी ही सुन लेना बेहतर होगा

"मैने अुनके मुहकी जाच की तो मालूम हुआ कि अेक जबडे और अेक दातमे बहुत दर्द है और अुसे निकालना कठिन है।

मैने कहा, 'किसी दातके डॉक्टरके पास जाअिये।'

अुन्होंने अुत्तर दिया, 'मेरे पास समय नहीं है। अगर आप अभी और यहीं अिसे निकाल दें तो मैं बडा अहसान मानूंगा, क्योंकि अिससे मेरी अेकाग्रताकी शक्तिमें बाधा पडती है।'

मैं बाहर गया, चिमटी अुधार ली और लौट आया। अुन्होंने समितिसे क्षणभरके लिअे क्षमा मांग ली और सोनेके कमरेमें आकर जरा भी बड-बड या आह तक किये बिना अेक अैसे कठिन दांतका निकलवाना बरदाश्त कर लिया, जिससे अधिक कठिन दांत मैंने कभी नहीं निकाला। मैं खुद तो बेहोशीकी दवा सूंघे बिना अुसे हरगिज न निकलवाता। वे कुछ मिनट चुपचाप बैठे रहे, मुझे धीमी आवाजमें हृदयसे धन्यवाद दिया और समितिमें वापस चले गये। "

१०६. सोला टोप

धूपसे बचनेके अुपायके रूपमें सोला टोपके प्रति गांधीजीका प्रबल पक्षपात था। अुनका खयाल था कि यह टोप गरम देशोंको पश्चिमी सभ्यताकी अेक वास्तविक देन है। अुन्होंने जिस विषय पर अपने विचारोंकी घोषणा अिस प्रकार की

"मेरा संकीर्ण राष्ट्रवाद टोपके विरुद्ध विद्रोह करता है, परन्तु मेरा गुप्त विश्ववाद सोला टोपको यूरोपकी थोडीसी देनोंमें से अेक मानता है। टोपके विरुद्ध जबरदस्त राष्ट्रीय घृणा न हो तो मैं सोला टोपको लोकप्रिय बनानेके लिअे किसी संघका अध्यक्ष बननेको तैयार हो जाअूं। मेरी रायमें शिक्षित भारतने (यहांके जलवायुमें) अनावश्यक, अस्वास्थ्यकर और भद्दी पतलूनको अपना कर और सोला टोपको अपनानेमें आम तौर पर संकोच करके गलती की है। परन्तु मैं जानता हूं कि राष्ट्रीय रुचि-अरुचियोंका निर्णय बुद्धिसे नहीं होता। स्कॉच हाअीलैण्डर यह जोखिम तो अुठा लेगा कि अुसके घाघरेके कारण दुश्मन अुसे पहचान ले और आसानीसे अपना शिकार बना ले, मगर अुस भद्दे घाघरेको छोडनेके लिअे वह तैयार नहीं होगा। मुझे आशा नहीं कि भारतवर्ष सोला टोपको आसानीसे अपनायेगा। वह सचमुच अैसा छाता है जिसे आसानीसे कहीं भी ले जा सकते हैं और जो सिरको तो ढक लेता है, मगर अुसे ले जानेमें अेक हाथको

रोकनेकी जरूरत नही होती। कलकत्तेका पुलिसवाला तेज धूपसे वचनेके लिअे अपनी कमरपेटीमे छाता रखकर अपने यूरोपियन साथीके मुकावले दोहरा घाटेमे रहता है। यहा मै पाठकोका ध्यान टोपके अेक देशी और कारगर सस्करणकी तरफ दिला दू, जिसे मलवारके गरीव किसान आम तौर पर पहनते हे। यह विना दस्तेका छाता है जो पत्तोका वना होता है। और अुसके वीचमे छालका अेक खाचा होता है जो सिर पर पूरा वैठ जाता है। वह सस्ता है, पूरी तरह काम देता है और टोपका भाअीवन्द भी नही है, फिर भी लगभग अुतना ही अुपयोगी है।"

१०७. सही जीवनका पाठ

गाधीजीने सावरमती आश्रमकी अेक प्रार्थना-सभामे कहा, "आज मुझे आपको अेक अैसी वेवकूफीका अुदाहरण देना है, जिसमे हम तीन व्यक्ति वरावरके हिस्सेदार है। या यो कहना चाहिये कि मेरा हिस्सा सवसे वडा हे, क्योकि आश्रमके मुखियाकी हैसियतसे मुझसे आप सवसे कही अधिक जागरूक रहनेकी आशा रखी जाती है।"

वहुतोको आश्चर्य हुआ कि अैसी क्या वात हो सकती है। यहा गाधीजीने वहुत सजीव और अपने रिवाजके अनुसार अतिशयोक्तिपूर्ण ढगसे अपनी भूलका व्योरेवार वर्णन किया। आश्रममे गाधीजीके कमरेमे नदीके सामनेवाली दीवार और छतके वीच जालीका अुजालदान था। वह हवा आनेके लिअे रखा गया था, मगर अुसमे होकर सूर्यकी किरणे सीधी गाधीजीके चेहरे पर आती थी। अिसलिअे अुन्होने अेक आश्रमवासीसे वहा कोअी परदे जैसी चीज लगानेको कह दिया। अुसने किसी औरसे कहा और वह तुरन्त ही अेक तख्तेके साथ वढअीको ले आया। अुसने कुदरती तौर पर सोचा कि परदेसे किवाड ज्यादा अच्छा रहेगा। अुसने गाधीजीसे पूछा, "आपको यह पसन्द है?" गाधीजी सहमत हो गये। परन्तु वढअीके काम शुरू करनेके थोडी ही देर वाद अुन्हे खयाल आया कि मैने ठीक नही किया। अिसलिअे वे अपने विचारको शब्दोमे व्यक्त करने लगे। अुन्होने पहले तो अुन भाअियोसे कहा जो अिस भूलमे शामिल थे और फिर वहनोसे कहा जिनकी सभा वे रोज सुवह किया करते थे और अन्तमे

प्रार्थना-सभाको बताया "हमने दरिद्रताका व्रत लिया है। हम अैसा नही कर सकते। मुझे यह सूझना चाहिये था कि अेक कपडेका टुकडा वही काम देगा जो यह किवाड, जिस पर दो रुपये और बढअीकी तीन घटेकी मेहनत खर्च होगी। पुट्ठे या कपडेके टुकडे पर कुछ भी खर्च न होता और दो कीलोंसे कोअी भी अुसे लगा सकता था। अिन छोटी छोटी बातोमे ही हमारे सिद्धान्तोकी परीक्षा होती है। जिनकी वृत्ति गरीबीकी है अुन्हीको स्वर्गका राज्य मिलता है। अिसलिअे हमें हर कदम पर अपनी आवश्यकताअे और जरूरते गरीबोकी दृष्टिसे घटाना सीखना चाहिये और सचमुच गरीबीकी वृत्ति धारण करनेकी कोशिश करनी चाहिये।"

१०८. बनियोको फटकार

फरवरी १९२७ मे जब गाधीजी अपनी महाराष्ट्रकी खादीयात्राके सिलसिलेमे धुलिया पहुचे, तो स्थानीय व्यापारियोने, जो ज्यादातर बनिये थे, अुन्हे अपना अेक बिलकुल अलग मानपत्र और थैली भेट करनेका आग्रह किया और मानपत्रमे यह दावा किया कि गाधीजी स्वय वैश्यवर्गके होनेके कारण अुन्हीके आदमी है। परन्तु अुन्होने अपने 'जातिभाअी' का सही अदाजा नहीं लगाया था। गाधीजीने अपने अुत्तरमे अुन्हे जो कुछ कहा वह यह था

"भारतको ब्राह्मणो, क्षत्रियो या शूद्रोने नही गवाया है। अुसे वैश्योने गवाया है और वैश्य ही अुसे फिरसे प्राप्त कर सकते है। भारतीय अितिहास अैसे बनियोके अुदाहरणोसे भरा है, जिन्होने भारतको हानि पहुचा कर अग्रेज व्यापारियोकी सहायता और सेवा की। जो व्यापारी यहा व्यापारकी तलाशमे आये थे, वे अपने व्यापारकी रक्षा करनेके लिअे क्षत्रिय बन गये और व्यापारके आधार पर अपना राज्य कायम रखनेको ब्राह्मण बन गये। हमारा वर्णाश्रम-धर्म यह नही कहता कि बनिया क्षत्रिय बनकर अपनी मा-बहनोकी अिज्जतके लिअे लड नही सकता और न यह कहता है कि बनिया ब्राह्मणकी भाति ज्ञान प्राप्त नही कर सकता या शूद्रकी तरह सेवा नही कर सकता। अग्रेजोमे ये सब गुण अिकट्ठे हो गये और

अुनकी अिस करामातसे चकित होकर हम अपना धर्म भूल गये, हम कायर बन गये, हमने बनियेका असली काम कृषि, गोरक्षा और वाणिज्य भुला दिया और मातृभूमिके प्रति हम विश्वासघाती बन गये। आप अब फिरसे सच्चे वणिक बनकर सारा राष्ट्रीय व्यापार पुन अपने हाथमे करके स्थितिको सुधार सकते है। मै चाहता हू कि हम भगवद्गीतामे वर्णित आदर्श वैश्य अर्थात् अैसे वैश्य बन जाय, जिनका स्वाभाविक धधा अपने देशके लिअे गोरक्षा, खेती और व्यवसाय करना है।"

१०९. अेक अखबारी गप

अेक प्रसिद्ध अग्रेज पत्रकार जॉर्ज स्लोकॉम्बेने १९३० मे गाधीजी द्वारा छेडे गये नमक-सत्याग्रह आन्दोलनकी खबरे योग्यतापूर्वक भेज कर निष्पक्ष जनताकी नजरोमे अच्छा नाम कमाया था। परन्तु अुन्होने गाधीजीके बारेमे अेक असाधारण मनगढन्त किस्सा भी फैलाया। जिसे अुन्होने 'अुत्तम आधार' जाहिर किया, अुसकी बिना पर अुन्होने अेक कथित मुलाकातका वर्णन प्रकाशित किया, जिसमे कहा गया कि कलकत्तेके सरकारी भवनमे महात्माजी और ब्रिटिश युवराज (आजकलके विंड-सरके ड्यूक) मिले और गाधीजीने 'भारतके भावी सम्राट्' के चरणोमे साष्टाग प्रणाम करके अुनसे भारतवासियोके प्रति अुदारताका व्यवहार करनेकी याचना की।

अिस प्रकाशनका अुत्तर गाधीजीकी तरफसे अेक पत्र द्वारा भेजा गया, जिसमे अुन्होने और बातोके साथ साथ यह भी कहा था "मि० स्लोकॉम्बे, मुझे आपसे आशा थी कि आप ज्यादा बुद्धिमानीका परिचय देगे। अिस किस्सेमे तो आपकी कल्पना-शक्तिकी भी अच्छी साख नही जमती। मै गरीबसे गरीब भगीके, भारतके अत्यत दरिद्र अछूतके आगे अुसे सदियो तक कुचलनेमे शरीक होनेके कारण घुटने टेक दूगा, अुसके पैरोकी धूल भी सिर पर धारण कर लूगा। परन्तु मै युवराज तो क्या, सम्राट्के सामने भी साष्टाग प्रणाम नही करूगा। अिसका सीधा-सादा कारण यह है कि वे अेक अभिमानी ताकतके प्रतिनिधि है। मुझे हाथीसे कुचला जाना मजूर हो सकता है, मगर मै अुसके आगे साष्टाग

नमस्कार नही करूगा। हा, चीटीको अनजाने कुचल देने पर मै अुसके सामने नत हो जाअूगा।"

११०. माताको दिया हुआ वचन

मैट्रिक पास करनेके वाद जब गाधीजी वैरिस्टरीका अध्ययन करनेके लिअे अिग्लैण्ड जानेको जहाजमे सवार हुअे, तो अेक अग्रेज सहयात्रीने, जो अुनसे अुम्रमे बडा था, अुनकी ओर आकृष्ट होकर अुनसे वातचीत शुरू की। गाधीजी अपनी 'आत्मकथा' में कहते है, "अुसने मुझसे पूछा कि मैं क्या खाता हू, क्या काम करता हू, कहा जा रहा हू, शरमीला क्यो हू, अित्यादि। अुसने मुझे खाना खानेके लिअे मेज पर आनेकी भी सलाह दी। माससे परहेज करनेके मेरे आग्रह पर वह हसा और जब हम लाल समुद्रमे थे तब मित्रभावसे बोला 'यहा तक तो यह सब ठीक था, लेकिन विस्केकी खाडीमे आपको अपना निर्णय बदलना पडेगा। और अिग्लैण्डमे तो अितनी ठड पडती है कि वहा मासके विना जिन्दा रहना नामुमकिन है।'

"मैंने कहा, 'लेकिन मैंने सुना है कि लोग वहा मास खाये विना जी सकते है।'

"वह बोला, 'विश्वास रखिये, यह बिलकुल झूठ है। जहा तक मैं जानता हू, वहा कोअी भी मासाहार किये विना जिन्दा नही रहता। आप देखिये मैं शराब पीता हू, मगर आपसे पीनेको नही कहता। परन्तु मेरा यह खयाल जरूर है कि आपको मास खाना चाहिये, क्योंकि अिसके विना आप वहा जी नही सकते।'

"'आपकी कृपापूर्ण सलाहके लिअे मैं आपका कृतज्ञ हू, परन्तु मैंने अपनी माको मास न छूनेका शपथपूर्वक वचन दिया है, अिसलिअे अुसे खानेका मैं खयाल भी नही कर सकता। अगर अुसके विना काम चलना असभव होगा तो मैं भारत लौट जाअूगा, मगर वहा रहनेके लिअे मास नही खाअूगा।'"

गाधीजी यह भी कहते है कि जब अुन्होने विस्केकी खाडीमें प्रवेश किया तब अुन्हे मास या मदिराकी जरूरत महसूस नही हुअी।

१११. अेक अंग्रेज नर्सका अुलाहना

१९२४ मे यरवडासे छूटकर आनेके वाद गाधीजीने अपने जेल-जीवनका वर्णन करते हुअे वाहरी जगतको कैदखानेकी भीतरी घटनाओके वारेमे कअी दिलचस्प और अज्ञात वाते वताअी। अुन्होने लिखा

"मेरी अग्रेज नर्स वडी दक्ष थी। अुसे मै 'जालिम' कहता था, क्योकि वह विविध प्रेमपूर्ण तरीकोसे यह आग्रह करती थी कि मैं जितनी खुराक और नीद लेता था अुससे अधिक लू। मै हाअुस सर्जन और अुस नर्सकी देखरखमे खानगी वार्डमे सही-सलामत पहुचा दिया गया अुसके वाद अुसने होठो पर मुस्कुराहट और आखोमे शरारतके साथ मृदुलतासे कहा "जव मैं आप पर अपने छातेसे छाया किये हुअे थी तव यह सोचकर मुझे मुस्कुराहट आये विना नही रही कि आपके जैसे प्रत्येक विटिश वस्तुका भयकर वहिष्कार करनेवाले आदमीके प्राण अेक व्रिटिश सर्जनने व्रिटिश औजारोकी मददसे और व्रिटिश दवाअिया देकर तथा अेक व्रिटिश नर्सने अपनी सेवाओ द्वारा वचाये है। क्या आप जानते है कि जव हम आपको यहा लाये तव आप पर छाया करनेवाला छाता व्रिटेनका वना हुआ था?"

कोमल हृदयवाली नर्सने जव अपना अतिम विजय-गर्भित वाक्य पूरा किया, तव वह अैसी आशा रख रही थी कि मै अुसके प्रेमपूर्ण अुपदेशके आगे हथियार डाल दूगा। परन्तु सौभाग्यसे मैने अुसके आत्म-विश्वासमे यह कहकर गडवड पैदा कर दी कि "आप लोग स्थितिका सही ज्ञान प्राप्त करना कव शुरू करेगे? क्या आपको मालूम है कि मै किसी भी चीजका वहिष्कार अिसलिअे नही करता कि वह व्रिटिश है? मै केवल विदेशी वस्त्रमात्रका वहिष्कार करता हू, क्योकि भारतमे विलायती कपडा लाकर भर देनेसे मेरे देशके लाखो आदमियोकी स्थिति दरिद्र हो गअी है।"

मै नर्समे खादी-आन्दोलनके प्रति भी दिलचस्पी पैदा कर शका। कदाचित् वह अिस आन्दोलनसे सहानुभूति रखने लगी।"

११२. 'मेरे लिअे प्रार्थना करो'

फरवरी १९२४ मे यरवडा जेलमे छूट कर आनेके वाद जव गाधीजी अस्पतालमे स्वास्थ्यलाभ कर रहे थे, तव वहा हमेशा आनेवालोमे अेक वूढा सेवा-निवृत्त अग्रेज सैनिक भी था। वह हर दूसरे दिन फूलोका गुलदस्ना लेकर आता और अवाधित रूपमे वापूके कमरेमे चला जाता। अुसे रोकना सर्वथा असभव था। वह वापूके पास अधीरकी तरह दौडा जाता, अुनसे हाथ मिलाता, और कुछ क्षणोमे हर्ष और अुत्साहका सन्देश देता और चला जाता। "खुश रहिये, मे देखता हू कि आप कलसे वहुत अच्छे है। मुझे मालूम है आप अवश्य अच्छे हो जायगे। आपकी अुम्र क्या है? पचपन साल। अरे, यह तो कुछ भी नही। आप जानते है मे ८२ वर्षका हू। आप अच्छे हो जाअिये, अवश्य हो जाअिये।"

अेक दिन वह ठहर गया और अुसने पूछा, "मि० गाधी, मै आपकी कुछ सेवा कर सकता हू?"

वापूने कहा, "नही, मेरे लिअे प्रार्थना कीजिये।"

"सो तो करूगा ही। परन्तु वताअिये मै आपकी क्या सेवा कर सकता हू? जरूर वताअिये। मुझे आप अपना भाअी समझिये।"

वापूने मुस्कुराकर अुत्तर दिया, "विश्वास रखिये, मेरे मित्रोमें कअी अग्रेज है जिन्हे मै सगे भाअीसे भी अधिक समझता हू।"

अुस आदमी पर अिसका गहरा असर हुआ और वह गाधीजीको यह विश्वास दिलाकर चला गया कि वह दिनमे तीन वार प्रार्थना करता है कि भगवान गाधीजीको अुसके जैसी अुम्र दे। अुसने यह भी कहा कि वहुतसे अग्रेज अुनके लिअे प्रार्थना करते है और कअी अफसर अुनका कुशल-क्षेम पूछते रहते है।

११३. अविस्मरणीय स्मृतियां

मि० हरमन कैलनवैक कोअी २३ वर्षके वियोगके वाद गाधीजीसे मअी १९३७ मे मिलने आये। अुन्होने दक्षिण अफ्रीकामे गाधीजीके साथकी कुछ अविस्मरणीय स्मृतियोका वर्णन करते हुअे श्री महादेव देसाअीको वताया कि अेक वार हमारी सैरके समय भयकर तूफान आया। "मूसलाधार पानी गिर रहा था और विजली और तूफानके मारे दूसरा कोअी शब्द सुनाअी नही देता था। जव हम अेक सडकको पार कर रहे थे, तो अेक ट्रामगाडी हम दोनोको लगभग छूती हुअी सपाटेसे निकल गयी। अुस दिन केवल सदभाग्य ही था कि हम मारे नही गये। अुस अवसर पर वापूने कहा, 'यह मौत शानदार होती। मरनेका वक्त वही था, क्योकि तव हम दोनो अपने आदर्शोके अनुसार जीनेका जीतोड प्रयत्न कर रहे थे। और प्रयत्न करते करते मरनेसे अधिक शानकी वात और क्या हो सकती है?' यह अैसी चीज है जिसे मै कभी नही भूल सकता। मुझे अव भी दिखाअी देता है कि वह ट्रामगाडी हमारे पाससे गुजर रही है और हम अुससे टकरा कर गिरनेसे वाल-वाल वच गये है। अुन वार्तालापोमे ही मैने यह निश्चय किया था कि अगर कोअी आदमी अैसा है जिसके लिअे मै प्राण तक निछावर कर सकता हू तो वह गाधी है। मगर मै यह भी स्वीकार कर लेता हू कि मुझमे और किसीके खातिर प्राण देनेका साहस नही है।"

मि० कैलनवैकको गाधीजीके साथके जीवनकी अेक और भी असाधारण घटना याद थी। १९१४ मे जव वे दोनो जहाज द्वारा अिग्लैण्डकी यात्रा कर रहे थे, तव गाधीजीको पता चला कि मि० कैलनवैकके पास दो कीमती दूरवीन है। गाधीजी जानते थे कि अुनके मित्रको दूरवीनका शौक है, परन्तु दोनो वहुत समयसे मौजशौक छोड देने और सादा जीवन व्यतीत करनेकी प्रतिज्ञा ले चुके थे। मि० कैलनवैकने वताया कि गाधीजीको जव यह मालूम हुआ कि वे कीमती दूरवीनें अुनकी अनुमतिके विना खरीदी गअी है तो अुन्हे वहुत दुःख हुआ। मि० कैलनवैकने यह भी वताया कि "अुन्होने मुझसे दूरवीन समुद्रमे फेंक देनेको कहा। मैने कहा कि 'मेरा जी नही मानता। आप अिनका

जो जीमे आये कर सकते है।' अुन्होने जरा भी हिचकिचाये विना दोनो दूरवीने समुद्रमे फेक दी।"

११४. बापूकी क्षमा-याचना

श्री राजगोपालाचार्य और श्री शकरलाल वेकर गाधीजीसे यह चर्चा कर रहे थे कि २१ दिनका आत्म-शुद्धिवाला अुपवास (जो ८ मअी १९३३ को प्रारम्भ होनेवाला था) शुरु होनेके पहले डॉक्टरोसे अुनकी परीक्षा करा ली जाय। गाधीजीने कहा "मै किसी डॉक्टरी परीक्षाके लिअे रजामद नही हो सकता, क्योकि अुसका मतलव यह होगा कि मुझमें श्रद्धाका अभाव है।"

राजाजीने कहा, "तव तो आप कोअी वात मानते ही नही और अचूक होनेका दावा करते है।"

अिससे गाधीजी चिढ गये और तमक कर वोले, "आप अिस तरह मेरा निश्चय और विश्वास कमजोर करनेकी कोशिश न कीजिये। मुझे विश्वास है कि मै अिस अग्नि-परीक्षाको पार करके जिन्दा रहूगा। अितना मेरे और आप जैसे मेरे मित्रोके लिअे काफी होना चाहिये। आपको मेरी श्रद्धाको कमजोर नही वनाना चाहिये। अुपवास शुरू होनेसे पहले मै अपनी डॉक्टरी परीक्षा करानेको रजामद नही हो सकता।"

फिर दोनो मित्र चले गये। दोनोको दु ख हुआ कि अुन्होने गाधीजीकी आत्माको क्षुब्ध किया।

शामको हमेशाकी सैरके समय गाधीजीको अचानक जैसे विजली चमक गअी हो अिस तरह अपनी गलती महसूस हुअी और अुन्होने कहा, "मैने दो प्रिय मित्रोके साथ वडा अन्याय किया है। मनुष्य कितना दुर्वल और भूलभरा प्राणी है! आत्मशुद्धिके अुपवाससे पहले भी मै अपने प्रिय मित्रो पर क्रोध कर वैठा। मै अुनसे क्षमा-याचना करूगा।"

तदनुसार दूसरे दिन प्रात काल अुन्होने राजाजीको यह पत्र भेजा

"प्रिय राजाजी,

आप मुझे प्राणोसे भी प्यारे है। मैने कल आपको और शकर-लालको गहरा आघात पहुचाया। मेरे क्षमा-याचना करनेसे क्या होगा?

क्षमा तो मेरे मागे विना ही आपकी तरफसे मिली हुअी है। परन्तु मैंने मूर्खकी तरह जिस वातका विरोध किया वही अब मैं करूगा। अब आप जब चाहे और जिस डॉक्टरसे चाहे मेरी परीक्षा करा लीजिये, बशर्ते कि सरकार अिजाजत दे दे। मैं समझता हू कि अिस परीक्षाका परिणाम प्रकाशित नही होना चाहिये, क्योकि अुसका राजनीतिक अुपयोग होनेका डर है। मुझे यह भी कह देना चाहिये कि डॉक्टरी परीक्षा हुअी भी तो अुससे अुपवासके आरभ पर असर पडनेकी सभावना नही है। और बाते मिलने पर करेगे। यह तो सिर्फ अपनी आत्माको अुस अशुद्धिसे मुक्त करनेके लिअे लिखा है जो कल अुसमे चुपकेसे घुस गअी थी। आपको और शकरलालको प्रेम।

—बापू"

परन्तु दूसरे दिन राजाजी हसते हुअे आये और कहने लगे, "माफी मागनेकी तो कोअी बात ही नही थी। क्षोभ तो आपकी अपेक्षा हमे अधिक हुआ था और अब हमने परीक्षा न करानेका निश्चय कर लिया है।"

—'हरिजन' मे महादेव देसाअी

११५. कोढ़ियोंके साथ

भारतसे अिंग्लैण्ड लम्बी छुट्टी पर आये हुअे अेक बैप्टिस्ट पादरीने 'डेली न्यूज' के प्रतिनिधिको बताया कि अेक बार अुन्होने महात्मा गाधीको अुटीमाकी अेक कोढीबस्ती देखनेके लिअे निमत्रित किया। गाधीजी अपनी घुटनोसे अूपर तककी धोती पहने हुअे किरायेके तागेमे आये। अुन्होने कोढियोके सामने भाषण दिया और अपने भाषणके अन्तमे पूछा "मुझे अुन्हे अपने भाअी क्यो कहना चाहिये, अगर मै अुनके साथ मिलू-जुलू नही?" और अुन्होने आग्रह किया कि प्रत्येक गरीब पीडित कोढी अुनके पास लाया जाय। अुन्होने अिस अत्यत घृणित और घातक रोगके चिह्नो और लक्षणोकी परवाह किये बिना हरअेकसे हाथ मिलाया, अुनके सिर पर हाथ रखा और सात्वनाके कुछ शब्द कहे। पादरीने पूछा, "कितने महान अथवा अज्ञात मनुष्य अैसा करते है?"

स्व० श्री महादेव देसाओी भी महात्माजीके सेवाग्रामके जीवनके रेखाचित्रोमे यह लिखकर छोड गये है

"सेवाग्राम आश्रमके वीमारोमे अेक कोढी पडित भी हैं। वे यरवडामें हमारे साथ राजनीतिक कैदी थे। यह रोग अुन्हें वही लगा था या वहा अिसका निदान हुआ था——मुझे ठीक याद नही है। वे सस्कृतके प्रगाढ पडित है और सस्कृतमे अिस तरह वात करते है मानो वह अुनकी मातृभाषा हो। वर्षो तक अनाथकी तरह भटकते रहनेके वाद और जो घातक रोग अव वहुत आगे वढी हुअी स्थितिमे है अुसकी ग्लानिके मारे अनिश्चित कालके लिअे अुपवास तक करनेके वाद वे अेक दिन यहा आ पहुचे। अुनका कहना था कि "मेरी हड्डिया अव यही गिरेगी, मै जानता हू कि मुझे यहा शरण मिलेगी और निकालने पर भी मै यहासे नही जाअूगा।"

गाधीजीने कहा, "मै आपको कैसे अिनकार कर सकता हू? अगर मै क्षय-पीडित दामादको रख लेता हू, तो आपको क्यो न रखना चाहिये? दामादकी देखभालके लिअे वा है। वालजी देसाअीसे सवको प्रेम है और मुझे विश्वास है कि अुनकी देखभाल की जायगी। परन्तु आपकी देखभाल मै न करूगा तो कौन करेगा? मै अपने झोपडेके पास ही आपकी झोपडी वनवा दूगा। अुसे आप अपना निवासस्थान वना लीजिये। यहा कोअी नही रह जायगा तव भी कमसे कम आप तो यही रहेगे।"

११६. कस्तूरबाके बचावमें

वे ही डब्ल्यू० जेस० अर्विन साहव, जिन्होने धमकी दी थी कि अगर स्थानीय अधिकारियोने गाधीजीको चम्पारन जिला छोड देनेको विवश न किया तो वे और अुनके विहारके निलहे साथी कानून अपने हाथमे ले लेगे, अितने ओछेपन पर अुतर आये थे कि अुन्होने कस्तूरवाका भी (जो चम्पारनके दौरेमे गाधीजीके साथ गअी थी) कलकत्तेके 'स्टेट्समैन' को भेजे अेक पत्रमे अत्यत अपमानजनक अुल्लेख किया। यह पत्र अुस अखवारके १२ जनवरी, १९१८ के अकमे प्रकाशित हुआ था। अिस पर गाधीजीने मोतीहारीसे १६ जनवरीको अुस अखवारको जेक पत्र भेजा। अिस प्रस्तावनाके वाद कि "मि० अर्विनने ससारकी अेक सरलतम

स्त्री पर (और यह मैं वह मेरी पत्नी है तो भी कहता हू) अशोभनीय आक्रमण किया है।" आगे लिखते हुअे गाधीजीने अपने पत्रमे कहा

"दो शब्द अपनी निर्दोष पत्नीके बारेमे भी कहू, जिसे अुस अन्यायका कभी पता भी नही लगेगा जो आपके पत्रलेखकने अुसके साथ किया है। अगर मि० अर्विनको अुससे परिचय प्राप्त करनेका सम्मान और सुख प्राप्त होगा, तो अुन्हे जल्दी ही मालूम हो जायगा कि श्रीमती गाधी सीधी-सादी और लगभग निरक्षर स्त्री है। अुसे अुनके बताये हुअे दोनो बाजारोका कुछ भी पता नही है और चद दिन पहले तक मुझे भी पता नही था। यह पता मुझे मि० अर्विनने जिसका जिक्र किया है अुस प्रतियोगी बाजारके कायम होनेके कुछ दिन बाद लगा है। फिर अुन्हे यह भी विश्वास हो जायगा कि श्रीमती गाधीका अुसके कायम होनेमें कोअी हाथ नही था और वह अैसे बाजारकी व्यवस्थाकी बिल्कुल क्षमता नही रखती। और आखिरी बात अुन्हें तुरन्त यह मालूम हो जायगी कि श्रीमती गाधीका समय अिस देहातमे स्थापित किये गये स्कूलको चलानेवाले शिक्षकोके लिअे खाना बनाने और अुनकी सेवा करनेमे, दवादारू बाटनेमे और साधारण स्वास्थ्यके नियमोका ज्ञान करानेकी दृष्टिसे देहातकी स्त्रियोके बीच घूमने-फिरनेमे व्यतीत होता है। मै यह भी बता दू कि श्रीमती गाधीने भाषण देने और अखबारोको चिट्ठिया लिखनेकी कला नही सीखी है।"

११७. पतित बहनें

स्त्रियोंके पावित्र्यको गाधीजीने हमेशा अेक अत्यन्त पुनीत वस्तु माना है। पतित बहनोंसे अुनका साक्षात्कार १९२१ मे कोकोनाडामे ही हुआ। अुसके बाद वे अिस विषय पर अकसर सोचते रहे कि अुनकी दशा सुधारने और जिस सामाजिक पतनमे पुरुषकी पशुताने अुन्हे ढकेल दिया है अुससे अुनका अुद्धार करनेके लिअे क्या अुपाय किये जा सकते हैं।

आन्ध्रके अपने अनुभव वर्णन करते हुअे गाधीजीने लिखा

"कोकोनाडामे, अुस विशाल सभाके बाद ही, जब मै रातमें ९ बजेके करीब अपने बगले पर लौटा तो कुछ स्त्रिया और लडकिया मुझसे

मिलने आओी। जब मैंने प्रवेश किया तब रोशनी बहुत धीमी थी। अुनकी गतिविधि और दृष्टिमे कुछ असाधारणता-सी थी। किसी कारणसे यह मामूली अभिवादन कि 'तुम कातती हो? मुझे तिलक स्वराज्य कोषके लिअे क्या दोगी?' मेरे मुहसे निकल नही रहा था। अिसके विपरीत मैंने अपने मेजवानसे पूछा कि ये महिलाअे कौन है। अुन्हे भी मालूम नही था। अुन्होने पूछा और थोडे सकोचके बाद अुत्तर मिला, 'हम नर्तकिया है।' मुझे अैसा लगा कि धरतीके पेटमे समा जाअू। मेरे मेजबानने यह कहकर मुझे सान्त्वना देनेकी कोशिश की कि अिस तरहका जीवन आरम्भ करनेसे पूर्व अेक धार्मिक सस्कार किया जाता है। जिससे मेरे लिअे स्थिति और भी खराब हो गओी। अिससे अिस निन्दनीय वस्तुको सम्मानका आवरण प्राप्त हो जाता है। मैंने अुनसे जिरह की। अुन्होने अत्यत शिष्ट शब्दोमे कहा कि वे दर्शन करने आओी है। 'तुम और कोओी धधा करना चाहोगी?' 'हा, यदि अुससे हमारा गुजारा हो जाय।' अुनकी बातको वही खतम कर देनेको मेरा जी नही माना। मुझे अपने पुरुष होने पर शर्म आओी। अगले पडावके स्थान राजमहेन्द्रीमे दूसरे ही दिन मैंने अिस सवालको सीधा छेडा। यह आन्ध्रके अनुभवोमे अेक सबसे दु खद अनुभव था। मेरा अनुमान है कि यह पाप शेष भारतमे भी किसी न किसी रूपमे सब जगह फैला हुआ है। मै अितना ही कह सकता हू कि अगर हमे आत्मशुद्धिके द्वारा स्वराज्य लेना है, तो हम स्त्रियोको अपनी वासनाका शिकार न बनाये। दुर्बलोकी रक्षाका धर्म यहा विशेष जोरके साथ लागू होता है। मेरी दृष्टिसे गोरक्षाके अर्थमे स्त्रियोके सतीत्वकी रक्षा सम्मिलित है। जब तक हम अपनी स्त्रीजातिका अपनी माताओ, बहनो और पुत्रियोकी तरह सम्मान करना नही सीखेगे, तब तक भारतका पुनरुद्धार नही होगा। जिन पापोसे हमारे मनुष्यत्वका हनन होकर हम पशु बन जाते है, अुनसे हमे अपनेको शुद्ध कर लेना चाहिये।"

११८. लक्ष्मीसे दो बात

अपने पुत्र देवदासके विवाह-संस्कारके समय महात्मा गाधीने अपनी पुत्रवधू श्रीमती लक्ष्मीदेवीको, जो श्री राजगोपालाचार्यकी पुत्री है, सम्बोधन करते हुअे ये शब्द कहे

"लक्ष्मी, तुम्हे मुझे बहुत कहनेकी आवश्यकता नही। मुझे विश्वास है कि देवदास तुम्हारे लिअे योग्य पति साबित होगा। जबसे मैंने तुम्हे देखा और जाना है, मैंने महसूस किया है कि तुम 'यथा नाम तथा गुण' हो। तुम्हारे विवाहसे अुस स्नेहके बन्धन दृढ होने चाहिये, जो मेरे और राजाजीके बीच बढता रहा है। जिस अनोखे वातावरणमे यह विवाहोत्सव हो रहा है अुस पर मुझे जोर देनेकी आवश्यकता नही है। असलमे यह अेक धार्मिक वस्तु है, भगवान करे वह तुम दोनोके लिअे कर्तव्य-पालनका बेहतर जरिया साबित हो। यदि मुझे यह मालूम न होता कि यह विवाह धर्मानुकूल है और अुस शुद्ध तपस्याका फल है जो तुम दोनोने हमारी मजूरी और आशीर्वाद प्राप्त करनेके लिअे की है, तो मेरा अिससे कोअी वास्ता न होता। मुझे ये चन्द शब्द कहनेके लिअे बडा प्रयत्न करना पडा है, परन्तु मैंने अपने लिअे यह जरूरी समझा कि तुम्हे आशीर्वाद दू और चेतावनी भी दे दू कि तुम अपने अूपर बडी जिम्मेदारी ले रही हो। परमात्मा तुम्हारी रक्षा करे। रक्षा वही करता है, क्योकि वही अेक पिता, माता, मित्र और सब कुछ है। तुम्हारा जीवन मातृभूमिकी और अुसके द्वारा मानव-जातिकी सेवामे समर्पित हो। तुम दोनो सदा विनम्र रहना और सदा अीश्वरसे डर कर चलना।"

फिर अुन्होने अपने पुत्र देवदाससे कहा

"तुमने राजाजीसे अेक लाडला रत्न छीन लिया है। तुम अुसके योग्य बनना और अुसे सभाल कर रखना। वह सचमुच लक्ष्मी है। अुसकी वैसी ही देखभाल रखना और रक्षा करना, जैसी भलाअी और सौन्दर्यकी देवी लक्ष्मीकी रखी और की जाती है। दोनो दीर्घजीवी बनो और धर्मका अनुसरण करो। दोनो धर्मके लिअे जीना और अवसर पडने पर धर्मके लिअे प्राण निछावर करनेका साहस रखना।

आजसे तुम्हारा जीवन देशके लिअे और भी अधिक समर्पित हो और तुम कभी आलस्य और विषय-सुखके अधीन न बनो — यही मेरा आशीर्वाद है, यही मेरी प्रिय आशा और अिच्छा है।"

११९. बापूकी अहिंसाका अेक अुदाहरण

बापूका सदा यह विश्वास रहा कि भलाअीसे भलाअी और बुराअीसे बुराअी पैदा होती है। अिसलिअे अगर बुराअीका जवाब वैसी ही बुराअीसे नही मिलता, तो वह काम करना बन्द कर देती है और पोषणके अभावमें मर जाती है। अुनका अनुभव भी यही था। दक्षिण अफ्रीकाकी जिन जिन जेलोंमें गांधीजी रहे अुनके सब कर्मचारी, जो पहले अुनके प्रति शत्रुभाव रखते थे, बादमें अुनके मित्र हो गये, क्योंकि अुन्होंने बदला नही लिया। अुनकी कटुताका जवाब बापूने हमेशा मिठाससे दिया।

जेलका अेक गोरा सिपाही गांधीजी पर सन्देह करता था। अुसका खयाल था कि हर कैदी पर शक करना अुसका कर्तव्य ही है। चूंकि गांधीजी छोटीसे छोटी बात भी सुपरिन्टेन्डेन्टकी जानकारीके बिना नही करना चाहते थे, अिसलिअे अुन्होंने अुससे कह दिया था कि अगर कोअी कैदी पाससे निकलते हुअे मुझे सलाम करेगा तो मैं बदलेमें सलाम करूंगा और जो खाना मैं नही खा सकता वह सब अपने कैदी-वार्डरको दे दिया करूंगा। सुपरिन्टेन्डेन्टके साथ हुअी अिस बातचीतका गोरे सिपाहीको कुछ पता नही था। अेक बार अुसने अेक कैदीको गांधीजीको सलाम करते और गांधीजीको सलामका जवाब देते देख लिया। हालांकि अुसने दोनोंको सलाम करते देखा था, फिर भी अुसने सिर्फ कैदीसे ही टिकट ले लिया। अिसका अर्थ यह था कि वह अुसकी रिपोर्ट करेगा। गांधीजीने अुसी समय सिपाहीसे कहा कि मेरी भी रिपोर्ट करो, क्योंकि मैं भी अुतना ही दोषी हूं। परन्तु सिपाही अिसके लिअे राजी नही हुआ।

गांधीजी कैदीकी रक्षा तो करना चाहते थे, परन्तु सिपाहीको अुसकी मनमानीका दण्ड नही दिलवाना चाहते थे। अिसलिअे अुन्होंने सुपरिन्टेन्डेन्टसे सलामवाली घटनाका तो जिक्र कर दिया, मगर अुस बात-

चीतका नही किया जो अुनके और सिपाहीके बीच हुअी थी। सिपाहीको सचमुच आश्चर्य हुआ, मगर अिससे भी अधिक अुसे यह विश्वास हो गया कि गाधीजी अुसके प्रति दुर्भाव नही रखते। अुसी क्षणसे अुसने गाधीजी पर सन्देह करना बन्द कर दिया।

१२०. 'अंग्रेज बनिया'

"आप ब्रिटिश शोषणके परिणामस्वरूप भारतके दरिद्र होनेकी बाते करते है, पर क्या यह सच नही है कि किसानोके दु खका असली कारण बनियोकी लूट और विवाह तथा मौतके अवसर पर पैसेका अपव्यय है? और आपका अन्तिम अभियोग यह है कि ब्रिटिश सरकार फिजूलखर्ची करती है। परन्तु देशी राजाओकी फिजूलखर्चीके बारेमे आपका क्या कहना है?" ये प्रश्न श्रोताओमे से अेकने गाधीजी पर अुस सभामे बरसाये थे, जो लदनके वुडब्रूक हॉलमे हुअी थी और जिसमे भिन्न भिन्न सस्थाओके प्रतिनिधि आये थे। यह अुन दिनोकी बात है जब गाधीजी १९३१ के अन्तिम भागमे दूसरी गोलमेज परिषदके सिलसिलेमें अिग्लैण्ड गये थे। गाधीजीका अुत्तर यह था

"भारतीय बनियेकी ब्रिटिश बनियेसे तुलना नही की जा सकती। और अगर हम हिंसासे काम लेते होते, तो भारतीय बनिया गोलीसे मार दिये जानेका हकदार होता। परन्तु अुस हालतमे अग्रेज बनिया तो सौ बार गोलीसे मार दिये जानेका हकदार होगा। भारतीय बनियेके ब्याजकी दर अुस लूटके मुकाबलेमे कुछ भी नही है, जो ब्रिटिश बनिया सिक्केकी जादूगिरी और जमीन-लगानकी निर्दय वसूलीके द्वारा चलाता रहता है। मै अितिहासमे अैसा अन्य कोअी अुदाहरण नही जानता, जिसमे अितनी असगठित और नम्र जातिका अिस प्रकार सगठित शोषण किया गया हो। रही बात भारतीय राजाओकी विलासिता और अपव्ययकी, सो मेरे पास सत्ता हो तो मुझे अुनके अभिमानके सूचक महल छीन लेनेमे कुछ भी सकोच नही होगा। मगर अिससे कही कम सकोच मुझे ब्रिटिश सरकारसे नअी दिल्ली छीन लेनेमे होगा। राजाओकी फिजूलखर्ची नअी दिल्ली पर, अेक वाअिसरॉयकी हिन्दुस्तानमे अेक छोटेसे अिग्लैण्डका निर्माण

करनेकी सनकको मतुष्ट करनेके लिअे, वेरहमीमे जो करोडो रुपये वरवाद किये जाते है अुसकी तुलनामे कुछ भी नही हे। रुपयोकी यह वरवादी तव की गयी है जव कि देशमे असरय लोग भूखसे मर रहे थे।"

१२१. 'हरिजन' नामकी अुत्पत्ति

'अछूतो' के लिअे गाधीजीने 'हरिजन' नामका प्रयोग कैमे शुरु किया, अिसका वर्णन श्री अेस० आर० वेकटरमणने 'ठक्करवापा जयन्ती स्मारक-ग्रथ' मे किया हे। वे कहते है

दिसम्वर १९३३ मे जव गाधीजी मद्रास गये, तव हरिजन नेताओने अुनसे मिलकर कहा कि अुन्हे 'हरिजन' शव्द पर आपत्ति हे। गाधीजीने अुन्हे यह अुत्तर दिया

"आप कहते है कि दलित वर्गोसे सलाह नही ली गअी। लेकिन अुन्होने मुझसे सलाह ली थी। यही खास चीज है। मैने भारतके समस्त भाग देखे है। मुझसे पूछा जाता हे कि 'हम हरिजन क्यो कहे जाते हे? हमारा कोअी और अच्छा नाम क्यो नही होना चाहिये?' यह आम खयाल है। अुनकी दलील यह थी कि 'अीश्वरके लिअे हमे कुली न कहिये।' किसी समय अिस शव्दका विशेप अर्थ था। अेक मारी जाति ही अिस नामसे पुकारी जाती थी। अगर अव वह शव्द काममे नही लिया जाता तो अिसका मतलव यह नहीं कि हृदय-परिवर्तन हो गया है। **केवल कानोको वह वुरा लगना भर वन्द हो गया है।** अिस नये नामकी सिद्धि अितनी ही है। जैसा मैने कहा, यह मेरा गढा हुआ नही हे। अेक अछूतने मुझसे दलील की कि हमे अैसे नामसे न पुकारा जाय जिसके साथ हमेशा निंदाका अर्थ जुडा रहेगा। अुसने विलकुल अुचित कहा कि 'दलित नाम मुझे गुलामीकी याद दिलाता हे।' मैने पूछा, 'मेरे पास सुझानेको कोअी नाम नही है। तुम सुझाओगे?' तव अुस आदमीने 'हरिजन' नाम सुझाया। अुसने अपने समर्थनमे गुजराती कवि नरसिंह मेहताका प्रमाण दिया, जिसने अपने ग्रथोमे अिस शव्दका प्रयोग किया हे। मैने अुसे तुरत अपना लिया। मुझे यह तामिल कहावत भी मालूम थी कि 'थिक्कत्रवनुक्कु देवमय तुनाअी।' क्या

'हरिजन' अिसका पर्याय नही है? जो जातिसे बहिष्कृत है वे अीश्वरके प्यारे है। दलित वर्गके लिअे 'हरिजन' शब्दका प्रयोग करनेमे भी यही अर्थ है।"

१२२. विद्यार्थियोंके लिअे हरिजन-कार्य

जब गाधीजी यरवडा जेलके १९३३ वाले अपने 'अस्पृश्यता-विरोधी' अुपवासके बाद पर्णकुटी, पूनामे फिरसे स्वास्थ्यलाभ कर रहे थे, तब हाअीस्कूलके विद्यार्थियोकी अेक मडली अुनसे मिलने आअी। अुन्होने कहा कि हम हरिजनोकी सेवा करना चाहते है, परन्तु हमारे पिता हमे नही करने देते। गाधीजीने हसकर कहा कि अुनसे तुम्हे लडना चाहिये, परन्तु यह भी कहा, "तुम अुनसे कैसे लड सकते हो?"

अुन्होने विद्यार्थियोसे पूछा, "जब तुम कोअी चीज कराना चाहते हो तो क्या करते हो? तुम रोते हो। क्यो, यही बात है न?"

विद्यार्थियोने हसकर कहा, "जी, हा।"

गाधीजीने कहा "तो रोओ और चिल्लाओ।" (हसी)

अेक विद्यार्थी बोला, "हमारे पिता सरकारी नौकर है, अिसलिअे वे अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलनमे भाग लेनेसे डरते है।"

गाधीजीने फौरन अुत्तर दिया "यह राजनीतिक कार्य नही है। सरकारी नौकर भी बहुतसी बाते कर सकते है। वे चन्दा दे सकते है, अपने घरोमें अछूतोको नौकर रख सकते है और हरिजन लडको और लडकियोकी परवरिश कर सकते है। अिसमे कोअी राजनीति नही है।"

दूसरे विद्यार्थीने पूछा, "स्कूलोमे हम अुनकी सेवा कैसे कर सकते है?"

गाधीजी "स्कूलोमे तुम कुछ नही कर सकते। वहा तुम विद्या सीखने जाते हो। वहा अपने छोटे छोटे दिमागोको परेशान न करो, लेकिन स्कूलके समयके बाहर तुम बहुत कुछ कर सकते हो।"

प्रश्न "किस प्रकार?"

गाधीजी "जहा अछूत रहते है वहा जाओ, अुनसे मिलो-जुलो, अुनके साथ खेलो और देखो कि अुनके घरकी सफाअी होती है या नही।

और झाडू लेकर अुनके घरोंको बुहार दो। अुन्हें साफ रहना सिखाओ। अपने खुदके जीवनसे अुन्हें दिखा दो कि तुम अछूतपनको नहीं मानते। अुन्हें दिखा दो कि तुम्हें अुनसे प्रेम है। अुनके साथ अपने सगे भाअियोंका-सा बरताव करो।"

अन्तमें अुन्होंने कहा, "तुम बहुत छोटे हो। दिन-दिन तुम्हारा ज्ञान और ठीक ढंगसे काम करनेका कौशल बढ़ेगा।"

विद्यार्थियोंने गांधीजीको धन्यवाद दिया, मालाअें अर्पण कीं और अपने घर चले गये।

१२३. अुनकी 'पुत्रियां'

समय-समय पर भिन्न-भिन्न लोग गांधीजीसे अपना रिश्ता बताया करते थे। अिसमें अुनका अुद्देश्य अपना स्वार्थ साधना ही होता था। कअी बार अैसे मामलोंकी ओर गांधीजीका ध्यान दिलाया जाता था। वे अिसे सामुदायिक जागृतिसे पैदा होनेवाले भारी खतरोंमें से अेक खतरा समझते थे। यहां अेक अैसी घटनाका अुल्लेख किया जाता है

"मैंने पत्रोंमें अभी-अभी अेक सूचना पढ़ी है कि अेक लड़की मेरी पुत्री होनेका ढोंग रचकर अुसके आधार पर लोगोंसे तरह तरहकी आव-भगत प्राप्त कर रही है। मुझे अच्छी और संयमी हजारों लड़कियोंको अपनी पुत्रियां माननेमें कोअी आपत्ति नहीं। मुझे तो अिसमें गर्व ही होगा। वे मेरी और देशकी प्रतिष्ठा बढ़ायेंगी, दुनिया भी अुन्हें अपने सतत बढ़ते हुअे परिवारकी धर्मपुत्रियां मान लेगी। लेकिन जैसी स्थिति है, अुसमें मुझे अनेक बार कही हुअी यह बात फिर दुहरानी पड़ रही है कि पुत्रीका पिता होनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त नहीं हुआ है। अेक छोटीसी 'अछूत' लड़की जरूर है, जिसे मैं गर्वपूर्वक अपनी धर्मपुत्री कहता हूं। वह मेरे लिअे सुख लाअी है और मुझे आशा है कि जब वह बड़ी हो जायगी तब अपने भावी सेवाक्षेत्रमें सत्य और नम्रताको ले जायेगी। अभी तो वह साक्षात 'शैतान' है। वह खेलना ही खेलना जानती है, कामसे अुसका कोअी वास्ता नहीं। वह आवनूसके डंडेके

विना मुश्किलसे ही काम करती है। असके मा-बापके घर पर यही डंडा असे ठीक रखता था। मगर यह सात सालकी प्यारी आलसी लडकी मुझे अपना पिता मानती है तब मुझे कोअी आपत्ति नही होती। कुछ वयस्क लडकिया भी है जो मेरी पुत्रिया होनेका दावा करके मुझे सुख देती हैं। परन्तु वे मुझसे जिस मापदण्डके अनुसार जीवन व्यतीत करनेकी आशा रखती है वैसा करना मेरे लिअे वे कठिन बना देती है। अन्हे सदा यह खतरा रहता है कि कही मै अनके लिअे बदनाम पिता न साबित होअू। लेकिन मै भारतकी तमाम लडकियोको सूचित कर देता हू कि अनके जबरन् मुझे अपना पिता माननेसे मै बदनाम होनेकी जोखिम नही अुठाअूगा। हा, अूपर जिन वयस्क लडकियोका मैने अुल्लेख किया है — जिनके नाम भी मै दुनियाके आगे प्रगट करनेका साहस नही कर सकता — अनके जैसी तमाम लडकियोको बेशक मै धर्मपुत्रिया बनानेकी अिच्छा रखता हू।

"परन्तु अेक लडकी जबरदस्ती मुझे अपना पिता कहती है, यह तो अेक निर्दोष-सी बात हुअी। मैने सुना है कि अुदयपुरके अेक मोतीलाल पचोली नामक सज्जन मेरे शिष्य होनेका दावा करते हैं और राज-पूतानेकी रियासतोके देहातियोमे नशा-निषेधका और न जाने किस किस बातका प्रचार करते है। समाचार है कि अुन्होने अपने आसपास अेक सशस्त्र दल जमा कर लिया है और वे जहा जाते है वहा अपना राज्य या कुछ अैसी ही चीज स्थापित कर रहे है। वे चमत्कारिक शक्ति रखनेका दावा भी करते है। समाचार है कि अुन्होने या अुनके भक्तोने कुछ ध्वसात्मक कार्य भी किया है। मै चाहता हू कि लोग हमेशाके लिअे यह समझ ले कि मेरा कोअी शिष्य नही है। कमसे कम अभी तो काग्रेस और खिलाफत कमेटियोने अलग मेरा कोअी अस्तित्व नही है। मेरी सारी प्रवृत्ति अिन दो सगठनोके मारफत होती है। कोअी मेरे नाम पर काम नही कर रहा है, किसीको लिखित अधिकारके विना मेरा नाम अिस्तेमाल करनेका अधिकार नही है।"

१२४. 'गांधी चाचा'

जब गांधीजी १९३१ मे दूसरी गोलमेज परिषदके सिलसिलेमे अिंग्लैण्ड गये और लंदनमे ठहरे हुअे थे, तब वे शहरके अीस्टअेण्डमे किंग्सले हॉलमें कुमारी म्यूरियल लेस्टरके मेहमान बनकर रहे थे। किंग्सले हॉलसे सम्बद्ध अेक बाल-भवन था। अुसके छोटे-छोटे निवासियों और गांधीजीके बीच जल्दी ही अतिस्नेहका बंधन स्थापित हो गया था। अुन सबके लिअे वे 'गांधी चाचा' हो गये थे। यह नाम पहले-पहल अुन्हें तीन वर्षके अेक नन्हे मुन्नेने दिया था, फिर तो वह चल पड़ा। गांधीजीकी विलायत यात्राके वर्णनमे श्री महादेव देसाअीने गांधीजीकी वर्षगांठ पर कुछ बच्चो द्वारा लिखे गये निबन्धोंके नमूने दिये है। अेक दस वर्षसे कम अुम्रकी लड़कीका निबन्ध यह था

"असीसीके सन्त फ्रांसिसको लोग असीसीका छोटासा गरीब आदमी कहते थे। वे हर तरहसे ठीक गांधी जैसे थे।

"दोनोको प्रकृतिसे अर्थात् बच्चो, पक्षियो और फूलोंसे प्रेम था। गांधी भी कच्छ पहनते है और जब सन्त फ्रांसिस पृथ्वी पर थे तो वे भी वही पहनते थे।

"गांधी और सन्त फ्रांसिस दोनो धनी व्यापारियोंके पुत्र थे। अेक दिन रातको जब सन्त फ्रांसिस अपने अनुयायियोंके साथ दावत खा रहे थे, तो अुन्हे गरीब अिटालियनोंका खयाल आया। वे दौड़कर बाहर गये और अपने बढ़िया कपड़े और अपना रुपया-पैसा अुन्होंने गरीबोंको दे दिया और ठीक गांधीकी तरह पुराने टाटके कपड़े पहन लिये।

"असीसीके सन्त फ्रांसिसने अपने कुछ अनुयायी साथ ले लिये। अुन्होंने पेड़ोंकी झोपड़ियां बनाअी। गांधीने भी ठीक वैसा ही किया। अुन्होंने अपना सारा वैभव और सुखपूर्ण जीवन गरीब भारतीयोंके खातिर त्याग दिया है।

"गांधी जब लंदन आने लगे तो अुनके देशके लोगोंने अुन्हे पहननेके लिअे कपड़े दिये। हम किंग्सले हॉल जानेवाले बच्चोंको अुन्होंने बताया था कि अुनके पास अपनी छोटी धोतियां (कच्छ) खरीदनेके लिअे भी काफी रुपया नहीं है।

"सोमवारको वे अेक दिनका मौन रखते है, क्योंकि यह अुन लोगोका धर्म है। गाधीको अुनकी वर्षगाठ पर लकडीके खिलौनो, मोम-बत्तियो और मिठाअियोकी भेट मिली। वे बकरीके दूध, सूखे मेवो और फलो पर रहते हैं।"

अेक दस वर्षके लडकेने भी निबन्ध लिखा था, जिसे यहा ज्योका त्यो अुद्धृत किया जाता है

"मि० गाधी अेक भारतीय है, जिन्होने १८९० मे लदनमे कानूनके विद्यार्थीके रूपमे शिक्षा पाअी थी। अुन्होने अपने देशकी हालत सुधारनेके लिअे यह काम छोड दिया।

"वे भारतीय गोलमेज परिषदके लिअे अिग्लैण्ड आये है। वे भारतके लिअे फिरसे व्यापार प्राप्त करनेकी कोशिश करने आये है। वे प्रयत्न कर रहे है कि ब्राह्मण लोग 'अछूतो' को अपने मन्दिरोमे आने दे। ये अछूत कोअी ६० लाख लोग है, जो यह नही जानते कि भरपेट भोजन क्या होता है। गाधीने अपनी सारी सम्पत्ति छोड दी है और अेक अत्यत गरीब भारतीय बननेकी कोशिश कर रहे है। अिसीलिअे वे कच्छ पहनते है।

"अुनका भोजन बकरीका दूध, फल और सागभाजी है। वे मास-मच्छी नही खाते, क्योंकि वे जीवहिंसाको नही मानते। गाधी अेक अीसाअी हिन्दुस्तानी है।

"मि० गाधी अपनी रुअी खुद कातते है। वे अिग्लैण्डमे रोज अेक घटा कताअी करते है और अस्पतालमे थे तब भी कातते थे। वे लकाशायरकी कपडेकी मिले देखकर अभी लौटे है।

"वे रविवारको शामके ७ बजेसे सोमवारको ७ बजे शाम तक प्रार्थना करते है और यदि आप अुनसे बात करे तो वे अुत्तर नही देते। जब वे मिलने निकले तो मेरे घर भी आये। मेरी मा अिस्तरी कर रही थी। परन्तु अुन्होने कहा, 'बन्द न कीजिये, क्योंकि मुझे खुद भी यह काम करना पडा है। मैने अुनसे हाथ मिलाया है। 'हल्लो' या 'गुडबाअी' के लिअे भारतीय शब्द 'नोमस्का' है।

"डब्ल्यू० अे० आअी० सेविल्ले, २१ अीर्गलिंग रोड, बो, लदन, अी ३, ३०-९-३१।"

१२५. महात्माजीकी मृत्युसे मां-बेटीका झगड़ा निपटा

अेक ओर अेक वुढिया और दूसरी ओर अुसकी पुत्री और जामाताके बीच वुढियाके पतिकी सम्पत्ति पर बहुत दिनोंसे जोरका झगडा चल रहा था। वह १३ फरवरी, १९४८ को चित्तौडकी जिला अदालतमें नाटकीय ढंगसे खतम हो गया। न्यायाधीशने दोनों पक्षोंको अुस दिन अपने सामने हाजिर होनेका आदेश दिया था। अुन्हें यह अंतिम आशा थी कि दोनों पक्षोंके बीच में समझौता करा सकूंगा। जब वे पेश हुअे तो न्यायाधीशने अुन्हें समझाया कि लडते रहने और मुकदमेबाजीमें अपना रुपया बरबाद करनेमें अुनकी कितनी मूर्खता है। अुसने आपसमें समझौता कर लेनेकी अुनसे गंभीरतापूर्वक अपील की। परन्तु अपील व्यर्थ सिद्ध हुअी।

तब न्यायाधीशने अपनी मेज पर झुक कर फरीकोंको शपथपूर्वक पूछा कि क्या तुमने महात्मा गांधीका नाम सुना है? न्यायाधीशकी बैठकके पीछेवाली दीवार पर लगे हुअे महात्माजीके चित्रको देखकर अुन्होंने कहा, "जी, हां।"

फिर जो हुआ वह अिस प्रकार था

न्यायाधीश क्या तुम्हें मालूम है कि महात्माजी गरीबों, अज्ञानियों और मूर्खोंके लिअे जिये और मरे थे?

अु० — जी, हां।

न्यायाधीश तुम्हें मालूम है कि सारा संसार आज महात्माजीकी मृत्यु पर रो रहा है?

अु० — जी, हां।

न्यायाधीश सारी दुनिया अुनके लिअे क्यों रो रही है?

अु० — क्योंकि वे सबको प्रेम करते थे और सदात्मा थे।

न्यायाधीश तुम्हें अुनसे प्रेम नहीं?

अु० — जी, हम सबको अुनसे प्रेम है।

न्यायाधीश तुम जानते हो कि महात्मा गांधीकी आत्मा तुम सबको ये मूर्खतापूर्ण झगडे करते देखकर रोयेगी?

अु० — अब हम नहीं लडेंगे। हम अपने झगडे छोडते हैं।

न्यायाधीशके सुझाव पर लडकी और अुसके पतिने बुढियाको साष्टाग प्रणाम किया और अुसने अुन्हे छातीसे लगाकर आशीर्वाद दिया। अिस सारे समयमे मा, बेटी और जवाअी तीनो रो रहे थे और अेक-दूसरेसे क्षमा-याचना कर रहे थे। अन्तमे जो निपटारा हुआ अुसमे माको अपने मरने तक अपने पतिकी सम्पत्तिका अुपभोग करनेकी अिजाजत दी गअी और असके बाद सम्पत्तिकी स्वामिनी लडकीको घोषित किया गया।

१२६. धर्मपुत्रकी मृत्यु

दिसम्बर १९२० की बात है। नागपुरके काग्रेस सप्ताहमें अेक दिन ३० वर्षका अेक मारवाडी युवक महात्मा गाधीके सामने आया और बोला, "आपसे मै कुछ मागना चाहता हू।" "मागो, जो मेरे बूतेका होगा अवश्य मिलेगा," गाधीजीने कुछ आश्चर्यसे अुत्तर दिया। नौजवानने कहा, "आपके पुत्र देवदासकी तरह मुझे भी अपना पुत्र समझिये।" गाधीजीने जवाब दिया, "मजूर। बात अितनी ही है कि मै कुछ नही दे रहा हू। देनेवाले तो तुम हो।"

वह युवक जमनालाल बजाज थे। वे शुरूमे अमीर घरमे पैदा तो नही हुअे थे, मगर अीश्वरने अुन्हे बचपनमे ही अितनी दौलत दे दी थी, जो अधिकाश लोगोको सपनेमे भी नही मिल सकती।

अिस आत्म-समर्पणका असर गाधीजी पर भी जमनालालजीसे कम गहरा नही हुआ। ११ फरवरी, १९४२ को हुअे अपने अिस अद्वितीय धर्म-पुत्रके अवसान पर शोक प्रगट करते हुअे गाधीजीने ता० २२–२–'४२ के 'हरिजन' मे दु खपूर्वक यो लिखा था

"मै कह सकता हू कि मुझसे पहले कभी किसी मानवको अुनके जैसा 'पुत्र' प्राप्त होनेका सौभाग्य नही मिला। अिस अर्थमे अवश्य ही मेरे अनेक पुत्र-पुत्रिया है कि अुन्होने मेरा कुछ काम किया है। परन्तु जमनालालजीने अपना कुछ भी न रखकर सर्वस्व मुझे अर्पण कर दिया था। मेरी कोअी प्रवृत्ति शायद ही अैसी होगी जिसमे मुझे अुनसे पूरे दिलसे सहयोग न मिला हो और जिसमे वह सहयोग अत्यत मूल्यवान साबित न हुआ हो। भगवानने अुन्हे तेज बुद्धि दी थी। वे व्यापारियोमे

शिरोमणि थे। अुन्होंने अपनी विपुल सम्पत्ति मेरे हवाले कर दी थी। वे मेरे समय और स्वास्थ्यके रक्षक बन गये थे। और यह सब अुन्होंने सार्वजनिक हितके लिअे किया था। जिस दिन वे मरे, वे और जानकी-देवी मेरे पास आनेवाले थे। परन्तु जिस घडीमें अुन्हें मेरे साथ होना चाहिये था लगभग अुसी घडी वे चल बसे। चौदह वर्ष पहले जब मगनलाल मुझसे छीन लिये गये थे अुस अवसरके सिवा अितना सूनापन मुझे कभी अनुभव नहीं हुआ। परन्तु न तो अुस समय मुझे कोअी शका थी और न अब है कि अिस प्रकारकी विपत्ति गुप्त वरदान होती है। अीश्वर मेरी बार-बार परीक्षा लेना चाहता है। मैं जिस श्रद्धाको लेकर जी रहा हूं कि वह मुझे अिस अग्नि-परीक्षामें अुत्तीर्ण होनेका बल भी देगा।"

जमनालालजीकी मृत्युके तीसरे दिन गांधीजी आश्रमवासियोंकी सभामें भाषण देते हुअे यह कहते कहते रो पडे कि "निःसन्तान लोग लडके गोद लेते हैं। लेकिन जमनालालजीने मुझे पिताके रूपमें गोद लिया था। अुन्हें मेरे सर्वस्वका अुत्तराधिकारी बनना चाहिये था। अिसके बजाय वे मुझे अपने सर्वस्वका अुत्तराधिकारी बनाकर छोड गये।"

१२७. 'मैं अब भी विद्यार्थी हूं'

१६ अक्तूबरका दिन था। लदनके स्त्री और पुरुष विद्यार्थियोंकी अेक सपूर्ण आन्तर-राष्ट्रीय सभामें आन्तर-राष्ट्रीय विद्यार्थी आन्दोलनके अध्यक्षने गांधीजीसे बोलनेका अनुरोध करते हुअे कहा, "महात्मा गांधी, आप यहां अेक अनोखे सम्मेलनमें भाषण देने पधारे हैं। यहां भिन्न भिन्न जातियों और राष्ट्रोंके ५७ देशोंके प्रतिनिधि अुपस्थित हैं। यह अैसे २०० व्यक्तियोंका सम्मेलन है, जिनके २०० मत हैं और जिनकी प्रतिक्रियाअें बहुत विचित्र और कभी-कभी तो अेकदम अकल्पनीय होती हैं।"

जब महात्माजीने स्नेहपूर्ण ढगसे श्रोताओंको 'साथी विद्यार्थी' कहकर सम्बोधन किया, तो आदर और पूजाकी भावनासे तालियां बजाअी गअीं। अुन्होंने विद्यार्थियोंसे अनुरोध किया, "मैं आजका समय

तुम लोगो पर कोअी पहलेसे सोचा हुआ भाषण थोपनेके बजाय प्रश्नोके अुत्तर देनेमे बिताना चाहता हू। अिसके लिअे तुम मुझे क्षमा करोगे।" अुन्होने कहा

"मैने तुमको 'साथी विद्यार्थी' कहकर सम्बोधन किया है। यह कोअी शिष्टाचार नही है। मै वास्तवमे अपनेको विद्यार्थी समझता हू और अगर तुम बुद्धिमान हो, जैसा कि मै हू (हसी), तो तुम भी अुत्तर-जीवनमे अपनेको विद्यार्थी समझना।"

गाधीजीने भाषण जारी रखते हुअे कहा, "जीवनके अपने विविध अनुभवोमे मै हमेशा अिस नतीजे पर पहुचा हू कि हमारा विद्यार्थी-जीवन तब शुरू होता है जब हम कॉलेज और विश्वविद्यालय तथा कानूनके शिक्षा-भवन छोड देते है। अैसा समझा जाता है कि यहा हम अपने ज्ञानकी कुजीके द्वारा अपने अध्ययनसे बधे रहते है और अध्ययन करते रहते है, लेकिन हकीकत यह है कि जब हम अुस चार-दीवारीसे बाहर निकलते है तब जो कुछ हमने सीखा होता है वह लगभग सारा भूल जाते है।

"वास्तवमे तो अुत्तर-जीवनमे हमे बहुतसी सीखी हुअी चीजे भूलनी होती है। कथित विद्यार्थी-जीवन विद्यार्थीके वास्तविक जीवनकी महज तैयारी होता है। जब तुम कॉलेजमे या और कही होते हो, तो तुम्हारे कुछ निश्चित विषय होते है। वैकल्पिक विषयोको भी तुम्हे अेक खास ढगसे पढना पडता है, क्योकि तुम्हारी दृष्टि वहा सचमुच सकुचित होती है। लेकिन यह मजिल पार हो जानेके बाद तुम गगन-विहारी पक्षीकी भाति स्वतत्र हो जाते हो, और तुम्हारी अुडान जितनी अूची होगी अुतना ही तुम्हारा बल बढ जायगा। अिस प्रकार मै अब भी विद्यार्थी हू, क्योकि मै दुनियादारीमे पारगत नही हुआ हू। (तालिया)

"जब तुम अिधर-अुधर ठोकरे खाते हो और अपने बल पर चलनेको छोड दिये जाते हो तब मामला कठिन हो जाता है। अैसी स्थितिमे अगर तुम अपने आपको अध्ययनमे लगा दो, सतत खोजके काममे अर्पित कर दो, तो तुम्हारे हर्षका पार नही रहेगा। अुस अध्ययनसे मिलनेवाले सुखकी कोअी सीमा नही होगी। मेरा अध्ययन शुरूसे आखिर तक सत्यकी

खोज रहा हे। अपने अध्ययन और खोजके शुरूके दिनोमे मैंने देखा कि सत्यका पता तब तक नहीं लग सकता, जब तक मै दूसरोको हानि पहुचानेके बजाय अपनी हानि करानेको तैयार नही होता। मुझे सत्यका पता तभी लग सका जब मैंने दूसरोको हानि पहुचानेकी सारी भावना छोड़ दी और आवश्यक होने पर अपनी हानि कर ली। अिसका कारण, जैसा तुम्हे अवश्य मालूम होगा, यह हे कि सत्य और हिंसा अेक-दूसरेके विरोधी हैं। हिंसा सत्यको छुपाती है और अगर तुम हिंसा द्वारा सत्यका पता लगानेकी कोशिश करोगे तो सत्यकी खोजमे तुम्हारा भयकर अज्ञान प्रगट होगा। अिसलिअे मैं अिस अनुभव पर आया हू कि अहिंसा ही निरपवाद रूपमें जीवनका असली तत्त्व है।"

१२८. अेक दुःखान्त घटना

यद्यपि गाधीजी जहा भी सफर करते थे वही जबरदस्त भीड अुनको घेरे रहती थी और अुस पर काबू पाना कठिन होता था, फिर भी अुन्हे कोअी गभीर दुर्घटना देखनी नही पडी। शायद अेकमात्र अपवाद जून १९२९ मे अुत्तर-प्रदेशके अलमोडा जिलेके अुनके दौरेमे हुआ। अिस दुर्घटनाका वर्णन अुन्होने अिस प्रकार किया है

"भीड-भाडमे बिताये गये तीस वर्षके सतत भाग-दौडवाले जीवनमे मुझे अेक भी गभीर दुर्घटना याद नही आती। हा, कअी बार बाल-बाल बचनेकी घटनायें याद आती हैं। परन्तु मेरे अलमोडेमे प्रवेश करनेके दिन अर्थात् अिस मासकी १८ तारीखको जब मैं अेक विराट सभाके बाद अपने यजमानके घर लौट रहा था, तब पदमसिह नामक ग्रामीण, जैसा कि ग्रामीण किया करते हैं, मोटरकी तरफ दर्शनके लिअे झपटा और अेक अैसी दुर्घटनाका शिकार हो गया जो घातक साबित हुअी। वह मोटरसे समय पर बच नही सका, गिर पडा और मोटर अुसके अूपर होकर निकल गअी। पास खडे हुअे दयालु लोग अुसे तुरत अस्पताल ले गये। वहा अुस पर अधिकसे अधिक ध्यान दिया गया और यह आशा थी कि वह बच जायगा। वह शरीरसे सुदृढ और बहादुर था। दो दिन तक वह जिन्दा रहा। अुसकी नाडी ठीक थी और वह पोषण ले रहा

था। परन्तु २० तारीखको ३। बजे अुसके हृदयकी गति अचानक रुक गअी। पदमसिंह १२ वर्षका अेक लडका छोडकर चल बसा।

"मौत या अुससे छोटी दुर्घटनाओसे मुझे क्षणिक आघातके सिवा कुछ नही होता। परन्तु यह लिखते समय तक भी मै अिस आघातके प्रभावसे मुक्त नही हुआ हू। मेरे खयालसे अिसका कारण यह है कि मुझे पदमसिहकी मृत्युके अपराधमे भागीदार होनेका भान है। मैने देखा है कि लगभग निरपवाद रूपमे मोटर ड्रायवर गरम-मिजाज, शीघ्र अुत्तेजित होनेवाले, अधीर और अुतने ही भडक अुठनेवाले होते है जितना पेट्रोल, जिसके साथ अुन्हे रोज सम्पर्कमे आना पडता है। मेरी मोटरके ड्रायवरमे अिन सब त्रुटियोका काफीसे अधिक अंश था। जिस भीडमे से गुजरनेके लिअे मोटर जद्दोजहद कर रही थी, अुसे देखते हुअे यह कहा जा सकता है कि वह मोटर बहुत जोरसे चला रहा था। मुझे या तो पैदल चलनेका आग्रह करना चाहिये था या मोटरको अुस समय तक पैदल चाल पर चलानेका आग्रह रखना था जब तक हम भीडसे बाहर न निकल जाते। परन्तु हमेशा मोटरकी सवारी करनेसे मेरी भावनाओमे स्थूलता आ गअी मालूम होती है और गभीर दुर्घटनाओसे बचे रहनेसे पैदल चलनेवालोकी सुरक्षाके प्रति अेक अज्ञात किन्तु अक्षम्य अुदासीनता पैदा हो गअी है। आघातका कारण शायद अपने अिस अपराधका यह भान ही है। पदमसिहके लिअे जो किया जा सकता था सो किया गया। पडित गोविन्दवल्लभ पन्तने मुझे विश्वास दिलाया है कि अुसके लडकेकी अच्छी देखभाल की जायगी। पदमसिह पर अस्पतालमे जैसा ध्यान दिया गया अुससे अमीरोको भी अीर्ष्या हो सकती है। अुसने स्वयको अीश्वराधीन मान लिया था और अुसे शान्ति थी। परन्तु अुसकी मृत्यु मेरे लिअे अेक सबक है, और आशा है कि मोटर चलानेवालोके लिअे भी वह शिक्षाप्रद होगी। यद्यपि मेरी अपनी असगततताके लिअे मेरी हसी अुडाअी जा सकती है, फिर भी मै अपना यह विश्वास अवश्य दोहराअूगा कि मोटरकी सवारीमे कितनी ही सुविधाअे हो, तो भी वह यातायातका अप्राकृतिक साधन है। अिसलिअे जो अिसे काममे लेते है अुनको चाहिये कि अपने ड्रायवरो पर काबू रखे और यह समझ ले कि गति ही जीवनका सब कुछ नही है ओर अन्तमें शायद

अिससे कोअी लाभ भी सिद्ध न हो। मुझे कभी यह स्पष्ट प्रतीति नहीं हुअी कि मेरा पागलोंकी तरह भारतभरमें भागते फिरना सर्वथा कल्याणकारी ही सिद्ध हुआ है। कुछ भी हो, पदमसिंहकी मौतने मुझे जोरोंसे विचारमें डाल दिया है।"

१२९. गांधीजीसे अेक मुलाकात

१९२० के शुरूमें मेरठके मि० अेस० डब्ल्यू० क्लीमेन्स नामक अेक सज्जनने महात्मा गांधीसे मुलाकात की थी। अुनका विवरण लन्दनअमें प्रकाशित होनेवाले 'अिंडियन विटनेस' नामक अेक अीसाअी पत्रमें अिस प्रकार छपा था :

जब मैं मि० गांधीसे बातें कर रहा था, मुझे अुनकी पोशाककी सादगी पर बड़ा आश्चर्य हो रहा था। वे अेक मोटा सफेद कपड़ा पहने हुअे थे और ठंडसे बचनेके लिअे अुनके शरीर पर अेक कंबल पड़ा हुआ था। अुनके सिर पर केवल अेक छोटीसी सफेद टोपी थी। जब वे मेरे सामने मुंह करके फर्श पर बैठे, तो मैंने अपने मनसे पूछा कि दुबले चेहरे, लम्बे लटकते हुअे कान और शान्त आंखोंवाला यह छोटासा आदमी वह महान गांधी कैसे हो सकता है, जिसके बारेमें मैंने अितनी बातें सुन रखी हैं। लेकिन जब वे बातें करने लगे तो मेरी सारी शंकाअें मिट गअीं। मि० गांधी अपने वांछित अुद्देश्यके लिअे जो साधन अिस्तेमाल करते हैं अुन सबसे मैं सहमत नहीं हूं, परन्तु अेक मनुष्यके नाते अुनके विषयमें अपनी यह गवाही मैं जरूर देना चाहता हूं। मि० गांधी अेक आध्यात्मिक पुरुष हैं। वे अेक विचारक हैं। अपनी छोटीसी मुलाकातमें मुझे अुनसे वैसा ही हार्दिक तादात्म्य अनुभव हुआ, जैसा मुझे बीसों बार भगवानके सन्तोंके साथ अनुभव हुआ है। मुझे ज्ञात हुआ कि यह मनुष्य अीसाअी शक्तिके अुद्गम तक पहुंचा है और महान अीसासे शिक्षा ग्रहण कर चुका है।

मैंने पूछा : "मि० गांधी, पूर्वका और खास कर भारतका सर्वांगीण विकास करनेके लिअे पश्चिमके राष्ट्र क्या मदद दे सकते हैं?" मि० गांधीने अिस प्रश्नका अुत्तर सीधा नहीं दिया। अुन्होंने कहा : "भारत अिस

समय सीखे हुअेको भूलनेकी स्थितिमे से गुजर रहा हे। अुसने वहुतसी वाते अैसी सीखी है जो व्यर्थ और अलाभकारी हे। पश्चिमका और विशेषत आपके ही देशका अवलोकन करके मैने दो मुख्य वाते सीखी हैं पहली सफाअी, दूसरी अुत्साह। मेरा पक्का विश्वास हो गया है कि जव तक मेरे देशवासी सफाअी नही सीखेगे, तव तक अुनकी प्रगति नही होगी। आपके देशवासियोमे विलक्षण अुत्साह है। यह अुत्साह अधिकतर सासारिक वस्तुओके लिअे रहा है। अगर भारतवासी ठीक दिशामे अुतना ही अुत्साह रख सके तो अुन्हे वडे वडे वरदान मिलेगे।"

"मि० गाधी, राष्ट्रवादकी जो भावना चारो ओर फैली हुअी है, अुसे देखते हुअे कृपा करके वताअिये कि अीसाअी धर्म भारतको अुत्तम सहायता क्या दे सकता है?" अुन्होने अुत्तर दिया

"हमें सवसे ज्यादा जरूरत है **सहानुभूतिकी**। जव मैं अफ्रीकामे **वुरी हालतमे** था, तव मुझे अिस वातका पता लगा। मुझे कुछ गहरे पाताली कुअे खोदने पडे थे। शुद्ध वहती हुअी धाराअे तलाश करनेके लिअे मुझे गहरी खुदाअी करनी पडी थी। जो लोग यहा मेरे देशवासियोका अध्ययन करने आते हैं, वे केवल अूपर अूपरसे धरतीको खुरचते है। अगर वे सहानुभूतिके साथ गहरी खुदाअी करनकी कोशिश करे, तो अुन्हे वहा शुद्ध और स्वच्छ जीवन-स्रोत मिलेगा।"

"और मि० गाधी, कृपया यह भी वताअिये कि आप पर सवसे अधिक प्रभाव किस पुस्तक या व्यक्तिका पडा है?" अवश्य ही मै यह सुननेको तैयार था कि वे वेदो ओर कअी दूसरी भारतीय पुस्तकोके वारेमे कुछ कहेगे, जिनसे अीसाअी लोगोको परिचित होना चाहिये, परन्तु मै अिस पुरुषसे यह सुननेको तैयार नही था कि तीन अग्रेजी पुस्तकोने अुनके जीवन और विचारोकी रचना की थी। अुन्होने स्पष्ट स्वीकार किया कि वे वहुत सारी पुस्तके पढनेवालोमे से नही है, वल्कि अुत्तम पुस्तकोको सावधानीमे चुनकर पढनेवाले रहे है। अिन पुस्तकोका जिस क्रमसे अुन्होने जिक्र किया वह यो था वाअिवल, रस्किन, टॉल्स्टॉय। वाअिवलके वारेमे वोलते हुअे अुन्होने कहा, "कअी वार अैसा हुआ कि मुझे यह नही सूझता था कि किधर जाअू। अैसे अवसरो पर मैने

वाअिवल्का और विशेषत न्यू टेस्टामेण्टका आश्रय लिया है और अुसके सन्देशसे वल प्राप्त किया है।"

मै यह जाननेको अुत्सुक था कि हमारा मेरठ-स्नातक-सघ, जिसमे नगरके अुत्तम शिक्षित लोग शरीक है, शहरकी भलाअी कैसे कर सकता है। अिस प्रश्नके अुत्तरमे अुन्होने मुझे यह अेक शब्द बताया भगी। अुन्होने कहा, "मै यह शब्द अुसके पूरे अर्थमे अिस्तेमाल कर रहा हू। अगर सघके सदस्य बाहर निकल आये और शहरकी सफाअीमे अक्षरार्थ और नैतिक अर्थमे हाथ बटाये तो वे अेक महान कार्य करेंगे।"

१३०. छोटी बातो पर अुपदेश

गजराज नौ वर्षका अेक छोटासा तेज लडका है। अुसकी विधवा माता (सेवाग्राम) आश्रममे कुछ समय हुआ तब शरीक हुअी थी। लडकेको श्री आर्यनायकम्की नअी तालीम शालामे पढाअीके लिअे भरती कराया गया। अुसने स्कूल जाना मजूर कर लिया, मगर अिस शर्त पर कि गाधीजी अुसे देखने आयें। गाधीजीने अुत्तर दिया, "तुम्हारी पाठशाला देखने तो नही आअूगा, परन्तु छात्रालयमे वह स्थान देखने आअूगा जहा तुम सोओगे।" तदनुसार सेवाग्राम छोडनेसे दो दिन पहले (दिसम्बर १९४५ मे) अुन्होने वहा जाकर अपना वचन पूरा किया।

वे छात्रालय गये और छात्रालयमे अुन्होने जो कुछ देखा अुसे लेखबद्ध करते हुअे सेवाग्राम छोडनेसे पहले अुन्होने स्कूलके अधिकारियोको अेक पत्र लिखा "आज सुबह मैने जो कुछ देखा, अुससे मेरी आखें दुखने लगी।" जो कमरा बच्चोके औषधालयकी तरह काममे लिया जाता था, अुसके सामनेकी सारी जमीन गीली थी। पूछताछ करने पर अुन्हे पता चला कि वहा बच्चे अपने मुह-हाथ धोते है। जिस कमरेमे बच्चे सोते थे, अुसमे चटाअिया अुलटी-सीधी बेतरतीब रखी हुअी थी। कमरेके बीचमें अेक चटाअी पर अेक दावात-कलम पडी हुअी थी। अुन्होने दावातो और कलमोको ध्यानसे देखा। वे गदी थी। अुन्होने अेक बिस्तर खोल कर देखा। बिछौनेके कपडे धुले हुअे नही थे। बिछौनेकी चादर कअी जगह

फटी हुअी थी और कही-कही अुसकी मरम्मत करनेकी बेमनसे कोशिश की गअी थी। गद्देमे भरी हुअी रुअी बहुत दिन तक काममे लेनेसे अिकट्ठी और सख्त हो गअी थी। गद्देके नीचे बिना धुले चिथडोका अेक ढेर था। बरामदेमे अधिक विद्यार्थियोके लिअे गुजाअिश करनेके खातिर बासकी चिके लगा दी गअी थी।

अिस मुलाकातमे अुनका अिरादा पाच मिनटसे ज्यादा लगानेका नही था। परन्तु वास्तवमे अुन्होने छात्रालयका निरीक्षण करने ओर व्यवस्थापकको बाते समझानेमे पौन घटा खर्च किया।

"पेडके नीचे हाथ-मुह धोनेके कारण बहनेवाले पानीको अिकट्ठा करनेके लिअे कोअी बरतन या कोअी स्थान होना चाहिये, अन्यथा बहुतसा कीमती पानी व्यर्थ जाता है। अिसके सिवा अुससे मच्छर पैदा होते है। बिस्तरकी फटी हुअी चादरको या तो पैबन्द लगाना चाहिये था या दोहरा करके अुसकी रजाअी बना लेनी चाहिये थी। मै जब ट्रान्सवाल जेलमे था, तब मैने कम्बलोकी रजाअी बनानेका काफी काम किया था। ये कम्बल गरम और टिकाअू होते है। फटे हुअे चिथडोको रद्दी नही समझना चाहिये। अुन्हे अच्छी तरह धोकर रखना चाहिये। वे कपडोकी मरम्मतमे और कअी दूसरे कामोमे लिये जा सकते है।

"कुछ लडकोके पास मैने देखा कि सर्दीके काफी कपडे नही थे। जिनके पास अपनी जरूरतसे ज्यादा कपडे हो अुन्हे यह क्यो न सिखाया जाय कि जिनके पास काफी कपडे नही है अुन्हे वे अपने फालतू कपडे दे दे? यह परस्पर सहायताका बढिया पदार्थपाठ होगा।

"और बरामदेमे बासकी चिके? बरामदा हवा और धूप आनेके लिअे होता है। चिकोसे दोनो रुकती है। मुझे बताया गया कि अैसा अधिक विद्यार्थियोके लिअे जगह करनेको किया गया था। परन्तु जितनोके लिअे जगह है अुनसे अधिकको दाखिल ही क्यो किया जाय?"

आगे चलकर अुन्होने कहा, "ये सब छोटी बाते दिखाअी देती होगी। परन्तु सभी चीजे छोटी-छोटी बातोसे बनती है। मेरा सारा जीवन छोटी बातोसे बना है। हमने अपने लडकोको छोटी बातो पर ध्यान देना सिखानेमे जितनी गफलत की है अुतने ही हम असफल सिद्ध हुअे है। या

यो कहिये कि मैं असफल सिद्ध हुआ हू। कारण, मैंने नजी तालीमका प्रयोग शुरू तो किया, परन्तु स्वय अुसका सचालन करनेके लिअे मैं समय नही निकाल सका और अुसे दूसरो पर छोड देना पडा।

"मेरी रायमे सफाओी, सुघडता और स्वच्छताकी वृत्ति नअी तालीमका प्राण है। जिसे अुत्पन्न करनेमे कोअी खर्च नही करना पडता। जरूरत सिर्फ तेज और खुली नजरकी और कलात्मक बुद्धिकी है।" अन्तमे अुन्होने कहा, "अगर आप मुझे यह कहें कि अिस प्रकार अेक-दो लडकोंसे अधिकके साथ न्याय नही किया जा सकता, तो मैं यह कहूगा कि फिर अेक-दोको ही रखिये, अधिकको न रखिये। जितने कामकी हम अच्छी व्यवस्था कर सकते हैं अुससे अधिकका बोझ अुठाकर हम अपनी आत्मामें झूठका धब्बा लगा लेते हैं।"

—'हरिजन' में श्री प्यारेलाल

१३१. कच्चे आहारके प्रयोग

गाधीजीका प्राकृतिक चिकित्सामे विश्वास था। भोजनशास्त्रमें अुनकी बडी दिलचस्पी थी। कोअी सुझाव अैसा नही होता था जिसे पूरी परीक्षाके बाद प्रतिकूल परिणाम आये बिना ही वे निकम्मा समझकर छोड देते। वे अुन प्रयोगको स्वय अपने पर करते थे, जिससे अुन्हे प्रयोगके पक्ष-विपक्षकी प्रत्यक्ष जानकारी मिल जाय। अिस विषय पर कच्चे आहारके प्रयोगके नामसे ता० १३-६-'२९ के 'यग अिडिया' मे अुन्होने अिस प्रकार लिखा था

मैं झक्की, सनकी और पागलके नाते मशहूर हू। जाहिर है कि मैं अिस ख्यातिका योग्य पात्र हू। कारण, मैं जहा भी जाता हू, झक्की, सनकी और पागल लोग मेरे पास खिचकर चले आते है। आश्रमे अिनकी काफी सख्या है। वे अकसर साबरमती चले आते हैं। अैसी हालतमे कोअी आश्चर्य नही कि मुझे अपनी आश्र-यात्रामे अुनके बहुतसे नमूने मिल गये। परन्तु यहा मेरा विचार पाठकोसे अुस झक्की साथीका परिचय करानेका है, जिसने अपने मिशनमे जीवित श्रद्धा रखकर मुझे प्रशसक बना लिया और भोजन-सम्बन्धी अुस प्रयोगमें कूद पडनेकी प्रेरणा दी,

जो मैंने लदनमे विद्यार्थी-अवस्थामे, जब मैं २० वर्षका था, अधूरा छोड दिया था। ये राजमहेन्द्रीके सुन्दरम् गोपालराव हैं। अिनके लिअे भूमिका अेक पैमाअिश-अफसरने तैयार कर दी थी। वे मुझे विजगापट्टममे मिले थे। अुन्होंने मुझे कहा था कि सुन्दरम् गोपालराव लगभग कच्चे आहार पर रह रहे हैं। गोपालरावका राजमहेन्द्रीमे अेक प्राकृतिक चिकित्सालय है और अुसीमे वे अपना सारा समय लगाते हैं। अुन्होंने मुझसे कहा, "अपने तरीके पर कटिस्नान और अिसी तरहके अन्य अुपाय अच्छे हैं। परन्तु वे कृत्रिम हैं। रोगमुक्त होनेके लिअे भोजन तैयार करनेमे अग्निमुक्त होना आवश्यक है। हमे भी जानवरोकी तरह प्रत्येक वस्तुको अुसकी मप्राग स्थितिमे ही खाना चाहिये।"

मैंने पूछा, "आप मुझे सर्वथा कच्चा आहार लेनेकी सलाह देगे?"

गोपालरावने अुत्तर दिया, "बेशक, क्यो नही? मैंने बूढे स्त्री-पुरुषोका जीर्ण अपच रोग अकुरित अन्नवाले सतुलित भोजन द्वारा अच्छा किया है।"

मैंने हल्का-सा विरोध करते हुअे कहा, "मगर बीचकी अेक स्थिति तो होती ही होगी?"

गोपालरावने अुलटकर जवाब दिया, "अैसी कोअी स्थिति जरूरी नही। कच्चा भोजन — जिसमे मैं कच्चे स्टार्च और कच्चे प्रोटीनको शामिल कर लेता हू — पकाये हुअे भोजनसे सदा ही सुपाच्य होता है। आजमा कर देख लीजिये, आपको मालूम हो जायगा कि अुससे आपकी तबीयतमे सुधार हुआ है।"

मैंने कहा, "आप यह जोखिम अुठानेको तैयार हैं? अगर मेरा दाह-सस्कार आश्रमे होगा तो लोग मेरे शरीरके साथ आपके शरीरका भी दाह-सस्कार कर देगे।"

गोपालरावने कहा, "मैं यह जोखिम अुठानेको तैयार हू।"

"तो ठीक है, अपना भिगोया हुआ गेहू मेरे लिअे भेज दीजिये। मैं आजसे ही शुरू करता हू," मैंने कहा।

बेचारे गोपालरावने भिगोया हुआ गेहू भेज दिया। कस्तूरबाको मालूम नही था कि वह गेहू मेरे लिअे हो सकता है, अिसलिअे अुसने

वह स्वयसेवकोको दे दिया और वे अुसे चट कर गये। अिसलिअे मुझे वह प्रयोग दूसरे दिनमे आरभ करना पडा।

बादमें गाधीजीने यह प्रयोग छोड दिया, क्योंकि अिसका अुनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल परिणाम हुआ था।

१३२. सामूहिक प्रार्थनाकी अुत्पत्ति

गाधीजीने सामूहिक प्रार्थनाकी जिस प्रणालीका विकास किया अुसका महत्त्व और अुसकी क्रमिक वृद्धि अुन्होने दिसम्बर १९४५ में सोदपुर आश्रमके अपने अेक भाषणमे समझाअी थी। अुन्होने कहा, "१९३६ मे जब मै मगनवाडी (वर्धा) मे ठहरा हुआ था, तब कोअी दर्जनभर जापानी साधु मुझसे मिलने आये थे। साधुओके मुखियाने मुझे कहा कि अुनका अिरादा अपने अेक-दो शिष्योको आश्रममे भेजनेका है। मैंने यह प्रस्ताव पसन्द किया। पहले अेक आया और बादमे दूसरा। अिन दोनोमे से अेक मेरे साथ जापानसे युद्ध छिडने तक रहा था। बादमें युद्धके परिणामस्वरूप वह गिरफ्तार कर लिया गया। अिस जापानी साधुको जो भी काम दिये जाते अुन सबको वह समय पर और व्यवस्थित रूपमें करता था। कामके बीच बीचमे वह अपना समय जापानी भाषाके धार्मिक गीत गानेमे बिताया करता था। साथ साथ अेक ढोल भी बजाता रहता था। यह काम वह चक्कर काटते समय किया करता था। यह बौद्ध भजन अनन्तकी स्तुतिमे था। मैने अिसे अपनी प्रार्थनामे शामिल कर लिया। यह प्रार्थनाका प्रथम अग है।

"प्रार्थनाका दूसरा अग अेक सस्कृत श्लोक है और वह मेरे खयालमे सबको पसद आनेवाला है। अुसमे भूमिमाताकी स्तुति है, क्योंकि वह मनुष्यका पालन करनेवाली है। यदि कोअी किसी भी कारणसे अुस पर आपत्ति करे, तो मै यही कहूगा कि मै लाचार हू। मै सभी धर्मोंका स्वागत करता हू। मेरी सभी धर्मोमे श्रद्धा है, परन्तु मुझे स्वय अपना धर्म छोड देनेका कोअी कारण दिखाअी नही देता। सभव है यह सस्कृत श्लोक सांकेतिक हो, परन्तु मेरी रायमे अनेक अुत्तम विचार और कल्पनाअे साकेतिक भाषामे ही अकित है।

"तीसरा अग कुरानसे ली हुअी प्रार्थना है। अिसे काग्रेसके प्रसिद्ध नेता अब्बास तैयबजीकी पुत्रीके कहने पर सम्मिलित किया गया है। अुसका गला बडा अच्छा है। अेक वार जब वह आश्रममे आअी थी, तब अुसने आश्रमवासियोमे कुरानकी शिक्षाका प्रचार करनेकी अिच्छा प्रगट की। मै तुरन्त सहमत हो गया। अुसने कुरानकी अेक आयतको प्रार्थनामे शामिल करनेका सुझाव दिया और अैसा कर लिया गया।

"प्रार्थनाका चोथा अग जद अवस्तासे, जो पहलवी भाषामे लिखा गया है, लिया गया है। जब मै आगाखा महलमे अुपवास कर रहा था, तब डॉ० गिल्डर और डॉ० विधान राय आदि कुछ और डॉक्टर भी वहा थे। डॉ० गिल्डर पारसी है। जद अवस्ताका श्लोक अुनसे लेकर प्रार्थनामे सम्मिलित किया गया था।

"जहा तक भजनो और गीतोका सम्बन्ध हे, कोअी कडा नियम नही है। सब कुछ प्रार्थनाके समय और स्थान पर निर्भर करता है।"

१३३. 'मेरी कोअी सम्पत्ति है?'

अिस शीर्षकसे गाधीजीने 'यग अिडिया' मे अिस प्रकार लिखा था

"मुझसे जो अनेक विचित्र जिज्ञासाअे की जाती है, अुनमे से कुछ जो गुण्टूर जिलेके अेक पत्रलेखकने की है यहा देता हू। लोग कहते है कि गाधीजी जो कहते है सो करते नही। वे दरिद्रताका अुपदेश देते हैं, परन्तु सम्पत्ति रखते है। वे दूसरोसे तो गरीब हो जानेको कहते हैं, मगर खुद गरीब नही है। वे सादे और किफायतशारीके जीवनका समर्थन करते है, फिर भी स्वय बहुत पैसा खर्च करते है। अिसलिअे अिन प्रश्नोका अुत्तर दीजिये 'क्या आप अपने गुजारे और दौरेके खर्चके लिअे महासमिति या गुजरात काग्रेस कमेटीसे कुछ लेते है? लेते है तो वह रकम कितनी है? नही लेते है और जैसा लोग समझते है आप सम्पत्तिहीन है, तो आप अपनी लम्बी यात्राओ और भोजन-वस्त्रके खर्चकी क्या व्यवस्था करते है?' अिस पत्रमे अैसी ही और बहुतसी वाते हैं, परन्तु मैने अुनमे से मुख्य मुख्य वाते ले ली है।

'मेरा यह दावा अवश्य है कि मै जैसा अुपदेश देता हू वैसा ही आचरण करनेका प्रयत्न करता हू। मगर मुझे स्वीकार करना चाहिये कि अपनी जरूरतो पर मैं जितना चाहता हू अुतना कम खर्च नही कर पाता। मेरी बीमारीके बादसे मेरे भोजन पर जितना होना चाहिये अुसमे अधिक खर्च होता है। मै अुसे अेक गरीब आदमीका भोजन हरगिज नही कह सकता। मेरी यात्राओ पर भी मेरी बीमारीसे पहलेकी अपेक्षा ज्यादा खर्च होता है। मै अब लम्बी दूरीवाली यात्राअे तीसरे दर्जेमे नही कर सकता। पहलेकी तरह मै किसी साथीके बिना भी सफर नही कर सकता। अिन सब बातोका परिणाम सादगी और गरीबी नहीं, बल्कि अिससे अुलटा होता है। मै महासमिति या गुजरात कांग्रेस कमेटीसे कुछ नही लेता। परन्तु मित्र लोग मेरा यात्रा-खर्च, जिसमे भोजन-वस्त्र भी शामिल है, जुटा देते है। अकसर मेरे मित्रोमे से जो लोग मुझे बुलाते है, वे रेलवे टिकट खरीद देते है और हर जगह मेरे यजमान मुझ पर अितनी कृपा बरसाते है कि मुझे अकसर परेशानी महसूस होती है। मेरे दौरोमें लोग मुझे मेरी आवश्यकतासे कही अधिक खादी भेट करते है। अुसमे से बची हुअी खादी अुन लोगोका तन ढकनेमे काम आती है जिन्हे जरूरत है, या अुसे आश्रमके सामान्य खद्दर-भडारमे रख दिया जाता है। भडार सार्वजनिक हितमे चलाया जाता है। मेरी कोअी सम्पत्ति नही है, फिर भी मै अनुभव करता हू कि शायद मै ससारमे सबसे धनवान आदमी हू। कारण, मुझे अपने लिअे या अपनी सार्वजनिक सस्थाओके लिअे कभी धनका अभाव नही रहा। अीश्वरने सदा और समय पर अचूक मदद दी है। मुझे कअी अैसे अवसर याद है जब मेरी सार्वजनिक प्रवृत्तियोके लिअे लगभग पाअी पाअी खर्च हो चुकी थी। अैसे समय रुपया वहासे आ पहुचा जहासे मिलनेकी कोअी आशा नही हो सकती थी। अिन सहायताओने मुझे नम्र बनाया है तथा अीश्वर और अुसकी कृपालुताके प्रति मुझे श्रद्धासे भर दिया है, जो मेरा साथ घोर सकटके समयमे देंगे, यदि कभी जीवनमे अैसा सकट मेरे भाग्यमे लिखा हो। अिसलिअे ससार मुझ पर अिसके लिअे हस सकता है कि मैने अपनेको सम्पत्तिसे वचित कर लिया। मेरे लिअे तो सम्पत्ति-विहीन होना निश्चित लाभ

ही सिद्ध हुआ है। मे चाहता हू कि लोग मेरे सन्तोषमे मुझसे स्पर्धा करे। मेरे पास सबसे कीमती खजाना यही है। अिसलिअे शायद यह कहना सही है कि यद्यपि मै अुपदेश गरीबीका देता हू, फिर भी मै धनवान आदमी हू।"

१३४. अधिकार और कर्तव्य

"मैने अपनी निरक्षर किन्तु सयानी मातासे यह सीखा था कि कर्तव्यका अच्छी तरह पालन करनेसे ही मनुष्यको सारे अधिकारोकी पात्रता प्राप्त होती है और तभी वे सुरक्षित रहते है।" यह बात गाधीजीने सयुक्तराष्ट्रोकी शिक्षा, विज्ञान और सस्कृति-सम्बन्धी सस्थाके प्रमुख सचालक डॉ० जूलियन हक्सलेको भेजे गये अेक पत्रमे लिखी थी। यह पत्र गाधीजीने मअी १९४७ मे दिल्ली जाते हुअे रेलके सफरमे लिखा था, जो ससार भरके ६० प्रमुख व्यक्तियोसे किये गये अेक प्रश्नके अुत्तरमे था। प्रश्न यह था कि आपके मतानुसार 'मानव-अधिकारोके जागतिक पत्र' का क्या आधार होगा।

गाधीजीने स्पष्टीकरण किया, "चूकि मै सदा घूमता रहता हू, अिसलिअे मुझे अपनी डाक समय पर नही मिलती। आपने पडित नेहरूको पत्र न लिखा होता और अुसमे मेरे नाम भेजे आपके पत्रका हवाला न दिया होता, तो शायद आपका पत्र मेरे हाथमे ही न आता।"

अिस बात पर खेद प्रगट करके कि डॉ० हक्सले जितना लम्बा वक्तव्य चाहते है अुसके लिअे अुनके पास समय नही है, अुन्होने यह भी लिखा "परन्तु अिससे भी अधिक सत्य बात यह है कि मै प्राचीन या अर्वाचीन साहित्यके कुछ रत्नोको पढना तो बहुत चाहता हू, परन्तु पढ नही पाता। युवावस्थाके आरम्भिक कालसे ही मेरी जिन्दगी तूफानी रही है, अिसलिअे मुझे आवश्यक वाचनके लिअे अवकाश ही नही मिला।"

मानव-अधिकारोके बारेमे अपने विचारकी व्याख्या करते हुअे गाधीजीने कहा "जिन्दा रहनेका अधिकार भी हमे तभी मिलता है जब हम ससारकी नागरिकताका कर्तव्य पालन करे। यदि हम अिस

कर्तव्यका पालन नही करते तो दूसरे तमाम अधिकारोके लिअे यह साबित किया जा सकता है कि वे जोर-जबरदस्तीसे प्राप्त किये गये है और अुनके लिअे लडनेमे सार नही है।"

अिस विषय पर और अधिक प्रकाश अुस समुद्री तारसे पडता है, जो गाधीजीने स्वर्गीय श्री अेच० जी० वेल्सको भेजा था। गाधीजीका तार यह था

"आपका तार मिला। आपके पाचो लेख ध्यानसे पढ गया। क्षमा कीजिये। मै यह कहता हू कि आप गलत रास्ते पर है। मुझे विश्वास है कि मै आपसे अच्छा अधिकार-पत्र तैयार कर सकता हू। परन्तु अिससे लाभ क्या होगा? अिसका रक्षक कौन बनेगा? अगर आपका मतलब प्रचार या लोक-शिक्षणसे है, तो आप गलत सिरेसे शुरू कर रहे है। मै सही रास्ता सुझाता हू।

"आप मनुष्यके कर्तव्य-पत्रसे आरभ कीजिये। मै विश्वास दिलाता हू कि जैसे शिशिरके बाद वसत आता है, वैसे ही कर्तव्योके बाद अधिकार अपने-आप चले आयेगे। मै अनुभवकी बात लिख रहा हू। अपनी युवावस्था मैने अपने अधिकारो पर जोर देनेकी कोशिशके साथ आरभ की और मुझे जल्दी ही पता लग गया कि मेरा कोअी अधिकार नही — अपनी पत्नी पर भी नही। अिसलिअे मैने अपनी पत्नी, अपने बच्चो, अपने मित्रो, साथियो और समाज सबके प्रति अपने कर्तव्यका पता लगाकर और अुसका पालन करके जीवन आरभ किया और आज मै देखता हू कि मेरे अधिकार जितने बडे है अुतने मेरी जानकारीमे शायद और किसीके नही है। अगर यह दावा बेहद बडा हो, तो मै कहता हू कि मेरी जानकारीमे कोअी भी अैसा आदमी नही है जिसे मुझसे बडे अधिकार प्राप्त हो।"

१३५. महात्मा गांधीकी शिष्टता

वापू शिष्टताकी मूर्ति थे, बच्चे और बूढे, अमीर और गरीब सबके प्रति अुनका व्यवहार अत्यन्त शिष्ट होता था। अुनके चरित्रके अिस पहलूके दृष्टान्तके रूपमे जिराल्डा फॉबिसने कलकत्तेके 'कैथोलिक वर्ल्ड' मे अेक घटनाका वर्णन किया है। वे पहले गाधीजीसे कभी नही मिली थीं। वे अिग्लैण्डसे बम्बअी पहुची और अुन्हे मालूम हुआ कि अुन्हे दूसरी ही गाडीसे लाहौर चले जाना है। दूसरे दिन तीसरे पहर वे गाडीमे बैठनेको स्टेशन गअी। अेक कुली अुनका बिस्तर और सामान लिये जा रहा था। रास्तेमे अुन्हे कुछ देर लग गअी थी। अत जब वे पहुची गाडी चलनेकी तैयारीमे थी। जैसा सबको मालूम है, भारतमे मर्दो और औरतोके लिअे अलग अलग डिब्बे होते है। गाडीमे स्त्रियोका दूसरे दर्जेका अेक ही डिब्बा था, लेकिन अुसकी पाचो पटरिया रुकी हुअी थी। वे जगहकी तलाशमे प्लेटफार्म पर अिधर अुधर घबराअी हुअी भाग रही थी। लेकिन कही जगह नही थी। अुनकी नजर अेक खाली डिब्बे पर पडी। अुस पर पहला दर्जा लिखा हुआ था। परन्तु अुन्होने निश्चय कर लिया कि अधिक किराया चुका दूगी और गार्डको प्रबध कर देनेके लिअे अिधर अुधर देखने लगी। अुन्हे जल्दीमे डिब्बेके दूसरे सिरे पर दरवाजेमे लटकती हुअी वह बडी तख्ती नजर नही आअी, जिस पर लिखा था कि डिब्बा 'सुरक्षित' है।

वर्णन आगे बढता है "दरवाजेके सामने हिन्दू सज्जनोकी अेक मडली खडी बाते कर रही थी। वे अुनकी ओर देखनेको मुडे। अुनमे से अेकने अुन्हे रोककर पूछा कि क्या किसी सहायताकी जरूरत है। अुसका कद छोटा, चेहरा सरल और मुख दन्तहीन था, जिससे हसने पर अुसकी हसी भयानक लगती थी। गार्डने चेतावनीकी सीटी लगाअी। वह छोटा आदमी अेकदम मुडा और अुसने अधिकारपूर्ण सकेत किया। गार्डने, जो झडी दिखानेवाला ही था, बदलेमें अपनी सीटी बजाअी। अिन परेशान बहिनने अपनी स्थिति समझाअी और हिन्दू सज्जनोकी मडली अुनके चारो ओर होकर घबराहटके चिह्न प्रगट करने लगी। अुस छोटे आदमीने अपनी तहे टटोलकर अेक टिकट निकाला और अुसे महिलाके हाथमे

पकडा कर अुसका टिकट मागा। तुरन्त चारो ओरसे विरोधकी पुकार अुठी। अुस छोटेसे आदमीने सबको चुप कर दिया। भीड जमा हो गअी। स्टेशन-मास्टर दौडकर यह देखने आया कि क्या मामला है। अुस छोटेसे आदमीने समझाया और मजदूरसे कहा कि नये मुसाफिरका सामान डिब्बेके अन्दर रख दो और मेरा बाहर निकाल दो।

"अुसने महिलासे कहा, 'बात यह है कि मै पहले दर्जेमे सफर नही करना चाहता था, मगर मेरे मित्रोने मुझे बताये बिना यह जगह खरीद ली। मुझे अब जगह बदलनेमे खुशी है। मै भी लाहौर जा रहा हू और आप भी लाहौर जा रही है। अिसलिअे कोअी दिक्कत नही होगी।'

"मिशनरी महिला अितनी अधिक विस्मित हुअी कि अुसने कोअी विरोध न करके परिस्थितिको स्वीकार कर लिया और बिना दातवाला आदमी प्रसन्न होकर गाडीके पिछले हिस्सेकी ओर चल दिया। अुसने मित्रोके रोषपूर्ण विरोधकी कोअी परवाह नही की। भीड चिल्लाती और हसती रही और स्टेशन-मास्टर घबराया हुआ कहने लगा कि अुसे अब गाडीको रवाना करना ही पडेगा।"

१३६. बच्चोके साथ सैर

मेरे जीवनका अेक सबसे बडा सुख यह रहा है कि मै समय समय पर, थोडे ही दिन सही, सेवाग्राममे रहा हू जहा गाधीजी रहते है। आश्रमवासियोके दैनिक जीवनके कअी विशेष पहलू है। परन्तु अुनमे से मुझे कोअी दो चुनने पडे तो मै सुबह-शामकी प्रार्थनाका समय और गाधीजीकी सैरका समय चुनूगा। सैरके वक्त अुनके साथ सदा आश्रमके कुछ जवान और बूढे निवासी और अेक-दो दर्शनार्थी होते है, जो सयोगवश वहा अुपस्थित हो। किन्तु अेक बार गाधीजीकी सुबहकी सैरमे साथ जाकर मैने जो कुछ देखा अुसका वर्णन यहा मै करूगा।

अिस विशेष अवसर पर जो लोग गाधीजीके साथ थे अुनमे दो बच्चे भी थे। अेक अपनी माकी गोदमे था और दूसरा अुसके पीछे पीछे चल रहा था। अकस्मात् छोटा गोदवाला बच्चा चिल्ला अुठा और माने अुसे शान्त करनेका प्रयत्न किया। परन्तु अुसे सफलता न मिली। तब

गाधीजीने अपनी लम्बी लकडी (जिसे वे सैरके समय साथ ले जाते है) मुझे सौंप कर बच्चेको स्वय अपनी गोदमे ले लिया, अुसके गालोको हल्केसे छुआ और चमकती हुअी आखोसे मुस्कुराये। और वह प्यारा बच्चा चुप हो गया। अितना ही नही, वह भी अुतनी ही प्रसन्नतासे मुस्कुरा दिया! माको गाधीजीके मातृ-कौशल पर आश्चर्य हुआ।

तब दूसरा बच्चा, जो अपनी माके पीछे पीछे चल रहा था, अुसके पाससे भाग गया और गाधीजीका दाहिना हाथ पकड कर अुन्हे अेक फूलके पास ले गया जो सडकके पास अुगा हुआ था और अेक आविष्कारकके हर्षके साथ बोला, "बापू, यह फूल कितना सुन्दर है!"

गाधीजीने मुस्कुराकर अुत्तर दिया, "सचमुच बडा सुन्दर है।"

ठीक अुसी समय अेक कुत्ता पाससे गुजरा। बच्चेने कुत्तेकी तरफ अिशारा करके कहा, "बापू, बापू, कुत्तेके दुम है।"

"अैसी बात है?" गाधीजीने बच्चेकी सी निर्दोषतासे अुलट कर पूछा। और फिर क्षणभर रुक कर अुन्होने पूछा, "मगर तुम्हारे भी दुम है न?"

बच्चा हसा और बोला, "आप अितने बूढे और बडे है, फिर भी आप यह नही जानते कि मनुष्यके दुम नही होती। आप सचमुच कुछ नही जानते।"

गाधीजी और हम सब जोरसे हस पडे।

सच बात यह है कि गाधीजी बच्चोके बीच होते है तब अुनकी तरह बच्चा ही बन जाते है। वे भूल जाते है कि वे सत्तर वर्षसे अधिकके हो गये है और अुन्होने भारत और ससारके कल्याणके लिअे यज्ञार्थ कार्य करनेका भार अपने सिर पर ले रखा है। मैने जब जब अुन्हे बच्चोके बीच देखा है तब तब पेलेस्टाअिनके अुस दृश्यका चित्र मेरे सामने खडा हो जाता है, जो अुस समय अुपस्थित होता था जब अीसा मसीह वहाकी गलियोमे से गुजरते थे और बच्चे अुनके पावोके अिर्द-गिर्द जमा हो जाते थे और अुनकी प्रेमभरी आखोमे आखे गाड कर देखने लगते थे।

—'पुष्पा' मे अेम० अेन० जी०

१३७. गुरु और चेला

१९०९ मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके लाहौर अधिवेशनमे गोपाल कृष्ण गोखलेने यह कहा था

"प्रतिनिधि भाअियो जिस मामलेमें श्री गांधीका जो अमर योगदान रहा है अुसे जाननेके बाद मुझे कहना होगा कि किसी भी समय, यहा अथवा भारतीयोंके अन्य किसी भी सम्मेलनमे किसी भारतीयके लिअे अुनका नाम गहरी भावना और गर्वके बिना लेना संभव नहीं होगा।"

अिस पर सारी सभा खडी हो गअी और अुसने श्री गांधीके नामका तीन बार हृदयपूर्वक और अत्यंत अुत्साहसे जय-जयकार किया।

"सज्जनो, यह मेरे जीवनका अेक सौभाग्य है कि मैं श्री गांधीको निकटसे जानता हू और मैं कह सकता हू कि अुनसे अधिक अुदात्त और अुच्चात्माने अिस पृथ्वी पर आज तक जन्म नहीं लिया है। (तालियां और जय-जयकार) श्री गांधी अुन मनुष्योंमें से है, जो स्वयं तपस्यापूर्ण और सादा जीवन व्यतीत करते है और अपने मानव-बन्धुओंके लिअे प्रेम, सत्य और न्यायके समस्त अुच्चतम सिद्धान्तोंके प्रति जिनकी भक्ति होती है और अिस कारण जिन्हें देखते ही दुर्बल बन्धुओ पर जादूका-सा असर होता है और अुन्हें नअी दृष्टि प्राप्त होती है। यह अैसा पुरुष है जिसे मनुष्योंमे मानव, वीरोंमे वीर और देशभक्तोंमें देशभक्त कहा जा सकता है, और हम अुचित रूपमें कह सकते है कि अुनमे भारतीय मानवता अिस समय सचमुच सर्वोच्च शिखर पर पहुच गअी है।"

अुधर मोहनदास करमचन्द गांधीने १९२१ मे यों लिखा था

"यह मिलन अेक पुराने मित्रसे, या यह कहना और भी अच्छा होगा कि मातासे लम्बे वियोगके बाद हुआ मिलन था। अुनकी प्रेमभरी मुखमुद्राने अेक क्षणमे मेरे मनका सारा भय और संकोच दूर कर दिया। मेरे आने और मेरी दक्षिण अफ्रीकाकी प्रवृत्तियोंके बारेमें अुन्होंने जिस बारीकीसे पूछताछ की, अुससे वे तुरन्त मेरे हृदय-मंदिरके देवता बन गये,

और अुस घडीसे फिर कभी गोखलेने मुझे अपने स्मरणसे ओझल नही किया। १९०१ मे जब मै दक्षिण अफ्रीकासे दुबारा लौटा तब हम और भी नजदीक आये। अुन्होने मानो 'मुझे अपने हाथमे ले लिया' और मुझे गढना शुरू कर दिया। मै कैसे बोलता हू, क्या पहनता हू, कैसे चलता हू और क्या खाता हू — हर बातकी चिन्ता वे रखते थे। मेरी माने भी शायद ही मेरी अितनी चिन्ता की हो। जहा तक मै जानता हू हम दोनोके बीचमे कोअी दुराव-छुपाव नही था। सचमुच यह पहली दृष्टिमे ही प्रेमसूत्रमे बध जानेका अुदाहरण था और १९१३ मे सख्त तनाव पडने पर भी वह प्रेम कायम रहा। अेक राजनीतिक कार्यकर्तामे मै जो गुण देखना चाहता था, वे सब अुनमे दिखाअी देते थे — वे स्फटिक जैसे शुद्ध, गाय जैसे गरीब और शेरकी तरह बहादुर थे, अुदार अितने कि अुनके अिस गुणको दोष भी मान सकते है। हो सकता है किसीको अिन गुणोमे से अेक भी गुण अुनमे नजर न आया हो। पर मुझे अिसकी परवाह नही। मेरे लिअे अितना काफी था कि मुझे अुनमे कही अगुली दिखाने लायक भी खामी नजर नही आअी। मेरे लिअे राजनीतिक क्षेत्रमे वे सम्पूर्ण पुरुष थे और आज भी है। अिसका कारण यह नही था कि हमारे कोअी राजनीतिक मतभेद नही थे। सामाजिक रीत-रिवाज, जैसे विधवा-विवाह, सम्बन्धी विचारोमे हमारे बीच ठेठ १९०१ मे भी मतभेद था। पाश्चात्य सभ्यताके मूल्याकनके सम्बन्धमे भी हमे अपने बीच कुछ मतभेद मालूम हुआ था। अहिसा-सम्बन्धी मेरे अुग्र विचारोसे अुनका स्पष्ट मतभेद था। परन्तु अिन मतभेदोकी परवाह न तो वे करते थे, न मै करता था। हमे कोअी चीज जुदा नही कर सकती थी। आज वे जीवित होते तो क्या होता, अिस प्रश्नको लेकर कल्पनाकी तरगे दौडाना मै पाप और नास्तिकता समझता हू। मै तो अितना ही जानता हू कि आज भी मै अुनकी ही छत्रछायामे काम कर रहा होता।"

१३८. प्राणीमात्र अेक है

देर हो रही थी, फिर भी गांधीजी सोनेसे पहले कुछ रुअी धुनकर पूनियां बना लेना चाहते थे। मीरावहन धुनकी आदि तैयार कर देना चाहती थी। जल्दी होनेके कारण अुन्होंने अेक स्थानीय स्वयंसेवकसे कह दिया कि बागसे कुछ बबूलकी पत्तियां ले आये। अिन पत्तियोंकी जरूरत धुनकीकी तांत पर घिसनेके लिअे होती है।

लडका अेक बडा-सा गुच्छा ले आया और जब अुसने अुसे मीरा-बहनके हाथमें सौंपा तो अुन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सारी छोटी छोटी पत्तियां सिकुड गअी थीं। अुन्हें लेकर वे गांधीजीके कमरेमें गअीं और कहने लगीं, "देखिये तो, बापू, छोटी पत्तियां सब सो गअी हैं।"

गांधीजीने जवाब देनेके लिअे सिर अुठाया तो अुनकी आंखोंमें रोष और दयाकी झलक थी। अुन्होंने कहा, "सो तो गअी ही हैं। वृक्ष हमारी ही तरह सजीव प्राणी हैं। वे हमारी तरह जीते हैं, सांस लेते हैं और खाते-पीते हैं। हमारी भांति अुन्हें भी नींदकी जरूरत होती है। रातको जब पेड आराम ले रहा हो तब जाकर अुसकी पत्तियां तोडना बडी बुरी बात है। और तुम अितनी सारी पत्तियां क्यों लाअी हो? थोडीसी पत्तियोंकी ही जरूरत थी। अवश्य ही तुमने सुना होगा कि मैंने बेचारे फूलोंके बारेमें कलकी सभामें क्या कहा था। लोग जब ढेरों कोमल फूल तोड लाते हैं, मेरे अूपर फेंकते हैं और मेरे गलेमें डालते हैं तब मुझे अतिशय दुःख होता है। क्या किसीको अिस तरह भेज कर किसी पेडको अैसे समय जब अुसने नींदमें पत्तियां सिकोड ली हों छेडना और कष्ट देना विचारहीन बात नहीं थी? हमें अपने और शेष सजीव सृष्टिके बीच अधिक सजीव सम्बन्ध अनुभव करना चाहिये।"

मीराबहनने शरमसे सिर झुका कर कहा, "हां, बापू, मैं जानती हूं — समझती हूं। यह मैंने बडा विचारहीन कृत्य किया। आअिन्दा मैं स्वयं जाअूंगी और कोशिश करूंगी कि फिर कभी अंधेरा पडनेके बाद पेडोंके पत्ते तोड कर अुनकी शांतिपूर्ण नींदमें खलल न डालूं।"

जब बादमें मीराबहनने यह घटना लिख डाली तब गांधीजीने अुस पर यह टिप्पणी लिखी

"पाठक अिसे निरी भावुकता न समझें और न मुझ पर या मीरा-बहन पर बुरी तरह असंगत होनेका दोष लगायें कि जब हम मनों साग-भाजी खा जाते हैं, तो हमारा रातको सोते हुअे पेडकी पत्तियां न तोडनेकी बात करना वैसा ही है जैसा कि चींटीके मरने पर नाक-भौं सिकोडना और अूंटको निगल जाना। 'अेक कसाअी भी किसी हद तक दयालु हो सकता है।' कोअी आदमी भेडका मांस खाता है, अिसलिअे वह सोती हुअी भेडोंके रेवडको कत्ल नहीं कर डालता। पौरुषका सार यह है कि पशु-जगत और वनस्पति-जगतके सभी प्राणियोंका ज्यादासे ज्यादा खयाल रखा जाय। जो सुखकी खोजमें दूसरोंका खयाल नहीं रखता, वह जरूर अिन्सानसे कुछ घटिया है। वह विचारहीन है।"

१३९. सिंहकी गुफामें

जब १९१७ में गांधीजीने चम्पारन (बिहार) के किसानोंकी हालतकी जांच करने और निलहोंके खिलाफ अुनकी शिकायतें समझनेके लिअे वहां कदम रखा, तब निलहे लोगोंने गांधीजीके खिलाफ बडा शोर मचाया और अेंग्लो-अिंडियन अखबारोंने पूरी तरह अुनका समर्थन किया। निलहोंने गांधीजीको फौरन जिलेसे निकाल देनेकी मांग की और यहां तक संकेत किया कि अगर अधिकारियोंने अुन्हें आगे बढनेसे रोक नहीं दिया तो हम कानूनको अपने हाथमें ले लेंगे। अब यह अितिहासकी बात हो गअी है कि अधिकारियोंने अिस आन्दोलनसे दबकर किस प्रकार गांधीजी पर यह नोटिस तामील किया कि वे तुरन्त जिलेको छोड कर चले जायं, किस प्रकार गांधीजीने अुनकी बात माननेसे अिनकार कर दिया, किस प्रकार अुन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और मुकदमेके लिअे पेश होनेको कहा गया और अन्तमें किस प्रकार यह समझ लेने पर कि अुनको सजा देनेके कैसे गंभीर परिणाम होंगे, वाअिसरॉयने हस्तक्षेप करके यह मुकदमा वापस कराया।

घटनाचक्रके अिस प्रकार घूमनेसे निलहोको कैसी चिढ हुअी होगी, अिसकी अच्छी तरह कल्पना की जा सकती है, और अुनमे से कुछ लोग प्रत्यक्ष कार्रवाअी करनेकी धमकिया देने लगे। प्रान्तके गवर्नरसे गाधीजीकी जिस दिन मुलाकात होनेवाली थी अुसके पहले दिन 'पायोनियर' ने मोतीहारी कारखानेके मैनेजर और अेक प्रमुख निलहे मि० डब्ल्यू० अेस० अविनका अेक लम्बा पत्र प्रकाशित किया, जिसमे अुन्होने यह लिखा था

"मेरा विश्वास है कि मि० गाधी अेक नेक अिरादेवाले परोपकारी आदमी है, मगर वे झक्की और धुनी आदमी है और अुन पर दक्षिण अफ्रीकाकी अपनी आशिक सफलताका और अिस विश्वासका भूत बुरी तरह सवार है कि भगवानने अुन्हे अन्यायको मिटानेके लिअे पैदा किया है। वे यह समझ ही नही सकते कि अुन्हें वकील और मुखतार लोग महाजन और साहूकार तथा होमरूलवाले राजनीतिक लोग अपना अस्त्र बना रहे हैं। चम्पारनके निलहोकी सम्पत्तिकी रक्षाके लिअे अेक और शायद अेकमात्र कार्रवाअी निहायत जरूरी है और वह है मि० गाधीको जिलेसे हटा देना। निलहोकी अत्यन्त सहनशीलताने अब तक किसी गभीर फसादको भडक अुठनेसे रोक रखा है। परन्तु सरकार निलहोकी रक्षाका अुपाय नही करेगी, तो अुन्हे मजबूर होकर अपनी रक्षा आप करनेके लिअे जरूरी कदम अुठाने पडेगे।"

परन्तु गोरे निलहोकी धमकिया कुछ काम नही आअी, क्योकि गाधीजीने दबनेसे अिनकार कर दिया और अन्तमें बिहार सरकारको किसानोके कष्टोकी जाचके लिअे अेक कमीशन मुकर्रर करनेको विवश होना पडा।

१४०. कर्ममे अीश्वर

मशहूर अीसाअी पादरी डॉ० जॉन मॉट जब दिसम्बर १९३८ मे गाधीजीसे मिलने सेगाव आये तब अुनसे पूछा "कठिनाअियो, शकाओ और सदेहोमे आपकी आत्माको सबसे गहरा सन्तोष किस चीजसे मिला है?"

गाधीजीका अुत्तर था, "अीश्वरमे जीते-जागते विश्वाससे।"

डॉ० मॉट आपको अपने जीवन और अनुभवोमें अीश्वरका असदिग्ध साक्षात्कार कब हुआ है?

गाधीजी मै समझ गया हू और मेरा विश्वास है कि अीश्वर सशरीर कभी दिखाअी नही देता, परन्तु कर्ममे दर्शन देता है, अधिकसे अधिक अधकारकी घडीमे भी हमारी रक्षाकी बात केवल अुसी तरह समझमे आ सकती है।

डॉ० मॉट आपका अभिप्राय यह है कि अैसी बाते होती है जो अीश्वरके बिना शायद हो ही नही सकती?

गाधीजी हा। वे अचानक और अनजाने होती है। अेक अनुभव मेरी स्मृतिमे बिलकुल स्पष्ट है। अुसका सम्बन्ध अछूतपन मिटानेके लिअे मेरे २१ दिनके अुपवाससे है। पहली रातको जब मै सोया तो मुझे जरा भी खयाल नही था कि दूसरे दिन सुबह ही अुपवासकी घोषणा करनी पडेगी। रातको बारह बजेके लगभग मुझे अचानक कोअी जगा देता है और कोअी आवाज कह नही सकता कि भीतरसे या बाहरसे कानमे कहती है, 'तुझे अुपवास करना होगा।' मै पूछता हू, 'कितने दिनका?' आवाज फिर कहती है, '२१ दिनका।' मै पूछता हू, 'वह कब शुरू होगा?' वह कहती है, 'कल शुरू कर दो।' यह निर्णय करनेके बाद मैं चैनसे सो गया। मैंने प्रात कालीन प्रार्थनाके बाद तक अपने साथियोसे कुछ भी नही कहा। मैंने अपने निश्चयकी घोषणा करनेवाला अेक कागजका पर्चा अुनके हाथमे रख दिया और मुझसे बहस करनेको मना कर दिया, क्योकि मेरा निश्चय अटल था। डॉक्टरोका खयाल था कि अुपवास पूरा होने तक मै जिन्दा नही बचूगा। परन्तु मुझे भीतरसे

कोअी कह रहा था कि मै बच जाअूगा और मुझे आगे बढना चाहिये। अुस तारीखसे पहले या पीछे मेरे जीवनमे अिस प्रकारका अनुभव कभी नही हुआ।

डॉ० मॉट तो आप निश्चयपूर्वक कह सकते है कि अैसी बातका अुद्गम कोअी बुरी शक्ति नही हो सकती?

गांधीजी बेशक। मैने कभी नही सोचा कि वह मेरी भूल थी। मेरे जीवनमे कभी कोअी आध्यात्मिक अुपवास हुआ हो तो वह यह था। अिन्द्रियाकी तृप्तिके त्यागमे कोअी बात जरूर है। जब तक आप शरीरका बलिदान करनेको तैयार न हो तब तक अीश्वरके प्रत्यक्ष दर्शन नही हो सकते। अीश्वरके निवास-स्थानके रूपमे शरीरका जो हक है वह अुसे देना अेक बात है और हाड-मासके पुतलेके रूपमे जो अुसे मिलना चाहिये अुससे अुसे वंचित रखना दूसरी बात है।

१४१. 'भिक्षुराज'

अपनी यात्राओमे गांधीजी अेक कुशल भिखारीका काम खूब अच्छा करते थे। लगभग सभी स्टेशनो पर भीड अुनका स्वागत करती थी। महात्माके क्षणिक दर्शनके लिअे लोग अुनके डिब्बेकी तरफ दौडते आते थे। भीडके भक्तिपूर्ण अभिनन्दनको निष्क्रिय रूपमे स्वीकार करके अैसे सुनहरे अवसरोको वह महान राष्ट्रीय भिक्षुक हाथमे कैसे जाने दे सकता था? अुन्हे अपने दर्शनोकी 'कीमत' तो वसूल करना ही चाहिये। अिसलिअे अुनका भीखका हाथ तुरत खिडकीमे बाहर निकल आता था। गांधीजी पुकार कर कहते, "हरिजनोके लिअे पैसा!" लोगोके चेहरो पर हर्षका भाव झलक अुठता और वे सतोष अनुभव करके अुनकी हथेली पर तांबेके सिक्के रख देते। जब अेक हाथ भर जाता तो वे दूसरा फैला देते। अिस प्रकार गांधीजी रातको भी हर स्टेशन पर मजेसे अच्छी रकम अिकट्ठी कर लेते थे। गांधीजी अेक होशियार और अनुभवी भिखारी ठहरे। अुन्होने खास ध्यान रखकर हर भाषामें 'पैसे' का वाचक शब्द सीख लिया था। अगर भीड अुन्हे 'महात्मा गांधीकी जय' के गगनभेदी नारे लगाकर जगा देती तो वे अुन पर

विगडते नही थे। अेक गरीब राष्ट्रका भिखारी जब लोग अुसे 'भिक्षा' देनेको शोर मचा रहे हो तब कैसे सोया रह सकता था? वे चुपचाप अुठ वैठते, खिडकी बन्द होती तो अुसे खोल देते और चदा जमा करनेका अपना काम शुरू कर देते थे।

मैने वे दृश्य देखे है जब कभी कभी अतिशय थकानके मारे गाधीजी किसी स्टेशन पर जाग नही पाते थे। चद आदमी अुनके डिब्वेमे घुस आते थे, अुनके दलके आदमियोके मना करने पर भी गाधीजीको झझोडकर जगा देते थे और अुनके हाथोमे रुपया-पैसा देकर 'महात्मा गाधीकी जय' बोलते हुअे चले जाते थे। गाधीजी मुस्कुरा देते थे, फिर पटरी पर लेट जाते थे और गहरी नीदमे डूव जाते थे।

जव किसी मामूली भिखारीको कोअी सिक्का मिलता है तो अुसे खुशी होती है, परन्तु अिस अजीब भिक्षुराजके मामलेमे लोग अुसके हाथोमे सिक्के रखकर स्वय खुशी महसूस करते है। कभी कभी कोअी कमजोर वुढिया फटे-पुराने कपडे पहने बडी मुश्किलसे भीडमे होकर गाधीजी तक पहुच जाती, अुनकी हथेलीमे अेक पैसा रखती, थोडी देर तक ध्यानसे भक्तिपूर्वक अुनकी ओर देखती रहती और वापस चली जाती।

शायद १९३७ के शुरूकी वात होगी। अुस समय काग्रेस पदग्रहण करने या असहयोग करनेकी दुविधाके वीच झूल रही थी। अेक पत्रकारने अुत्सुकतापूर्वक गाधीजीसे पूछा, "बापूजी, क्या काग्रेस पद ग्रहण करेगी?" गाधीजीने बडे मजेसे जीभ दवाकर पूछा, "क्यो, तुम मत्री वनना चाहते हो?" बेचारा सवाददाता झेप गया और पीछे हटने लगा। परन्तु गाधीजी अुसे अितनी आसानीसे छोडनेवाले नही थे। अुन्होने पूछा "क्या मुझे अपना टोप भिक्षापात्रके तौर पर अिस्तेमाल करने दोगे?" अवश्य ही टोप फौरन दे दिया गया और गाधीजीने अुसी क्षण अुसे अुसके मालिकके सामने ही फैला कर भिक्षा मागनेकी शुरुआत कर दी। मत्रीपदके अुम्मीदवारको हसीके वीच कुछ चादीके सिक्के अुसमे डालने पडे। यह अर्धनग्न फकीर भी कैसा अनोखा भिखारी था!

कहा जाता है कि भिखमगोकी कोअी पसन्द नही हो सकती। मगर यह नियम गाधीजीको लागू नही होता था। वास्तवमे अुनके साथ

अुलटी ही वात थी। अगर आप मालदार है तो वे आपसे सोना-चादी मागेंगे, अगर गरीव है तो अीमानदारीका अेक पैसा ही ले लेगे। अगर रुपया-पैसा आप नही दे सकते तो वे आपसे हाथकता सूत ले लेगे, अगर आप यह भी नही कर सकते तो आपको अुपवास करके वचतके दाम चुकाने होगे। गाधीजी अैसे भिक्षुक थे जिनसे कोअी वच नही सकता था। वे सख्तीसे काम लेनेवाले आदमी थे। फिर भी वे अत्यन्त मीठे, अत्यन्त स्नेहपूर्ण और अत्यन्त क्षमाशील थे।

—'गाधीजी', श्री डी० जी० तेदुलकर और विट्ठलभाअी के० झवेरी, १९४८

१४२. बापूकी अहिंसाका अेक पुराना दृष्टान्त

१८९७ में दक्षिण अफ्रीकामे गोरोकी अेक भीडने महात्मा गाधी पर हमला करके अुन्हे बेरहमीसे घायल कर दिया था। अुस समय अुन्होने अपने आक्रमणकारियो पर मुकदमा चलानेसे अिनकार करके सार्वजनिक रूपमे जगतके सामने अहिंसाका अेक ज्वलत अुदाहरण अुपस्थित किया था। अुस आक्रमणकी कहानी अुन्होने स्वय अिस प्रकार वयान की है

"अेक भीड हमारे पीछे हो गअी। ज्यो ज्यो हम अेक अेक कदम आगे वढते जाते थे, त्यो त्यो भीड वढती जा रही थी। जव हम वेस्ट स्ट्रीट पहुचे तव भीड जवरदस्त हो गयी थी। अेक हट्टे-कट्टे शरीरवाला आदमी मि० लॉटनको पकडकर मुझसे दूर खीच ले गया। अिसलिअ वे मेरे साथ साथ चलनेकी स्थितिमे नही रहे। भीड मुझे गालिया देने लगी और मुझ पर पत्थर और जो भी कुछ अुसके हाथ लगा वह वरसाने लगी। अुन लोगोने मेरी पगडी अुतारकर फेक दी। अिसी वीच अेक मोटा-सा आदमी मेरे पास आया और मेरे मुह पर थप्पड जमाकर अुसने मुझे लाते लगाअी। मै वेहोश होकर गिरने ही वाला था कि मैने नजदीकके मकानकी रेलिंग पकड ली और अपनेको सभाले रहा। मैने थोडी देर दम लिया और जव वेहोशीका असर मिटा तो अपने रास्ते पर चल पडा। मैने घर पहुचनेकी आशा लगभग छोड

दी थी। परन्तु मुझे अच्छी तरह याद है कि तब भी मेरा हृदय मुझ पर हमला करनेवालोको दोप नही दे रहा था।"

जब नेटाल सरकारके बडे वकील मि० अेस्कम्बने गाधीजीसे कहा, "हम चाहते है कि अपराधी सजा पाये। क्या आप अपने आक्रमणकारियोमे से किसीको पहचान सकते ह?" तो गाधीजीने अुत्तर दिया "शायद मै अुनमे से अेक-दोको पहचान सकू। परन्तु यह बातचीत आगे बढे अिसमे पहले ही मै आपको तुरत कह देता हू कि मैने अपने आक्रमणकारियो पर मुकदमा न चलानेका सकल्प कर लिया है। मै यह निर्णय नही कर सकता कि वे कसूरवार है। अुन्हे जो कुछ जानकारी थी वह अुनके नेताओसे मिली थी। अुनसे यह निर्णय करनेकी आशा नही रखी जा सकती कि वह जानकारी सही है या गलत। जो कुछ अुन्होने मेरे बारेमे सुना था यदि वह सब सच था, तो अुनके लिअे अुत्तेजित होकर क्रोधके आवेशमे कुछ न कुछ बेजा काम कर बैठना स्वाभाविक था। मै अुसके लिअे अुन्हे दोष नही दूगा। लोगोकी भडकी हुअी भीडोने सदा अिसी तरह न्याय करनेकी कोशिश की है। अगर किसीको दोप दिया जाय तो गोरोकी कमेटीको, स्वय आपको और अिसलिअे नेटालकी सरकारको दिया जाना चाहिये। रायटरने तोड-मोडकर जो भी विवरण भेजा हो, लेकिन जब आप जानते थे कि मै नेटाल आ रहा हू तो यह आपका और कमेटीका धर्म था कि मुझसे पूछ कर मेरी भारतकी हलचलोके बारेमे अपनी शका समाधान करते, मेरा कहना सुनते और फिर अुस हालतमे जो भी ठीक मालूम होता वह करते। मैं आप पर या कमेटी पर तो हमलेके लिअे मुकदमा चला नही सकता। चला सकू तो भी मे कानूनकी अदालतसे राहत प्राप्त नही करना चाहूगा। आपको नेटालके गोरोकी हितरक्षाके लिअे मुनासिब मालूम हुअी वह कार्रवाअी आपने की। यह अेक राजनीतिक मामला है। यह अब मेरा काम है कि मे आपसे राजनीतिक क्षेत्रमे लडकर आपको और गोरोको विश्वास करा दू कि भारतीय लोग ब्रिटिश साम्राज्यकी आबादीका अेक बडा हिस्सा है और वे गोरोको जरा भी हानि पहुचाये बिना अपने स्वाभिमान और अधिकारोकी रक्षा करना चाहते है।"

१४३. आदर्श कैदी

आचार्य काका कालेलकर, जो १९३० मे यरवडा जेलमे गाधीजीके साथी थे, अपनी दिनचर्याका वर्णन अिस प्रकार करते है

हम तडके ही चार बजे जब तारे अपनी पूरी शानमे चमकते होते है अुठ जाते है। ४-२० पर हमारी प्रार्थना शुरू हो जाती है। प्रार्थनाके बाद गीतापाठ होता है। पाठ समाप्त हो जाने पर मै अपनी सुबहकी सैरको निकल जाता हू और गाधीजी आधा घटा लिखने-पढनेमे बिताकर मेरे साथ हो जाते है। गीता, आश्रम-आदर्श, आहारकी समस्या, चरखा, मेरी शिथिलता आदि सैरके समय चर्चाके साधारण विषय होते है। ठीक ६ बजे हम अपने नाश्ते पर बैठते है। गाधीजीके नाश्तेमे दही (जब वे लेते है) और पानीमे भिगोये हुअे खजूर होते है। जब तक हमारा नाश्ता खतम होता है, बकरिया दूध निकलवाने आ जाती है। गाधीजीके लिअे अुनके बच्चोका बेसब्रीसे दूध पीनेका और कभी कभी बीच बीचमे ठहर कर मिमियानेका दृश्य सदा आनन्ददायक होता है। माकी हल्की-सी लात खाकर वह क्रिया बद हो जाती है। क्षणभर भी देर किये बिना गाधीजी चरखे पर बैठ जाते है और चरखा भारतके दुख-दर्दोकी दर्दभरी कहानी दोहराने और मुक्तिकी निश्चित आशा दिलाने लगता है। आपने कभी किसी सर्वांगपूर्ण व्यवस्थित चरखेके शोकातुर स्वर सुने है? अिस महाकाव्यकी कथा अेकके बाद दूसरे पदके क्रममे जारी रहती है और अुनका प्रभाव आपके मन पर छाता जाता है।

पासमे चरखेकी गुनगुनाहट होती रहे तो कभी अकेलापन महसूस नही होता। बीचमें अेक दो बार जरूरी कामोके लिअे रुकनेके अलावा यह क्रम साढे दस बजे तक चलता रहता है। सात बजेके करीब वे नीबू और नमक डालकर गरम पानीकी अेक प्याली लेते है। साढे दस बजे वे नहाने चले जाते है। मै आपसे यह कहना भूल रहा हू कि वे हर रोज सुबह कुछ समय काव्यपूर्ण प्रकार करनेवाली योजना पर बिताते

है। आध घटेके कामसे अुन्हे अपनी दिनभरकी जरूरतसे ज्यादा पूनिया मिल जाती है। अेक बार सरदार वल्लभभाअीकी पूनिया खतम हो गअी, तो अुन्होने सुपरिन्टेन्डेन्टके मारफत कुछ पूनिया मगवाअी। मेरा भडार सदा थोडा ही रहता था। गाधीजीने पीजनका अपना समय दुगुना कर दिया। अिसमे अुन्हे अुतना ही आनन्द आता था जितना माको अपने प्यारे बच्चोके लिअे भोजन बनानेमे आता है।

११ बजेके करीब हम दोपहरका खाना खाया करते थे। अिस समय भी दहीमे चुटकीभर सोडा, खजूर या द्राक्ष और अुबली हुअी तरकारी होती थी। लगभग अुसी समय अखबार आते थे। मै लाठी-प्रहारो और बम्बअीकी महिलाओके राष्ट्रीय झडे फहरानेके बारेमे ताजी खबरे सुनाया करता था। समाचारो पर हम चर्चा क्वचित् ही करते। वह शामकी सैरके लिअे रखी जाती। भोजनके समय आहारशास्त्र और निसर्गोपचार चर्चाके मुख्य विषय होते, क्योकि गाधीजीने अिस क्षेत्रमे गहरा अध्ययन और परिश्रमपूर्ण प्रयोग किये है। भोजनके बाद तुरन्त चरखा तो आता ही, अुसके बाद अखबार और फिर दोपहरकी झपकी। डेढ बजे वे अेक प्याला खट्टे नीबूका रस सोडा डालकर लेते है। अिसके बाद चिट्ठिया पढना या लिखना होता है। मीराबाअीके खातिर आश्रम-भजनावलिके भजनोका अग्रेजी अनुवाद तो होता ही है। चार बजे आप अुन्हे तकली लिये धूपमे टहलते और दूध जैसा सफेद सूत निकालते पायगे। तकली टूटे खपरेल और बासकी डडीसे खुद अुन्हीकी बनाअी हुअी है।

पाचका घटा बजते ही हमारा सायकालीन भोजन आरभ हो जाता है। अुसमे दही, खजूर और कुछ सागभाजी होती है। फिर बकरिया आती है और अुनके बच्चे अपनी छोटी छोटी दुम हिलाते है। भोजन समाप्त होने पर मै बरतन धोता हू और गाधीजी अगले दिनके लिअे खजूर सवारकर पानीमे भिगो देते है। फिर शामकी सैर होती है। सध्याकालीन आकाशके रग, सूर्यास्तका गौरव और मोटे मोटे सफेद बादलोकी अजीब शकले गाधीजीके लिअे विशेष आकर्षणकी चीजे है। कभी कभी पानीके नल पर मेरा काम पूरा नही हो पाता अुससे पहले वे मुझे जल्दीसे आकाशके किसी विशेष सौन्दर्यको देखने बुला लेते है। मैने

अुन्हें अिस प्रकार किसीको अपने नियत कार्यमें कुछ क्षण चुराकर आनेके लिअे कहते बहुत ही कम देखा है।

सात बजे हम अपनी शामकी प्रार्थना शुरू करते हैं। बरसातके दिनोंमें अुसका समय ७॥ बजेका रखा गया था, परन्तु जाड़ा शुरू होने पर आश्रमने अपना समय बदलकर ७ बजेका कर दिया। हमने भी अपना समय बदल दिया, ताकि हमें यह सन्तोष रहे कि भले ही हम सैकड़ों मील दूर हों, फिर भी हम आश्रमके लड़के-लड़कियोंके साथ साथ अपनी प्रार्थना कर रहे हैं। जो लोग प्रार्थनाके भ्रातृत्वको जानते हैं वे ही हमारे किये हुअे परिवर्तनकी कद्र कर सकते हैं।

१४४. 'अधनंगा राजद्रोही फकीर'

कट्टर साम्राज्यवादी मि० (अब 'सर') विन्स्टन चर्चिलका पक्का विश्वास था कि 'भारतके हाथसे निकल जाने पर ब्रिटिश साम्राज्यका पतन हो जायगा" और "यह महान शरीर दमभरमें मुर्दा होकर अिति-हासमें विलीन हो जायगा।" अुन्होंने घोषणा की थी कि "हमारी सर-कार सम्राट्के मुकुटके अिस अत्यंत भव्य और मूल्यवान रत्नको, जिसमें हमारे अन्य सब अुपनिवेशों और अधीन देशोंकी अपेक्षा ब्रिटिश साम्राज्यका सबसे अधिक बल और गौरव निहित है, फेंक देनेका कोअी अिरादा नहीं रखती।" ये चर्चिल साहब अपने पर काबू न रख सके जब अुन्होंने देखा कि भारतके वाअिसरॉय लॉर्ड अर्विन महात्मा गांधी द्वारा देशव्यापी सविनय कानून-भंग आन्दोलन छेड़ दिये जानेके बाद अुनसे राजनीतिक सन्धिकी बातचीत कर रहे हैं। २३ फरवरी, १९३१ को वेस्ट अेसेक्स यूनियनिस्ट अेसोसिअेशनकी कौंसिलके समक्ष भाषण देते हुअे अुन्होंने महात्माजी और वाअिसरॉय दोनोंके खिलाफ अपने दिलके फफोले अिन शब्दोंमें फोड़े "यह अेक चौंकानेवाला और घिनौना दृश्य है कि अिनर टेम्पलके अेक वकील मि० गांधी, जो अब पूर्वमें सुपरिचित अेक विशेष प्रकारके राजद्रोही फकीर बन गये हैं, अर्धनग्न अवस्थामें वाअिसरॉय-भवनकी सीढ़ियों पर चढ़ते दिखाअी दें, सम्राट्के प्रतिनिधिके साथ बराबरीके

नाते सधिवार्ता भी करे और साथ साथ सविनय कानून-भंगकी अेक विरोधी मुहिम भी संगठित और सचालित करे।"

अुन्होने यह गर्जना भी की थी "मै लॉर्ड अर्विन और गाधीजीके बीचकी अिन वार्ताओ और समझौतोके विरुद्ध हू। सच तो यह है कि गाधीवादको और जिन बातोका वह प्रतीक है अुन सबको अन्तमे कुचल देना पडेगा।" कोअी आश्चर्यकी बात नही कि जब गाधीजी अुस वर्षके अन्तमे दूसरी गोलमेज परिषदके प्रतिनिधि बनकर अिंग्लैण्ड गये तब चर्चिलने अुनसे मिलना अस्वीकार कर दिया।

गाधीजीके विरुद्ध चर्चिलकी गर्जनाको प्रतिध्वनि १३ वर्ष बाद फिर सुनाअी दी। सभी १९४४ मे वे आगाखा महलकी नजरबन्दीसे छूटे थे और पचगनीमे स्वास्थ्य सुधार रहे थे। चर्चिल अुस समय ग्रेट ब्रिटेनके प्रधान मत्री थे। अुन्हे गाधीजीने यह पत्र लिखा

"'दिलखुश' (पचगनी)
१७ जुलाअी, १९४४

प्रिय प्रधान मत्री,

खबर है कि आप अिस नगे फकीरको — मेरा यह वर्णन आपका ही किया हुआ बताया जाता है — कुचल डालनेकी अिच्छा रखते है। मै बहुत अर्सेसे फकीर — और वह भी नगा, जो और भी कठिन काम है — बननेकी कोशिश कर रहा हू। अिसलिअे मै अिस वर्णनको अपनी प्रशसा ही समझता हू, चाहे वर्णन करनेवालेका आशय वैसा न रहा हो। तो मै आपसे अुसी हैसियतसे अनुरोध करता हू कि मुझ पर विश्वास कीजिये और मेरा अपनी और आपकी कौमकी सेवाके लिअे तथा अुसके द्वारा ससारकी सेवाके लिअे अुपयोग कर लीजिये।

आपका सच्चा मित्र
मो० क० गाधी"

यह पत्र किस प्रकार गुम हुआ और अुसके प्रकाशित होनेमे कैसे देर लगी, यह गाधीजीने १८ जून, १९४५ को पचगनीसे निकाले गये अेक वक्तव्यमे बताया था। गाधीजीके कथनानुसार यह पत्र १७ जुलाअीको आधी-रातके बाद अुसी समय लिखा गया था जब अुन्होने कायदे आजम जिन्नाके

नाम अपनी गुजराती चिट्ठी लिखी थी, और वाअिसरॉयके मारफत भेजनेके लिअे डाकमे समय पर डाल दिया गया ग। दुर्भाग्यसे यह पत्र कही गलत जगह चला गया। बहुत समय तक प्रतीक्षा करनेके बाद गाधीजीने १० सितम्बर, १९४४ को कुतूहलवश पूछताछका पत्र भेजा, "क्योकि अुचित समय बीत चुका था।" अुन्हे आश्चर्य हुआ जब १२ सितम्बरको वाअिसरॉयके निजी मत्रीने अुत्तरमे लिखा कि अुन्हे अुक्त पत्र मिला ही नही था। चूकि गाधीजीने अुस पत्रको बडा महत्त्व दिया था, अिसलिअे अुन्होने गुम हुअे पत्रकी नकल भेजी और फिर वाअिसरॉयसे यह अनुरोध किया कि अुसे प्रधान मत्रीको भेज दिया जाय। गाधीजीने कहा, "मि० चर्चिलके नाम मेरा पत्र मेरे खयालसे पवित्र था और वह सबके देखनेके लिअे नही था। परन्तु मै अैसे अवसर या समयकी कल्पना कर सकता था जब अुसकी पवित्रतामे आच आये बिना अुसके प्रकाशनकी जरूरत हो जाय। अिसलिअे मैने वाअिसरॉयसे १३ दिसम्बर, १९४४ को अनुरोध किया कि वे प्रधान मत्रीसे पूछ ले कि जरूरत पडने पर पत्र प्रकाशित करनेकी वे मुझे अिजाजत देंगे या नही। अुन्होने अपने मत्रीके मारफत जवाब दिया कि प्रधान मत्रीने मेरे पत्रके प्रकाशनकी अिजाजत दे दी है, बशर्ते अुसकी पहुच बाकायदा स्वीकार की जाय।"

१४५. गोमांसकी चाय और नमक

जब १९०६ का जूलू-विद्रोह दबा दिया गया और गाधीजी द्वारा सगठित घायल-सेवादल सम्बन्धी अुनका काम खतम हुआ, तो अुन्होने अपने परिवार सहित फीनिक्समे बस जानेकी तैयारी की। परन्तु अुनके वहा चले जानेसे पहले कस्तूरबा डर्बनमे गभीर बीमारीकी शिकार हो गअी।

अुनकी हालत दिनोदिन खराब होती गअी और गाधीजीने कस्तूरबाकी मजूरीके बाद ऑपरेशन कराना स्वीकार कर लिया। वे बहुत कमजोर थी फिर भी डॉक्टरको बेहोशीकी दवा सुघाये बिना ऑपरेशन करना पडा। जब वे अच्छी हो रही थी तब गाधीजीको जोहानिस्बर्गमे डॉक्टरका टेलीफोन मिला कि अुनकी पत्नीकी दशा बिगड

रही है। डॉक्टरने गाधीजीसे कहा कि अगर कस्तूरबाको थोडी गोमासकी चाय नही दी गअी तो वे मर सकती है, और गाधीजीसे अुन्हे गोमासका आहार देनेकी अिजाजत मागी। गाधीजीने अिजाजत देनेसे अिनकार कर दिया, मगर डॉक्टरसे कहा कि अगर कस्तूरबा लेनेको राजी हो तो मुझे कोअी अेतराज नही। परन्तु डॉक्टरने कहा कि मै बीमारसे अुसकी हालतको देखते हुअे सलाह नही लूगा। अुसने गाधीजीसे तुरन्त डर्बन आनेको कहा।

जब गाधीजी डर्बन पहुचे तो डॉक्टरने अुन्हे बताया कि अुसने पहले ही कस्तूरबाको गोमासकी चाय दे दी है।

गहरी पीडा अनुभव करते हुअे गाधीजीने कहा, "तो डॉक्टर, मै अिसे धोखा कहूगा।"

डॉक्टरने अुत्तर दिया, "धोखा देनेका प्रश्न अुठता ही नही। वास्तवमे हम डॉक्टर लोग बीमारो या अुनके रिश्तेदारोको धोखा देना पुण्य समझते है, यदि अिससे हम अपने बीमारोको बचा सके।"

गाधीजीको गहरी वेदना हुअी, परन्तु वे शान्त रहे। वे जानते थे कि डॉक्टरका हेतु अच्छा था और वह अुनका निजी मित्र भी था। परन्तु वे अुसके डॉक्टरी नीतिशास्त्रको बरदाश्त करनेको तैयार नही थे। अिसके बाद अपने पुत्र और कस्तूरबासे सलाह लेकर वे अुन्हे फीनिक्स ले गये, जहा स्वय गाधीजीके अेक सादे नुसखेकी करामातसे वे अन्तमे चगी हो गअी।

फीनिक्स आने पर थोडेसे आरामके बाद कस्तूरबाको रक्तस्रावकी व्याधि फिर सताने लगी। गाधीजीको शाकाहार-सम्बन्धी पुस्तकोमे पढी हुअी यह बात याद आअी कि नमक मनुष्यके लिअे आहारकी आवश्यक वस्तु नही है, बल्कि अुलटे बिना नमककी खुराक तदुरुस्तीके लिअे बेहतर है। अिसलिअे अुन्होने अपनी पत्नीको सुझाया कि वे अलोना भोजन शुरू कर दे। अिसके लिअे वे रजामद नही हुअी। और जब गाधीजीने आग्रह किया तो अुन्होने चुनौती दी कि आप मुझे तो सलाह दे रहे है, परन्तु खुद अपने भोजनमे आप नमक नही छोड सकते।

अिस चुनौतीकी गाधीजी पर क्या प्रतिक्रिया हुअी, यह अुन्हीके शब्दोमे अुत्तम रूपमे वर्णन किया जा सकता है

"मुझे दुःख और साथ ही खुशी भी हुअी। खुशी अिस बातकी कि मुझे अुस पर अपने प्रेमकी वर्षा करनेका अवसर मिला। मैंने अुसे कहा, 'तुम्हारी भूल है। मैं बीमार होता और मुझे नमक या और कोअी पदार्थ छोडनेकी सलाह दी जाती तो मैं निःसंकोच मान लेता। मगर यह लो, डॉक्टरी या और किसी सलाहके बिना ही, मैं अेक सालके लिअे नमक और दाल छोडता हूं, तुम चाहे छोडो या न छोडो।'"

कस्तूरबाको अिससे आघात लगा और अुन्होंने गांधीजीसे क्षमा मांगी। वे जानती थीं कि अुनके पति जो कहते हैं वही सदा करते हैं। अुन्होंने अुनसे अपनी प्रतिज्ञा वापस लेनेकी प्रार्थना की और समझाया कि 'यह मेरे साथ बहुत बडी ज्यादती होगी।' गांधीजी अुनसे नाराज नहीं हुअे, बल्कि अुन्हें सांत्वना दी। अुन्होंने कहा कि मेरे परहेजसे तुम्हें मदद मिलेगी और मुझे बल मिलेगा। अिस पर कस्तूरबा रो पडीं, क्योंकि वे जानती थीं कि गांधीजी अपनी बातसे पीछे नहीं हटेंगे।

और आप मानें या न मानें, कस्तूरबाका स्वास्थ्य अच्छा होने लगा। रक्तस्राव सर्वथा बन्द हो गया और अुन्होंने शीघ्र ही अपना हमेशाका अुत्तम स्वास्थ्य पुनः प्राप्त कर लिया। और जैसा गांधीजीने विनोदमें कहा, अेक 'नीम हकीम'के रूपमें अुनकी प्रतिष्ठामें कुछ वृद्धि हो गअी।

१४६. भंगीके रूपमें जीवन्मुक्त

अमेरिकामें दीर्घ कालसे रह रहे अेक भारतीय श्री अेस० के० रायने डॉ० रवीन्द्रनाथ टैगोरसे जब सन् १९२० में वे अमेरिका गये थे तब यह पूछा कि महात्मा गांधीने बोलपुरमें रहते हुअे सचमुच अैसा क्या किया था जिससे आप अितने प्रभावित हुअे। अिस पर शान्तिनिकेतनके विख्यात कविने कहा था, "जो मैं बरसोंमें नहीं कर सका वह अुन्होंने कुछ ही दिनमें कर दिखाया।" श्री रायके अनुसार घटना सुनाते हुअे डॉ० टैगोरने आगे कहा :

"मेरी सदा यह राय रही कि मेरी पाठशालाके विद्यार्थियोंको अपने कमरे आप साफ करने चाहिये, अपने बिस्तर खुद लगाने चाहिये, अपना भोजन आप बनाना चाहिये और अपनी थालियां खुद धोनी चाहिये।

परन्तु हमारे लडके अितनी अूची जातियोके घरोसे आते थे कि मै अुनसे ये काम नही करा सका। दिक्कत यह थी कि मै अपना कमरा खुद साफ नही करता था, न अपना बिस्तर स्वय बिछाता था, न अपना खाना आप बनाता था और न अपनी थाली खुद धोता था। अिसलिअे लडके मेरी बात पर गभीर ध्यान देनेकी परवाह नही करते थे। मै खाली व्याख्यान देता था, अिसलिअे लडके सिर्फ सुन लेते थे।

"परन्तु गाधीजी जब आये तो अुन्होने तुरन्त हमारे लडकोके हृदय जीत लिये। वे अुनमे से अेक बनकर अुनके साथ घुलमिल गये। अुन्होने विद्यार्थियोसे कहा कि जो काम तुम्हे स्वय करना चाहिये वह नौकरोसे कराना अनुचित है। और वे स्वय अपना कमरा साफ करते, अपना बिछौना खुद बिछाते, अपनी थाली आप धोते और अपने कपडे भी खुद ही धो लेते।

"लडकोको अपने पर शर्म आअी, और वे बडी खुशीसे ये सब काम करने लगे। मैने फौरन् जान लिया कि गाधीजीने विद्यार्थियोके दिल कैसे जीते।

"अिस बीच गाधीजीने भगियोसे कहा कि कुछ दिनके लिअे तुम लोग कोअी काम मत करो। अुच्च जातिके लडके अछूत भगियोका काम करनेकी कभी कल्पना भी नही कर सकते थे। मैलेकी बदबूके मारे स्कूलमे जीना दूभर हो गया।

"तब गाधीजी स्वय मैलेके बरतन अपने सिर पर रखकर ले गये और मैला जमीनमे गाड आये। अुनका यह असाधारण साहस सक्रामक सिद्ध हुआ। शीघ्र ही अुच्चतम जातियो और अमीर घरोके लडके अछूत मेहतरोका काम करनेका सम्मान प्राप्त करनेमे अेक-दूसरेसे होड लगाने लगे।

"और मै बम्बअीसे आये हुअे अिस महापुरुषके प्रति आश्चर्य और प्रशसाकी भावनासे स्तब्ध हो गया। मैने नम्रतापूर्वक अपने हृदय और मनके अत्यत पूज्य भावसे अुनको नमस्कार किया। और मुझे अिस लगभग अज्ञात मनुष्यमे अेक बडे और अत्यत महत्त्वपूर्ण आदमी बननेके लक्षण दिखाअी दिये। मुझे अिससे अत्यत आनन्द होता है कि अब सारा भारत अुन्हे महात्मा कहता है। अगर कोअी कभी अिस पदवीका हकदार हो

तो वह गाधीजी ही है। और यह मालूम होना चाहिये कि यह पदवी गाधीजीको हमारे लोगोकी दी हुअी हार्दिक भेट है।"

श्री रायने यह बातचीत 'साअिकॉलॉजी' नामक पत्रके अेक अकमे दी है। अुन्होने कविको सम्बोधित करते हुअे कहा, "आपके मुखसे गाधीजीके बारेमें अैसे शब्द सुनकर आह्लाद होता है। महात्मा गाधी आज भारतके करोडो निवासियो पर जबरदस्त प्रभाव रखते है। क्या आप कृपा करके मुझे बतायेगे कि अुनकी सफलताका वास्तवमे क्या रहस्य है?"

डॉ० टैगोरने कहा, "गाधीजीकी सफलताका रहस्य अुनके तेजस्वी आध्यात्मिक बल और अटूट स्वार्थत्यागमे है। बहुतसे सार्वजनिक व्यक्ति स्वार्थपूर्ण कारणोसे त्याग करते है। यह अेक तरहका पूजी लगाना है, जिसमे अच्छा मुनाफा मिलता है। गाधीजी बिलकुल भिन्न है। वे अपनी अुदात्ततामे अद्वितीय है, अुनका जीवन ही त्यागका दूसरा नाम है। अुन्होने अपने आपको बलिदान कर दिया है। अुन्हे किसी सत्ता, किसी पद, किसी दौलत, नाम या ख्यातिकी लालसा नही है। अुन्हे सारे भारतका राज-सिहासन देकर देखिये, वे अुस पर बैठनेसे अिनकार कर देंगे, परन्तु सिहासनमें जडे रत्नोको बेचकर अुसका रुपया मोहताजोमें बाट देगे।

"अुन्हें आप अमरीकाके पास जितना भी रुपया है देकर देखिये। वे निश्चित रूपमे अुसे लेनेसे अिनकार कर देगे, अगर वह रुपया मानव-जातिके अुत्थानके किसी योग्य कार्यमे लगानेके लिअे न हो।

"अुनकी आत्मा सदैव देनेको अुत्सुक रहती है और वे बदलेमें कुछ भी पानेकी अपेक्षा नही रखते — धन्यवाद तककी नही। यह अतिशयोक्ति नही है, क्योंकि मै अुन्हे खूब जानता हू।

"वे बोलपुरमे हमारी पाठशालामें आकर कुछ समय रहे थे। अुनकी त्यागशक्ति अिस कारण और भी अधिक अजेय बन जाती है कि अुसके साथ अत्यत निर्भयता जुडी हुअी है।

"सम्राट् और महाराजा, बन्दूकें और सगीनें, कैद और यातनाअे, अपमान और प्रहार, यहा तक कि मौत भी गाधीजीकी आत्माको कभी विचलित नही कर सकती।

"वे 'जीवन्मुक्त' है। दूसरे गव्दोमे अुनकी आत्मा मुक्त हो गअी है। मेरा कोअी गला घोटे तो मै मददके लिअे चिल्लाअूगा, परन्तु गाधीजीका गला घोटा जाय, तो मुझे यकीन है कि वे चिल्लायेगे नही। वे गला घोटनेवाले पर हसेगे और अगर अुन्हें मरना ही पडा तो वे मुस्कराते हुअे मरेगे।

"अुनके जीवनकी सादगी वच्चोकी-सी है, अुनका सत्य-पालन अटल है, मानव-जातिके लिअे अुनका जीवन रचनात्मक प्रभावसे पूर्ण है। अुनमें वही वृत्ति है जिसे अीसाकी वृत्ति कहते है। मैं अुन्हे जितना ही अधिक जानता हू अुतना ही अुनके प्रति मेरा प्रेम वढता जाता है। मेरे लिअे यह कहना अनावश्यक है कि यह महापुरुप ससारके भविष्यके निर्माणमें अवश्य प्रमुख भाग लेगा।"

"अैसे महापुरुपके वारेमे दुनियाको अच्छी जानकारी होनी चाहिये। आप यह जानकारी क्यो नही देते, आप तो जग-प्रसिद्ध व्यक्ति है," श्री रायने पूछा। डॉ० टैगोरने अुत्तर दिया

"मैं अुन्हे प्रसिद्धि कैसे दे सकता हू? अुनकी प्रकागमान आत्माकी तुलनामे मैं कुछ भी नही हू। फिर किसी भी सच्चे महापुरुपको वनाना नही पडता। ये लोग तो अपने गौरवसे ही वडे होते है और जव ससार तैयार होता है तव वे स्वय अपनी महानताके वल पर प्रसिद्ध हो जाते है। जव समय आयेगा तव लोग गाधीको जान लेगे, क्योकि ससारको अुनकी और अुनके प्रेम, स्वातत्र्य और भ्रातृभावके सन्देशकी जरूरत है।

"पूर्वकी आत्माको गाधीके रूपमे अेक योग्य प्रतीक मिल गया है, क्योकि वे अत्यन्त प्रभावशाली ढगसे यह प्रमाणित कर रहे हैं कि मनुष्य वास्तवमें अेक आध्यात्मिक प्राणी है, वह नैतिक और आध्यात्मिक जगतमें अुत्तम रूपमें फलता-फूलता है और घृणा तथा युद्धके वातावरणमे आत्मा और गरीर दोनोके साथ निश्चित रूपमें नष्ट हो जाता है।"

जव कवि पिछले वर्पोमें अतिम वार अमरीका गये, तव अुन्होने श्री रायको यह कहा वताते है

"महात्मा गाधी अलौकिक पुरुप है। वे वहुत वडे पैमाने पर अुन आध्यात्मिक सिद्धान्तोका प्रयोग कर रहे है, जिनका अुपदेश वुद्ध,

अीसा और वहाअुल्ला जैसे पैगम्बरोंने दिया था। गांधीजीने संसार भरमें जिस प्रचण्ड आत्मशक्तिको फैला दिया है, अुसकी कद्र करनेके लिअे वे जो कुछ कहते और करते हैं, अुस सबसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। आज वे संसारके सबसे बड़े आदमी हैं। अुनके पास अत्यंत मूल्यवान आंतरिक निधियां हैं।"

१४७. गांधी-रोमां रोलांकी भेंट

महात्मा गांधी दिसम्बर १९३१ में महान फ्रांसीसी विद्वान रोमां रोलांसे अुनके घर पर विलेन्यू, स्विटज़रलैण्डमें मिलने गये थे। अिस घटनाके बारेमें रोमां रोलांने अपने अेक अमरीकी मित्रको यों लिखा था

"भारतीय मेहमानोंके आगमनके दिनोंमें आप यहां होते तो मुझे कितना अच्छा लगता! वे विला वियोनेतेमें ५ से ११ दिसम्बर तक पांच दिन ठहरे। गांधीका कद छोटा है और मुहमें दांत नहीं हैं। अुनकी आंखों पर चश्मा था और शरीरको अुन्होंने अपनी सफेद शालसे लपेट रखा था, मगर अुनकी सारसकी-सी पतली टांगें खुली हुअी थीं। अुनका सिर, जिस पर रूखे-सूखे थोड़ेसे ही बाल रह गये हैं, खुला हुआ और मेंहसे भीगा हुआ था। वे मेरे पास सूखी-सी हंसी हंसते हुअे आये। अुनका मुह अैसा खुला हुआ था जैसे कोअी प्यारा कुत्ता हांफ रहा हो। मेरे गलेमें हाथ डालकर अुन्होंने अपना गाल मेरे कंधे पर झुका दिया। मैंने अुनका सफेद बालोंवाला सिर मेरे गालसे लगा हुआ अनुभव किया। मुझे मन ही मन अैसा लगा कि यह सन्त डोमिनी और सन्त फ्रांसिसका चुम्बन था।

"अुनके बाद मीरा (कुमारी स्लेड) आअी। अुनका शरीर अूंचा-पूरा और चाल डिमीटर जैसी शानदार थी। अन्तमें तीन भारतीय और आये। अुनमें से अेक गांधीका छोटा लड़का देवदास था, जिसका मुह गोल और प्रसन्न था। वह सुशील है, मगर अपने नामकी महानताका अुसे भान नहीं है। दूसरे दो गांधीके मंत्री — शिष्य — थे। जिन दोनों नौजवानोंमें हृदय और बुद्धिके अनूठे गुण हैं। ये थे महादेव देसाअी और प्यारेलाल।

"चूकि कुछ ही दिन पहले मेरी छातीमे सख्त सर्दीका असर हो चुका था, अिसलिअे गाधी मेरे ही मकान पर विला ओल्गामे दूसरी मजिल पर, जिस कमरेमे मै सोता हू वहा, आते रहे। वे रोज सुवह आ जाते थे और खासी लम्वी वातचीत हुआ करती थी। मेरी वहन मीराकी सहायतासे दुभाषियेका काम करती थी और मेरी अेक रूसी मित्र और मत्री कुमारी कोन्दाचेव्ह हमारी चर्चाओके नोट लेती थी। मान्ट्रियोवाले हमारे पडोसी श्लीमरने कुछ अच्छे फोटो लेकर हमारी मुलाकातका दृश्य अकित किया।

"शामको सात वजे पहली मजिलवाले वडे कमरेमे प्रार्थना होती थी। रोशनी धीमी कर दी जाती थी। भारतीय मेहमान नीचे कालीन पर वैठते थे और श्रद्धालुओका छोटासा समूह अुनके चारो ओर वैठ जाता था। प्रार्थनामे तीन सुन्दर पाठ होते थे — पहला गीताका अेक अश, दूसरा कुछ चुने हुअे पुराने सस्कृत श्लोक, जिनका गाधीने अनुवाद किया है, और तीसरा राम और सीता पर अेक भजन (धुन), जिसे मीरा अपनी प्रेम और गाभीर्य भरी वाणीमे गाती थी।

"गाधी दूसरी प्रार्थना प्रात काल तीन वजे करते थे। अिसके लिअे वे अपने हारे-थके साथियोको जगाया करते थे। हालाकि वे खुद अेक वजे तक नही सोते थे। यह छोटासा आदमी दीखनेमे अितना कमजोर है, परन्तु कभी थकता नही। थकान शव्द अैसा है जो अुसके शव्दकोषमे ही नही है। वह भीडके अटपटे प्रश्नोका चेहरे पर जरा भी शिकन लाये विना घटो तक शान्तिसे अुत्तर दे सकते है, जैसा अुन्होने लोजान और जिनेवामे किया। अेक मेज पर निश्चल वैठे हुअे, अपनी आवाजको सदा साफ और शान्त रखकर अुन्होने अपने खुले या छिपे विरोधियोको — जिनकी जिनेवामे कमी नही थी — अैसे जवाव दिये और अैसी खरी-खरी सुनाअी कि अुनकी जवान वन्द हो गअी और वे घवरा गये।

"रोमके वूर्जुआ नागरिक और राष्ट्रवादी, जिन्होने अुनका पहले छलपूर्ण दृष्टिसे स्वागत किया था, जव वे रवाना हुअे तव गुस्सेसे काप रहे थे। मेरा विश्वास है कि यदि गाधी वहा कुछ दिन और ठहरते तो सार्वजनिक सभाओकी मनाही कर दी जाती। अुन्होने राष्ट्रीय सेनाओ

और पूजी तथा श्रमके सघर्षके दोहरे प्रश्नो पर अपने अुद्गार स्पष्ट भाषामे प्रगट किये । अुन्हे अिस दूसरे मार्ग पर अग्रसर करनेमें बडी हद तक मैं जिम्मेदार था।

"अुनका दिमाग अेकके बाद अेक प्रयोग करके कर्ममे अग्रसर होता है और वे सीधी रेखा पर चलते हैं, परन्तु वे रुकते कभी नही। दस साल पहले अुन्होने जो कुछ कहा था अुसके आधार पर अुनके बारेमे निर्णय किया जाय, तो अुसमें भूल होनेका अदेशा रहेगा, क्योंकि अुनके विचारोमे सतत क्रांति होती रहती है। मै अिसका अेक छोटासा अुदाहरण दूगा, जो अुनकी अिस विशेषताको अच्छी तरह प्रगट करता है।

"लोजानमे अुनसे अिस बातको स्पष्ट करनेके लिअे कहा गया कि अीश्वरसे वे क्या समझते हैं। अुन्होने समझाया कि हिन्दू धर्मशास्त्रोमे अीश्वरके जो अुच्चतम लक्षण बताये गये है अुनमे से अुन्होने मूल तत्त्वकी सच्चीसे सच्ची व्याख्या करनेके लिअे अपनी युवावस्थामे 'सत्य' शब्दको ही चुना था। अुस समय अुन्होने कहा था, 'अीश्वर सत्य है।' 'परन्तु' अुन्होने कहा, 'दो वर्ष हुअे मै अेक कदम और आगे बढा हू। मैं अब कहता हू कि 'सत्य ही अीश्वर है'। क्योंकि नास्तिक भी सत्यकी शक्तिकी जरूरतके बारेमे शका नही करते। अपनी सत्य-सशोधनकी लगनमें नास्तिकोने अीश्वरके अस्तित्वको अस्वीकार करनेमे सकोच नही किया है और अपने दृष्टिबिन्दुसे वे ठीक भी हैं।' आप अिस अेक ही लक्षणसे समझ लेगे कि पूर्वके अिस धार्मिक पुरुषमे कितना साहस और कितनी स्वाधीनता है। मैंने अुनमे विवेकानन्द जैसे लक्षण पाये हैं। फिर भी कोअी राजनीतिक चाल अैसी नही जिसके लिअे वे तैयार न रहते हो। और अुनकी अपनी राजनीति तो यह है कि वे जो भी विचार करते हैं वह सब हरअेकसे कह देते है, कोअी बात छिपाते नही।

"कल शामकी प्रार्थनाके बाद गांधीने मुझसे कहा कि मुझे थोडा बीथोवन बजा कर सुनाअिये। बीथोवनका अुन्हे कोअी ज्ञान नही है, परन्तु अुन्हे मालूम है कि बीथोवन मीरा और मेरे बीच मध्यस्थ रहा है, अिसलिअे मीरा और अुनके बीच भी रहा है, और अिसलिअे अन्तमे तो हम सभीको बीथोवनका कृतज्ञ होना चाहिये। मैंने अुन्हे

पाचवे सप्तकका आदाते बजाकर सुनाया। अिसके अलावा ग्लुकका 'ले चैम्स अेलीसीज़' भी बजाकर सुनाया — जो समूह-सगीतके लिअे अेक पृष्ठ और बासुरीके लिअे धुन है।

"अुन पर अपने देशके धार्मिक भजनोका बडा असर होता है। ये हमारी ग्रेगोरियन धुनोमे से कुछ सुन्दरतम धुनोसे कुछ कुछ मिलते है और अुनका सग्रह करनेके लिअे अुन्होने परिश्रम किया है। हमने कला पर भी विचार-विनिमय किया। कलाको वे अपनी सत्यकी कल्पनासे भिन्न नही मानते और न आनन्दकी कल्पनाको अपनी सत्यकी कल्पनासे भिन्न समझते है। अुनके खयालमे सत्यसे आनन्दका अनुभव होना ही चाहिये। परन्तु अिस मान्यतासे यह परिणाम अपने-आप निकलता है कि अैसे शूर स्वभावके लिअे आनन्द प्रयत्नके बिना प्राप्त नही होता और न स्वय जीवन कष्टके बिना सभव होता। 'सत्य-शोधकका हृदय कमल-सा कोमल और वज्र-सा कठोर होता है।'

"मेरे प्यारे मित्र, ये है हमारे सहवासके अुन दिनोकी थोडीसी झाकिया, जिनके मैने कही अधिक विस्तृत नोट लिये है। मै आपको अिस बातका तो वर्णन ही नही लिख रहा हू कि अिस आगमनसे हमारी दोनो कुटीरो पर किस प्रकार बिना बुलाये आवारा और खब्ती लोगोका ताता बध गया था। नही, नही, टेलीफोनकी घटी तो कभी बन्द ही नही होती थी और फोटोग्राफरोके हमले हरअेक झाडीके पीछेसे होते थे। लीमानके गोपालक-सघने मुझे सूचना दी कि आपके यहा 'भारतके राजा' के सपूर्ण निवास-कालमे अुनके 'भोजन' की तमाम जिम्मेदारी लेनेका हमारा अिरादा है। हमे 'अीश्वर-पुत्रो' के पत्र मिले। कुछ अिटली-वालोने महात्माको पत्र लिख कर प्रार्थना की कि आप अपनी अगली साप्ताहिक राष्ट्रीय लॉटरीके १० भाग्यशाली नबर हमे बताअिये!

मेरी बहन जिन्दा तो रह गअी, मगर वह ज्यूरिचके अेक आरोग्य-सदनमे दस दिन आराम लेने गअी है। वह जल्दी ही लौट आयेगी। मेरा यह हाल है कि मै नीदकी नियामतसे बिलकुल वचित हो गया हू। अगर आपको कहीसे मिल जाय तो रजिस्ट्री करके डाकसे मेरे पास भेज दे!"

— 'दि नेशन', न्यूयॉर्क

१४८. पत्रकार 'पुत्र' को फटकार

अेक वार अैसा प्रसग आया जिसने गाधीजीको वहुत अुद्विग्न कर दिया और अुन्हे अेक सम्पादकको आडे हाथो लेनेके लिअे वाध्य कर दिया। वात यो हुअी कि श्री अेस० सदानन्द द्वारा सम्पादित 'फ्री प्रेस जर्नल' ने अपने १२ जुलाअी, १९४४ के अकमें काग्रेस-लीग 'समझौते' के लिअे श्री सी० राजगोपालाचार्य द्वारा श्री अेम० अे० जिन्नाके सामने पेश किये गये नये प्रस्तावके सम्वन्धमें यह लिखा था कि श्री राजगोपालाचार्य और गाधीजीके आसपासके अन्य लोगोने गाधीजीको 'गुमराह' कर दिया। गाधीजीने खानगी तौर पर अिस निराधार आक्षेपके लिअे सम्पादकको अुलाहना दिया और सम्पादकने गाधीजीसे अेक प्रकारकी क्षमा-याचना कर ली। परन्तु मालूम होता है कि अिससे गाधीजीका समाधान नही हुआ, क्योकि अुन्होने १३ जुलाअीको श्री सदानन्दको अिस प्रकार लिखा

दिलखुश, पचगनी,
१३-७-१९४४

प्रिय सदानन्द,

तुम्हारा तार मिला। यद्यपि यह अुत्तर तुम्हे अेक पत्रकारकी हैसियतसे और प्रकाशनके लिअे दिया जा रहा है, फिर भी मेरे जवावका तरीका अिस आधार पर होगा कि तुम मेरे पुत्र होनेका दावा करते हो। यह दावा तुम कअी वार दोहरा चुके हो।

तुमने मेरे सुधार मुहसे तो स्वीकार कर लिये है, मगर क्रियामे अुन्हें अस्वीकार कर दिया है। अपने तारोके शुरूके हिस्से फिर पढो तो मेरा मतलव तुम्हारी समझमे आ जायगा। समझमे आ जाय तो मै चाहूगा कि सुधार स्वीकार करनेकी क्रियामे भी तुमने मेरे प्रति जो अपराध किया है अुसे तुम सार्वजनिक रूपमें स्वीकार करो।

तुम्हारे व्यवहारसे ठीक अुलटा और सुखद व्यवहार अुन चार सवाददाताओका है जिनसे मै कल मिला था। अुनका व्यवहार

अितना अुदार था कि अुन्होंने मेरे सुधार स्वीकार कर लिये और अुनके फलितार्थोंको पूरी तरह समझ लिया।

तुमने मुझे जो प्रश्न पूछे हैं अुनमें से अेक अेकका मेरे पास स्पष्ट अुत्तर है। परन्तु मुझे बहुत अंदेशा है कि वे प्रामाणिक नहीं हैं, बल्कि अुनका हेतु तुम्हारी बहादुरीका विज्ञापन और अनुचित प्रकारका अखबारी प्रचार करना है।

१२–७–'४४ के अंकमें तुम्हारे लेख पढ़ कर मुझे बड़ी पीड़ा हुअी है। अुनमें राजाजी पर दुष्टतापूर्ण और दूसरे प्रतिष्ठित सार्वजनिक पुरुषों पर अुसकी अपेक्षा कुछ हलका हमला करनेवाले शीर्षक दिये गये हैं। राजाजी पर आक्रमण करके तुम अपने प्रति बड़ा अन्याय कर रहे हो और अपने राष्ट्रवादको लज्जित कर रहे हो। जहां तक मैं जानता हूं, राजाजीका कोअी स्वार्थ नहीं। अुन्होंने अपने देशप्रेमके लिअे सब कुछ त्याग दिया है और अपनी अन्तरात्माके आदेशका पालन करनेमें लोक-प्रियताको जोखिममें डाल दिया है। मैं तुम्हें बता दूं कि राजाजीने अपनी राजनीतिकी मुझसे चर्चा नहीं की है। अुनकी राजनीतिसे, जैसा मैंने जेलमें समझा है, मेरा मतभेद बना हुआ है।

अब चूंकि मैं अनिच्छापूर्वक और समयसे पहले राजनीतिक विवादमें घसीट लिया गया हूं, अिसलिअे मैं अुनसे अिन सब बातोंकी चर्चा विस्तृत राजनीतिक मतभेद होते हुअे भी आदरके साथ अवश्य करूंगा, जैसी कि अभी भी कर रहा हूं।

विरोधियोंके प्रति शिष्टता और अुनका दृष्टिकोण समझनेकी अुत्सुकता अहिंसाका क–ख–ग है। परन्तु और किसीको नहीं तो तुम्हें तो मालूम होना चाहिये कि मैंने जिस सीधे और तंग रास्तेसे चलना पसन्द किया है अुससे वे दृष्टिकोण मुझे हटा नहीं सकते। वे मुझे अुनका अनुसरण करनेके अपने संकल्पमें मजबूत ही बना सकते हैं, कमजोर हरगिज नहीं।

और अगर मैं राजाजी जैसे प्रमुख नेताओं या दिन-रातके साथियोंसे गुमराह किया जा सकूं, तो मैं नेता या अहिंसाके प्रतिपादकके नाते सर्वथा अयोग्य ठहरूंगा।

मि० गेल्डरने जो प्रामाणिक भूल की, जैसी कि मुलाकातोंके सक्षिप्त नोट समयसे पहले प्रकाशित कर देनेके कारण अुनसे हुअी मालूम होती है, वह अेक प्रकारसे नियामत है। क्योंकि अिससे देशको यह जाननेका अेक बार फिर मौका मिल गया कि मेरे स्वभावमे समझौता करनेकी वृत्ति कितनी है। मुझे अुस पर लज्जित होनेका कोअी कारण नही है और मैंने अिसे कभी कमजोरीका चिह्न नही समझा, बल्कि ताकतकी निशानी ही माना है।

अगर तुम मेरे योग्य पुत्र साबित होना चाहते हो, तो तुम अपनी सारी नीति बदल दोगे और अपनी पत्रकार-कलाको अिस प्रकार काममे लाओगे, जिससे देशकी सत्य और अहिंसाके मार्गसे सेवा हो।

अपने पत्रकारके धधेसे तुम्हे खासी भौतिक सपत्ति प्राप्त हुअी है। अब जरूरत हो तो गरीब बननेका साहस करो और जनताको सनसनीदार खुराक देनेके बजाय अुन्हें ठोस सोनेके सिवा कुछ न दो। और अगर तुम्हे यह काम नही आता हो, तो कोअी नम्र धधा अपना लो। तब तुम्हे कमसे कम यह तो श्रेय रहेगा कि तुमने हानि करना बन्द कर दिया है।

मुझे आशा है कि अिसे तुम फेरबदल किये बिना प्रकाशित करोगे।

मगलाकाक्षी
मो० क० गाधी

१४ जुलाअीको पचगनीमे महात्मा गाधीको यह तार भेजा गया

आपका पत्र मिला। सदानन्द अिस समय दिल्लीमे है। अधिकसे अधिक मगलवारको लौटेंगे। तब ध्यान देगे। — फ्री जनल

गाधीजीने अुत्तर दिया

दिलखुश, पचगनी,
१५-७-'४४

प्रिय स्थानापन्न सपादकजी,

आपका तार मिला। श्री सदानन्दको लिखा मेरा पत्र अेक सार्वजनिक प्रश्नका सार्वजनिक अुत्तर है और वह प्रकाशनके लिअे है। ठीक

बात तो यह थी कि मेरे विरुद्ध शिकायत छापनेसे पहले मेरे अुत्तरकी प्रतीक्षा की जाती। देर होनेसे मुझे शका हो रही है।

अगर श्री सदानन्द बाहर है और मामूली बातमे आदेश जरूरी समझा जाता हो, तो आपके पास 'फोन' से आदेश लेनेके साधन है।

मगलाकाक्षी

मो० क० गाधी

अन्तमे श्री सदानन्दके नामका गाधीजीका पत्र 'फ्री प्रेस जर्नल' के १९ जुलाअी, १९४४ के अकमे प्रकाशित हुआ। साथमे श्री सदानन्दका नीचे लिखा 'स्पष्टीकरण' भी प्रकाशित हुआ

बम्बअी, १८ जुलाअी, १९४४

मेरे नाम गाधीजीका १३ जुलाअीका पत्र, १४ जुलाअीका गाधीजीके नाम भेजा तार और १५ जुलाअीका गाधीजीका अुत्तर अिस अकमे प्रकाशित किये जा रहे है।

चूकि मै आज (१८ तारीखको) तीसरे पहर ही दिल्लीसे लौटा हू, अिसलिअे अिससे पहले अुनका प्रकाशन नही हो सका।

गाधीजीने अपने प्रति मेरी पुत्रोचित वफादारीकी याद दिलाकर मेरी अिज्जत बढाअी है। मै आज भी अुस वफादारीमे सच्चा होनेका दावा करता हू।

यह महात्माजी जानते है कि मेरी कल्पनाके अनुसार पुत्र पिताकी दी हुअी सजासे आत्मरक्षा नही कर सकता।

मै अिस सुवर्ण नियमको अिस अवसर पर भग करनेका कोअी कारण नही पाता।

अेस० सदानन्द

१४९. 'सत्यकी पीठमें छुरा'

१६ जनवरी, १९३७ के 'हरिजन' के अकमे श्री महादेव देसाओकी कलमसे यह लेख प्रकाशित हुआ था

जिन दिनो हम फैजपुर ठहरे हुअे थे, तव किसी परिषदके अेक छात्रमत्रीने गाधीजीके पास आकर अेक सन्देश मागा। गाधीजीने हसकर कहा "६८ वर्षकी आयुमे मै तुम्हे क्या नया सन्देश दे सकता हू? और अगर तुम मुझे कत्ल करने या मेरा पुतला जलानेके लिअे वहा प्रस्ताव पास करो, तो तुम्हे मेरे सन्देश देनेसे लाभ ही क्या? अवश्य ही शरीरका वध कोओी परवाहकी वात नही, क्योकि मेरी राखमे हजारो गाधी पैदा हो जायगे। मगर मै जिन सिद्धान्तोके लिअे जिन्दा रहा हू अुन्हीकी तुम हत्या करने लगो या अुन्हे जलाने लगो तव क्या हो?"

ये शब्द अुन्होने चरखा-धर्म पर अपना महान भाषण देनेसे अेक दिन पहले कहे थे और जो अुनमे जलनेवाली आगको देख सकते है वे समझ लेगे कि जव अुन्होने मेरे अभी अुद्धृत किये हुअे शब्द कहे थे तव अुस हसीमे कितनी पीडा छिपी हुअी थी और अूपर जो शीर्षक लगा हुआ हे अुसकी तहमे कितनी तीव्रता है।

ये शब्द श्रीमती ठाकरसीकी पूनावाली कुटिया — पर्णकुटी — मे हमारे पहुचनेके थोडी ही देर बाद कहे गये थे। प्रसग दीखनेमे तुच्छ-सा था। गाधीजीके पास आम तौर पर पूनियोका खासा भडार रहता है। परन्तु अुस दिन पूना पहुचनेकी शामको अुन्हे मालूम हुआ कि अुनका भडार लगभग खतम हो गया है। अुन्होने प्यारेलालसे पूछा कि तुम्हारे पास और कुछ पूनिया है? अुनके पास नही थी। वे मेरी ओर मुडे, "तुम्हारे पास तो आम तौर पर अपनी पूनिया रहती है। तुम्हारे पास भी नही है?" मै लज्जित हुआ। मैने कहा, "फैजपुरमे मेरे पास थी।" "तुमने सोचा होगा कि तुम्हे वहा कातनेका समय मिल जायगा, मगर यहा नही मिलेगा।" अिसका कोओी जवाव नही था, हो भी नही सकता था। मै कातनेका प्रेमी हू और अपने कओी वर्षके कारावासमें मुझे याद नही कि मै अेक भी दिन अपनी कताअीमे चूका होअू। वाहर मै देखता हू कि

मै कताअी नियमित रूपमे नही कर पाता और यही कारण है कि मेरे पास पूनिया नही थी। "परन्तु क्या पूनामे भी हमे पूनिया नही मिल सकती? देव कातते है, प्रेमाबहन कातती है और दूसरे लोग भी है जो नियमित कातते है। कल हमे जरूर पूनिया मिल जायगी।" सभी सभव स्थानो पर पूछताछ की गअी, मगर पूनिया नही मिली।

गाधीजीने पूछा, "चन्द्रशकरका क्या हाल है?" अुनके पास भी पूनिया नही थी। दूसरे दिन प्रात कालीन प्रार्थनाके थोडी देर बाद अुन्होने मुझसे कहा, "महादेव, यह सचमुच निर्दय प्रहार है। मुझे आशा थी कि चन्द्रशकर और अुनकी पत्नी कातते होगे। लेकिन अगर चरखा-धर्म सम्बन्धी मेरे भाषण पर वे हर्षसे रोमाचित हो जाय और काते नही, तो अुनके रोमाचकी मेरे लिअे क्या कीमत? अगर नमकका सलौनापन जाता रहे, तो अुसमे सलौनापन आयगा कहासे? मै तुमसे कहता हू कि यह मेरे लिअे बहुत बडा आघात है। और सारे पूना शहरमे पूनिया ही नही! परन्तु जब चन्द्रशकरके पास ही नही है तो दूसरोके पास क्यो होने लगी? देवने बिना किसी लज्जाके कहा कि यहासे २० मील दूर सासवडमे सब कुछ मिल सकता है, परन्तु यहा नही मिल सकता। फिर भी हमे आश्चर्य होता है कि हमे स्वराज्य क्यो नही मिलता।"

मै देख सकता था कि जब गाधीजी यह कह रहे थे तब वे गुस्सेसे अुबल रहे थे। मै चुपचाप वहासे चला गया और शकरलालको सब कुछ कह सुनाया। अुन्होने कहा कि अिस फटकारका हिस्सा मुझे भी मिल चुका है। वे बोले, "मै क्या करू? चूकि मै चरखा-सघका मत्री हू, अिसलिअे बापूका खयाल है कि यह देखना मेरा काम है कि पूनिया सब जगह अुपलब्ध हो। मै अुनका दु ख खूब समझता हू, परन्तु मुझे आशा है कि वे मेरा दु ख भी समझ लेगे। मेरी यह कोशिश रही है कि भारतमे चरखा-सघके कार्यालयोमे सभी कार्यकर्ता नियमित रूपसे काते, परन्तु मुझे अभी तक अिसमे सफलता नही मिली। परन्तु मुझे तुरन्त बम्बअीसे पूनिया मगानी होगी।" अुन्होने वहा अेक मित्रको फोन किया, जिन्होने नवजीवन सघसे पूनिया और धुनाअीका सारा सामान भेज दिया। तीसरे पहर पूना खादी-भडारसे कुछ रद्दी-

सा सामान आया और शामको श्री हरिभाऊ फाटक और बालूकाका कानिटकर आ पहुचे। ये दोनो भाओी चरखेमे विश्वास रखनेवाले माने जाते है, अिसलिअे गाधीजीने अुनसे कहा "मै अभी तक लगे हुअे आघातके असरसे मुक्त नही हुआ हू। बालूकाकासे मुझे घोर निराशा हुओी है। तुम तो चरखेकी शपथ खाया करते थे, क्या चरखेमे तुम्हारी यही श्रद्धा है?"

बालूकाकाने कहा, "परन्तु मैने आपसे नही कहा था कि कौसिलोका कार्यक्रम रचनात्मक कार्यक्रमको अवश्य नष्ट कर देगा?"

"यह असगत बात है। अिसका तुम्हारी खादी और कताओीकी श्रद्धासे क्या सम्बन्ध? अुसे तो तुमने असख्य बार दोहराया है। दृढ विश्वास अिसीलिअे होते है कि अुनके लिअे हम जियें और मरे और अुन पर अमल तो जरूर ही करे। मगर वह दृढ विश्वास, जिस पर कुछ भी अमल न हो, निरर्थक है। यह सत्यकी पीठमें छुरा भोकना है।"

अिन शब्दोके बारेमें कोओी गलतफहमी नही हुओी। श्री हरिभाऊ बोले, "आपने हमे जो फटकारे लगाओी है हम अुनके पात्र है। हमने कलसे नया जीवन जीनेका निश्चय कर लिया है।"

गाधीजीने कहा, "परन्तु अिस दु:खद घटना पर मैने जो आत्म-ताडना की है अुसका तुम्हे पता नही है। अगर हमे अपने दृढ विश्वासकी अितनी कम परवाह हो, तो हमें स्वराज्य कैसे मिल सकता है? अब तुम कहते हो कि सुधार करोगे। यह ठीक है। भूल करना मनुष्यका काम है और अुसे सुधारना भी अुसीका काम है। परन्तु यह जानकर भी कि हम भूल कर रहे है अुसे न सुधारना मनुष्यताका पतन है। कारण, पशु भूल नही करते। परन्तु 'मनुष्यताका पतन' शब्द ठीक नही। भूल करना मानवता है, भूल न करना देवतापन है। भूल-सुधार करना मानवता है, परन्तु भूल-सुधार न करना राक्षसीपन है। यह ठीक शब्द है। खैर, अगर तुम भूलको सुधार लोगे तो सब कुछ ठीक हो जायगा। परन्तु दृढ विश्वासके बिना कुछ न करना। वह दृढ विश्वास तुम्हारा अपना होना चाहिये, मुझसे अुधार लिया हुआ नही।"

'सत्यकी पीठमे छुरा'—ये शब्द हमारे दिलोमें आगके खजरकी तरह घुस गये। "मै पूनिया अुनसे नही मागता जिनका खादी या चरखेमे विश्वास नही। माननीय श्रीनिवास शास्त्री और मैं गहरे मित्र हैं, मगर अुनके सामने मै चरखा शब्द तकका कभी अुच्चारण नही करता। कारण, अुनका अिसमे विश्वास नही। जो लोग अिसमे विश्वास नही रखते और अिसकी निन्दा करते है, अुनकी मै अिज्जत करता हू। परन्तु तुम्हारा अिसमे विश्वास है और तुम अपने जीवनमे प्रतिदिन असत्याचरण करते हो। यही सत्यकी पीठमे छुरा भोकना है—अिससे वडा कोअी पाप नही।"

१५०. अखबारी सदाचारके पाठ

[लेखक आर० के० प्रभु]

अनेक अकल्पित परिस्थितियोके मिल जानेसे १९१८ के वर्षके अन्तमे मुझे 'यग अिडिया' के सम्पादनका भार सभालना पडा था। यह साप्ताहिक पत्र थोडे दिन वादसे ही वर्षो तक भारतीय अितिहासके घटनाक्रम पर अत्यत गहरा प्रभाव डालनेवाला था। अुस समय यह पत्र 'वॉम्वे क्रॉनिकल' छापेखानेमे छपता था और जमनादास द्वारकादास अुसके घोषित सम्पादक थे। अुन्होने मेरे सामने प्रस्ताव रखा कि मै पत्रके सम्पादनका कामकाज देखू और मैंने अुसे मजूर कर लिया था। मेरे काम सभालनेके वाद मुश्किलसे तीन महीने वीते थे कि 'वॉम्वे क्रॉनिकल' के सम्पादक हार्निमैनको वम्वअीमे अपनी रोगशय्यासे अचानक अुठाकर अिग्लैण्ड भेज दिया गया और 'वॉम्वे क्रॉनिकल' और अुसके छापेखाने पर सरकारी सेसर विठा दिया गया। नतीजा यह हुआ कि 'यग अिडिया' के सचालक-मडलको मजवूर होकर पत्रका प्रकाशन स्थगित करना पडा।

यह फरवरी १९१९ की वात है। जव दो सप्ताह वाद सेसर खतम हुआ और 'वॉम्वे क्रॉनिकल' प्रेस फिरसे साधारण रूपमे काम करने लगा, तो 'वॉम्वे क्रॉनिकल' और 'यग अिडिया' दोनोके सचालकोकी तरफसे

गाधीजीके सामने प्रस्ताव रखा गया कि वे अिन पत्रोको अपने हाथमे ले लें। गाधीजीने 'क्रॉनिकल' वाला प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया, परन्तु 'यग अिंडिया' का स्वीकार कर लिया, बशर्ते कि अुन्हे पत्रके प्रकाशनका स्थान बम्बअीसे बदलकर अहमदाबाद ले जानेकी स्वतत्रता हो। जब 'यग अिंडिया' के नियत्रणको बदलनेकी बातचीत पूरी हुअी तो मुझे गाधीजीसे मिलनेको कहा गया, ताकि मै अपना काम अुन्हें सभला दू और पत्रके सम्पादनके बारेमें अुन्हे किसी भी जानकारीकी जरूरत हो तो अुन्हें दे दू।

अिस समय गाधीजी मणिभवन, गामदेवीमे रेवाशकरभाअी झवेरीके मेहमान बनकर ठहरे हुअे थे। अपने अेक पत्रकार साथीको साथ लेकर मै वहाके लिअे चला। ये भाअी 'यग अिंडिया' मे नियमित रूपसे लिखते थे। मेरा हमेशासे यह खयाल था कि मेरे अिन साथीको मेरी अपेक्षा अग्रेजी शब्द-भडार और मुहावरे पर अधिक प्रभुत्व प्राप्त है और मुझे अुनकी प्रतिभा पर अीर्ष्या होती थी। मणिभवन पहुचकर हमने गाधीजीको अपना परिचय दिया। 'यग अिंडिया' के पिछले अककी अेक प्रति मैंने गाधीजीके हाथमें दी। अुसके सम्पादकीय स्तभो पर दृष्टिपात करके गाधीजीने यह जानना चाहा कि अुसके अेक विशेष लेखका लेखक कौन है। मुझे याद है कि वह लॉयड जॉर्जके भारत-सम्बन्धी गोलमोल भाषणोमें से अेककी तीव्र आलोचना थी। मैंने गाधीजीसे कहा कि यह लेख मैंने लिखा है। अेक दूसरे लेखकी तरफ अिशारा करके गाधीजीने पूछा कि यह किसका लिखा हुआ है? मेरे साथीने कहा, 'मेरा लिखा हुआ है।'

थोडी देर ठहर कर गाधीजी बोले, "मुझे पहला लेख पसन्द है, मगर दूसरा बिलकुल पसन्द नही। पहलेमे आपको जो कुछ कहना था सो सब आपने सीधे ढगसे कह दिया हे, जब कि दूसरे लेखके लेखकने तरह तरहके व्यगपूर्ण आक्षेपोका आश्रय लिया है और अैसी बाते कही है जो सचमुच वह कहना नही चाहता।" गाधीजीने मेरे साथीकी ओर देखते हुअे कहा, "अुदाहरणार्थ आप लिखते है 'हमे भय है ' अित्यादि अित्यादि। मुझे यह भाषा बिलकुल पसन्द नही। यहा आप सचमुच पाठकको यह विश्वास कराना नही चाहते कि आपको भय है — आपका

अिससे ठीक अुलटा अर्थ है। क्या यह बात नही है? जब आप कोअी बात कहना चाहते है गोल-गोल बाते मत कहिये, कठोर बातको नरम शब्दोमे कहना या चुटकिया लेना आदि न कीजिये, बल्कि सीधे साफ ढगसे कहिये।"

सभव है कि ये ठीक वही शब्द न हो जो गाधीजीने कहे थे, मगर जहा तक मुझे याद है वे अिसी आशयके थे। बेशक, जब हमे पत्रकारिताके सदाचार पर यह छोटासा अुपदेश दिया गया, तब मेरा साथी और मै दोनो चुपचाप सुनते रहे। थोडी देर बाद जब मेरे साथी चले गये, तो गाधीजीने 'यग अिण्डिया' का वह पृष्ठ देखकर, जिसमे सक्षिप्त समाचार दिये गये थे, मुझे पूछा कि ये खबरे किसने अिकट्ठी की है। यह कहे जाने पर कि अुनके लिअे मै जिम्मेदार हू, अुन्होने पूछा कि आपने ये खबरे कहासे ली है? मैने कहा कि 'यग अिण्डिया' और 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के बदलेमे जो भिन्न भिन्न भारतीय पत्र आते है अुनके ताजे अकोसे काटकर ली गअी है।"

अुन्होने पूछा "अिन खबरोको जमा करनेमे आप कितना समय खर्च करते है?"

मैने अुत्तर दिया कि अिस पृष्ठके लिअे जितनी खबरे चाहिये अुन्हे काटने और चिपकानेमे मुझे आधे घटेसे ज्यादा शायद ही लगता है।

अुन्होने आश्चर्यके साथ कहा, "आप अिन पर सिर्फ आधा घटा खर्च करते है?" अुन्होने यह भी कहा, "जब मै दक्षिण अफ्रीकामे 'अिडियन ओपीनियन' का सम्पादन करता था, तो हमे परिवर्तनमे कोअी दो सौ पत्र मिलते थे और सप्ताह भरमे मै अुन सबको सावधानीसे पढ लेता था और प्रत्येक समाचारको तभी लेता था जब मुझे सन्तोष हो जाता कि अिससे सचमुच पाठकोकी सेवा होगी। जब कोअी सम्पादनकी जिम्मेदारी लेता है तो अुसे अपना दायित्व पूरी कर्तव्य-भावनासे पूरा करना चाहिये। अिसी पद्धतिसे पत्रकारका धधा चलाना चाहिये। क्या आप मुझसे सहमत नही है?"

लज्जित होकर मैने कहा, "जी हा।" बादमे मैने अपनी सफाअी देते हुअे गाधीजीसे कहा कि 'क्रॉनिकल' के सम्पादकीय विभागके अेक

कार्यकर्ताके नाते मुझे सप्ताह भर बहुत काम रहता था, अिसलिअे 'यग अिंडिया' के लिये मुझे जल्दी जल्दीमें काम करना पडता था। होता यह था कि अिस पत्रके लिअे मेरा अधिकांश कार्य, जिसमें सम्पादकीय लेखोंका लिखना भी शामिल था, अेक दिनके तीसरे पहरसे ज्यादा वक्त नहीं लेता था।

फिर अुन्होंने अेकदम पूछा, "और अिस सबका आपको पुरस्कार क्या दिया जाता है?"

मैंने अुत्तर दिया कि मुझे प्रति कालम दस रुपयेके हिसाबसे मिलता है। यहां यह बता देना चाहिये कि अेक कालम मुश्किलसे १० अिंच लम्बा होता था और वह भी मोटे मोटे दस पाअिण्टके टाअिपमें। अिस प्रकार 'यग अिंडिया' में मेरी कमाअी सौ और डेढ सौ रुपयेके आसपास रहती थी।

अुस कठोर प्रश्नकर्ताने मुझ पर दूसरे प्रश्नकी गोली छोडी, "'क्रॉनिकल' के कार्यकर्ताकी हैसियतसे आपको क्या मिलता है?"

मैंने अुत्तर दिया, "चार सौ रुपये मासिक।"

कुछ देर ठहरकर, जो मुझे अनन्त काल जैसी प्रतीत हुअी, गांधीजी बोले, "क्या आपके खयालसे 'यग अिंडिया' से आप जो रकम ले रहे हैं अुसका लेना अुचित है? आप जानते हैं कि यह पत्र कोअी कमाअीका साधन नहीं है। यह देशभक्तिका काम है और मेरे खयालसे वह स्वावलम्बी भी नहीं है। क्या अुसके संचालकोंका भार बढाना आपके लिअे ठीक है?"

मैंने अुत्तर दिया कि पत्र-संचालक मुझे जो कुछ देते हैं अुसके लिअे मैंने अुन्हें मजबूर नहीं किया। मैंने कहा कि जमनादास द्वारकादास जैसे मुझे देते हैं, वैसे ही वे 'यग अिंडिया' के लिअे लिखनेवाले सभीको अुदारतापूर्वक पुरस्कार देते हैं। यह सब वे स्वेच्छापूर्वक करते हैं। मैंने अपने पुरस्कारके लिअे कोअी शर्त नहीं की थी।

गांधीजी बोले, "फिर भी अगर मैं आपकी जगह होता तो 'यग अिंडिया' में अेक पाअी भी न लेता।" अुन्होंने यह भी कहा, "आपको अपने पूरे समयके कामके लिअे 'क्रॉनिकल' कार्यालयसे अच्छा वेतन

मिलता है और 'यंग अिंडिया' के लिअे आप जो कुछ करते हैं अपने फुरसतके वक्तमें करते हैं। किसीको अपने पूरे समयके कामका पूरा वेतन मिल जाता हो तो अुसे अुसी समयमें अन्यत्र किये हुअे कामके किसी मुआवजेकी आशा नहीं रखनी चाहिये। आप अैसा नहीं मानते ?"

यद्यपि अुन्होंने ये तीखे वचन कोमलतासे और हंसी हंसीमें कहे, फिर भी मैंने देख लिया कि अुन्होंने पूरी गंभीरताके साथ कहे। नैतिकताका जो नया पाठ वे मेरे हृदय पर अंकित करना चाहते थे अुससे मैं जरा चौंधिया गया। मैं अुनके प्रश्नका अुत्तर नम्रतापूर्वक सहमतिके रूपमें केवल सिर हिला कर ही दे सका।

१५१. गांधीजीके कुछ नमूनेके पत्र

आश्रमके बच्चोंके नाम

छोटे पक्षियो,

मामूली पक्षी पंखोंके बिना नहीं अुड सकते। पंखोंसे तो सभी अुड सकते हैं। परन्तु तुम यदि पंखोंके बिना अुड़ना सीख लोगे तो तुम्हारे सब दुःख सचमुच मिट जायंगे। और यह मैं तुम्हें सिखाअूंगा।

देखो, मेरे पंख नहीं हैं, फिर भी विचारोंमें रोज अुड़कर मैं तुम्हारे पास पहुंचता हूं। देखो, यह विमला है, यह हरि है और यह धर्मकुमार रहा। और विचारोंमें तुम भी मेरे पास अुड़कर आ सकते हो।

जो विचार करना जानते हैं अुनके लिअे शिक्षककी जरूरत नहीं। शिक्षक हमें रास्ता बता सकता है, परन्तु विचार करनेकी शक्ति नहीं दे सकता। वह शक्ति हमारे भीतर छिपी हुअी रहती है। जो बुद्धिमान होते हैं अुन्हें बुद्धिमानीके विचार आते हैं।

मुझे बताओ तुममें से कौन कौन प्रभुभाओकी शामकी प्रार्थनामें ठीक तरहसे भाग नहीं ले रहे हैं।

सबके हस्ताक्षरोंमें मेरे नाम पत्र लिखो और जो हस्ताक्षर करना नहीं जानते वे चौकड़ीका निशान बना दें।

बापूके आशीर्वाद

अेक बीमार बच्चेके पिताके नाम

प्रिय मित्र,

लकवेसे पीड़ित छह महीनेके शिशुके लिअे मैं क्या नुसखा बना सकता हूं? अीश्वरसे प्रार्थना करनेके सिवा कोअी नुसखा नहीं है। मेरी दृष्टिमें कोअी भी दवा अविचारणीय है। आप लकवेवाले अवयवोंकी हलकी मालिश करें, बच्चेको धूपमें रखें और दूध और फलोंके रसके सिवा कुछ न दें। अीश्वरने चाहा तो वह अच्छा हो जायगा। अच्छा न हो तो आपको साहस करके अुसका वियोग सहन कर लेना चाहिये। जो देता है, वह छीन भी सकता है।

आपका
मो० क० गांधी

मृतकोंके प्रति जीवितोंका धर्म

[पारसी धर्मगुरु दस्तूर कुर्सेटजी पावरीकी मृत्यु पर शोक प्रगट करते हुअे अुनके पुत्र डॉ० जाल पावरी और कुमारी बापसी पावरीको]

"जो परलोक सिधार गया है अुसके लिअे अत्यधिक शोक नहीं करना चाहिये, क्योंकि जानेवाला तो आत्माके रूपमें सदा जीवित है, परन्तु पीछे रहनेवाले हम लोगोंको मानव-जातिकी सेवामें मरनेके लिअे जीना चाहिये।

"जानेवालेकी आत्माको सुख पहुंचानेका अेकमात्र अुपाय यह है कि अुसके सबसे प्रिय स्वप्नको चरितार्थ किया जाय, क्योंकि जानेवालेकी आत्मा, जो सदा हमारे साथ विद्यमान रहती है, जीवितोंको निश्चित रूपमें बल पहुंचाती है। केवल अिसी प्रकार पीछेवाले अपनेको अुस पवित्र अुत्तराधिकारके योग्य सिद्ध करेंगे और अिसी तरह जानेवालेकी आत्माको प्रसन्नता होगी।"

(अिनमें से अन्तिम पत्र गुजरातीमें लिखे अिन शब्दोंमें समाप्त होता है "मो० क० गांधीना आशीर्वाद"।)

अेडॉल्फ हिटलरके नाम

प्रिय मित्र,

आपको मित्र सम्वोवन करके लिखना केवल मेरा शिष्टाचार नही है। मेरे कोअी शत्रु है ही नही। पिछले ३३ वर्षोसे मेरा जीवन-कार्य ही यह रहा है कि सारी मानव-जातिको अपना मित्र वनाअू। अिसके लिअे मैंने जाति, रग या धर्मका भेदभाव रखे बिना मनुष्यमात्रका मित्र वननेकी कोशिश की है।

मै आशा करता हू कि आपको अितना जाननेका समय और अिच्छा होगी कि मानव-जातिका अेक वडा भाग, जो विश्वव्यापी मित्रताके सिद्धान्तके असरमे रहा है, आपके कार्योको किस नजरसे देखता है। हमे आपके शौर्य या देशभक्तिमे सन्देह नही और न हम यह मानते है कि जैसा आपके विरोधी वर्णन करते है वैसे आप राक्षस ही है। परन्तु आपके अपने तथा आपके मित्रो और भक्तोके लेखो और भाषणोसे अिसमे सन्देह करनेकी गुजाअिश नही रह जाती कि आपके अनेक कृत्य राक्षसी है और मानव-गौरवको शोभा देनेवाले नही है — खास तौर पर मेरे जैसे आदमियोकी नजरमे, जिनका अखिल मानवीय मित्रतामे विश्वास है। आपका जेकोस्लोवाकियाका अपमान, पोलैण्ड पर वलात्कार और डेन्मार्कका हडप लेना अैसे ही कृत्य है। मुझे मालूम है कि जीवन सम्बन्धी आपकी दृष्टिमे ये अपहरण पुण्यकार्य माने जाते है। परन्तु हमे वचपनसे अैसे कृत्योको मानवका पतन करनेवाले मानना सिखाया गया है। अिसलिअे हम युद्धमे आपके विजयकी कामना नही कर सकते। परन्तु हमारी अजीव स्थिति है। हम नाजीवादसे व्रिटिश साम्राज्यवादका कम विरोध नही करते। अगर कुछ अन्तर है तो वह मात्राका है। मानव-जातिके पाचवे हिस्सेको अैसे अुपायोसे अग्रेजोके अधीन वनाया गया है जो जाचमे अुचित नही ठहर सकते। अिसका हम जो विरोध कर रहे है अुसका अुद्देश्य अग्रेज जातिको हानि पहुचाना नही है। हम अुनके विचार वदलेगे, अुन्हे रणक्षेत्रमे पराजित नही करेगे। हम व्रिटिश शासनके विरुद्ध नि शस्त्र विद्रोह कर रहे है। परन्तु हम अुनका हृदय-परिवर्तन करे या न करे, हमने निश्चय कर लिया है कि अहिसात्मक असहयोग द्वारा अुनके

शासनको हम असभव बना देंगे। यह तरीका ही अैसा है कि अिसमे हार नही होती। अिसका आधार यह ज्ञान है कि कोअी भी अत्याचारी अपने शिकारके स्वेच्छापूर्वक या लाचारीसे दिये गये कुछ न कुछ सहयोगके विना अपना अुद्देश्य पूरा नही कर सकता। हमारे शासक हमारी भूमि और हमारे शरीरोंको ले सकते हैं, परन्तु हमारी आत्माओंको नही ले सकते। भूमि और शरीर भी वे प्रत्येक भारतीय स्त्री, पुरुष और बालकको नष्ट करके ही ले सकते है। यह सही है कि सभी अुस हद तक बहादुरी नही दिखा सकते और भयका प्रदर्शन काफी मात्रामे होनेसे विद्रोहकी कमर टूट सकती है, परन्तु यह दलील असगत होगी। कारण, अगर भारतमे अैसे स्त्री-पुरुषोकी खासी सख्या हो, जो अत्याचारियोके प्रति कुछ भी दुर्भाव न रखकर अिस बातके लिअे तैयार हो जाय कि हम अपने प्राण निछावर कर देंगे, परन्तु अुनके सामने गर्दन नही झुकायेंगे, तो वे हिंसाके अत्याचारसे मुक्त होनेका रास्ता दिखा देंगे। आप मेरी अिस बात पर विश्वास कीजिये कि भारतमे आपको अैसे स्त्री-पुरुषोकी आशातीत सख्या मिलेगी। अुन्हे पिछले बीस वर्षसे यह तालीम मिल रही है।

पिछली आधी शताब्दीसे हम ब्रिटिश हुकूमतको अुखाड फेकनेकी कोशिश कर रहे हैं। स्वाधीनताका आन्दोलन जितना जोरदार आज है अुतना पहले कभी नही था। सबसे शक्तिशाली राजनीतिक सगठन, मेरा मतलब भारतकी राष्ट्रीय कांग्रेससे है, अिस लक्ष्यकी प्राप्तिका प्रयत्न कर रहा है।

अहिंसक प्रयाससे हमें बहुत बडी मात्रामे सफलता मिल चुकी है। ब्रिटिश सत्ता ससारकी सबसे सगठित हिंसाकी प्रतीक है। हम अुसीका मुकाबला करनेके ठीक अुपायकी तलाशमे हैं। आपने अुसे चुनौती दी है। अब यह देखना है कि दोनोमे अधिक सगठित हिंसा कौनसी है, जर्मन या ब्रिटिश।

हम जानते हैं कि हमारे लिअे और दुनियाकी गैर-यूरोपियन जातियोंके लिअे ब्रिटिश पजेके क्या परिणाम हुअे हैं। परन्तु हम जर्मन सहायतासे ब्रिटिश हुकूमतका खातमा हरगिज नही चाहते। अहिंसाके रूपमे हमे अेक अैसी शक्तिका पता लग गया है जो सगठित हो जाय तो ससारकी तमाम अत्यत हिंसात्मक शक्तियोके समूहका निःसन्देह सामना

कर सकती है। अहिंसक कार्यप्रणालीमे, जैसा मै कह चुका हू, हार जैसी कोअी वस्तु नही होती। अिसमे तो प्राण लिये अथवा चोट पहुचाये विना केवल "करना या मरना" ही होता है। अिसका प्रयोग लगभग विना रुपयेके किया जा सकता है और जिस विनाशकारी विज्ञानको आपने अितने अूचे दर्जे पर पहुचा दिया है अुसकी मददके बिना तो स्पष्ट ही किया जा सकता है।

मेरे लिअे यह आश्चर्यकी बात है कि आप यह नही समझ सकते कि अुस पर किसीका अेकाधिकार नही है। अंग्रेज नही तो कोअी और ताकत आपके तरीकेमे जरूर तरक्की करेगी और आपको आपके ही हथियारसे हरायेगी। आप अपनी जनताके लिअे कोअी अैसी विरासत नही छोड रहे है जिस पर अुसे गर्व हो। निर्दय कृत्योकी कितनी ही कुशल योजना क्यो न की जाय, अुनके दोहरानेमे अुसे गर्व नही हो सकता।

अिसलिअे मै आपसे मानवताके नाम पर अपील करता हू कि लडाअी बन्द कर दीजिये। आपके और ग्रेट ब्रिटेनके बीचके झगडेके सब मामले दोनोकी पसन्दके किसी आन्तर-राष्ट्रीय न्यायालयके सुपुर्द कर दिये जाय, तो आप कुछ भी घाटेमे नही रहेगे। अगर युद्धमे आपको सफलता मिल भी गअी, तो अिससे यह साबित नही होगा कि आप ठीक रास्ते पर थे। अुससे अितना ही साबित होगा कि आपकी विनाशक शक्ति अधिक बढी-चढी थी, जब कि किसी निष्पक्ष अदालतका निर्णय, जहा तक मानवके लिअे सम्भव है, यह साबित करेगा कि कौनसा पक्ष न्यायपथ पर था।

आप जानते है कि कुछ समय पहले मैने प्रत्येक अंग्रेजसे यह अपील की थी कि वह अहिंसक विरोधका मेरा तरीका अपना ले। मैने यह अिस-लिअे किया कि अंग्रेज जानते है कि मै विद्रोही होने पर भी अुनका दोस्त हू। आपके और आपके यहाके लोगोके लिअे मै अजनबी हू। जो अपील मैने प्रत्येक अंग्रेजसे की थी वही आपसे करनेका मुझे साहस नही होता। यह अिसलिअे नही कि वह जितने जोरके साथ अंग्रेजोको लागू होती है अुतने ही जोरके साथ आपको लागू नही होगी। परन्तु मेरा यह प्रस्ताव अुससे कही ज्यादा सरल है, क्योकि यह कही अधिक व्यावहारिक और सुपरिचित है।

अिस ऋतुमें जब यूरोपके लोगोंके हृदय शान्तिके लिअे लालायित होते हैं, हमने अपना शान्तिपूर्ण संग्राम भी स्थगित कर दिया है। क्या आपसे यह कहना बहुत बड़ी मांग होगी कि अैसे समयमें, जिसका व्यक्तिश: आपके लिअे कोअी महत्त्व न भी हो, परन्तु जिसका अुन लाखों यूरोपियनोंके लिअे बड़ा महत्त्व है जिनकी शान्तिके लिअे मूक पुकार मैं सुन रहा हूं, आप शान्तिके लिअे अेक प्रयत्न करें? मेरे कान करोड़ों मूकजनोंकी पुकार सुननेके लिअे सधे हुअे हैं। जब मैं गोल-मेज परिषदका प्रतिनिधि बनकर अिंग्लैण्ड गया था, अुन दिनों रोममें मुझे सीनार मुसोलिनीसे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मुझे आशा है कि वे भी आवश्यक परिवर्तनके साथ अिस अपीलको अपने लिअे मान लेंगे।

आपका सच्चा मित्र,
मो० क० गांधी

(अूपर अुद्धृत किया गया पत्र गांधीजीने १९४१ के बड़े दिनोंवाले सप्ताहमें लिखा था, परन्तु भारत-सरकारने अिसे नाजी तानाशाहके पास भेजे जानेकी अिजाजत नहीं दी।)

१५२. गांधीजीके प्रिय भजन

[निम्न लिखित भजन गांधीजीके प्रिय भजनोंमें से थे और वे आम तौर पर अुनकी प्रार्थना-सभाओंमें गाये जाते थे।]

सच्चा वैष्णव

वैष्णव जन तो तेने कहीअे, जे पीड पराअी जाणे रे,
परदु:खे अुपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे
सकळ लोकमां सहुने वंदे, निन्दा न करे केनी रे,
वाच काछ मन निश्चळ राखे, धन धन जननी तेनी रे
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे,
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे
मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ वैराग्य जेना मनमां रे,
रामनामशुं ताळी लागी, सकळ तीरथ तेना मनमां रे

वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निवार्या रे,
भणे **नरसैंयो** तेनु दरसन करता, कुळ अेकोतेर तार्या रे

(गुजराती) — **नरसिंह मेहता**

अर्थ सच्चा वैष्णव जन वह है जो दूसरोकी पीडाको अपनी पीडा समझता है। वह दूसरोके दुःखमे अुपकार करता है, फिर भी मनमे अभिमान नही लाता। वह सारे जगतमे सबको प्रणाम करता है और किसीकी भी निन्दा नही करता। वह मन, वचन और कर्मकी शुद्धता रखता है, अुनकी माता धन्य है! वह समदृष्टिवाला होता है और तृष्णाका त्याग करता है। वह परस्त्रीको माताके समान समझता है। वह जीभसे कभी असत्य नही बोलता और दूसरोके धनको हाथसे नही छूता। वह मोह और मायाके बन्धनोसे मुक्त रहता है। अुसके मनमे दृढ वैराग्य होता है। अुसको रामनामकी लौ लगी रहती है और अुसके शरीरमे सारे तीर्थोंका वास होता है। वह लोभ और कपटसे मुक्त होता है और काम-क्रोधसे दूर रहता है। नरसिंह मेहता कहते है कि अुसके दर्शन करनेसे मनुष्यके अिकहत्तर कुल तर जाते है।

प्रेमका मार्ग

हरिनो मारग छे शूरानो, नहि कायरनु काम जोने,
परथम पहेलु मस्तक मूकी, वळती लेवु नाम जोने
सुत वित दारा शीश समरपे, ते पामे रस पीवा जोने,
सिन्धु मध्ये मोती लेवा, माही पडचा मरजीवा जोने
मरण आगमे ते भरे मूठी, दिलनी दुग्धा वामे जोने,
तीरे अूभा जुअे तमासो, ते कोडी नव पामे जोने
प्रेमपथ पावकनी ज्वाळा, भाळी पाछा भागे जोने,
माही पडचा ते महासुख माणे, देखनारा दाझे जोने
माथा साटे मोघी वस्तु, सापडवी नहि सहेल जोने,
महापद पाम्या ते मरजीवा, मूकी मननो मेल जोने
राम-अमलमा राता माता पूरा प्रेमी परखे जोने,
प्रीतमना स्वामीनी लीला ते रजनीदन नरखे जोने

(गुजराती) — **प्रीतम**

अथ हरिका मार्ग शूरोंका मार्ग है, अुस पर कायरोंका काम नहीं है। सबसे पहले हरिके चरणोंमें मस्तक रखना चाहिये फिर अुसका नाम लेना चाहिये। जो मनुष्य स्त्री-पुरुष, धन-दौलत सब कुछ अर्पण कर देता है, अुसे ही हरिका प्रेमरस पीनेको मिलता है। जो समुद्रमें से मोती निकालनेकी अिच्छा रखते हैं, अुन्हें प्राणोंको हथेलीमें लेकर गहरे पानीमें गोते लगाने होते हैं, जो मृत्युसे जूझते हैं अुन्हें मुट्ठी भर भर कर मोती मिलते हैं और अुनके हृदयकी पीडा शान्त होती है। जो लोग समुद्रके तट पर खडे रहकर केवल तमाशा देखते हैं अुन्हें कुछ भी नहीं मिलता। प्रेमपन्थ आगकी ज्वाला है, कायर अुसे देखकर पीछे भागते हैं। ज्वालाका दूरसे देखनेवाले अुसमें झुलसते हैं, परन्तु जो अुसमें कूद पड़ते हैं वे महासुख प्राप्त करते हैं। प्रेम जैसी महंगी वस्तु सिरका सौदा करके ही मिलती है, वह आसानीसे नहीं मिल जाती। जो लोग मनका मैल त्याग कर प्राणोंकी आहुति देनेको तैयार रहते हैं अुन्हींको महापद प्राप्त होता है। जो रामके नशेमें मस्त रहते हैं वे ही सच्चे प्रेमीको पहचान सकते हैं। प्रीतम कवि कहते हैं कि अैसे ही लोग मेरे स्वामी — अीश्वर — की लीलाका दिन-रात दर्शन करते हैं।

मेरी हार्दिक प्रार्थना

पापाची वासना नको दावू डोळा,
त्याहुनी अंधळा बराच मी।
निन्देचे श्रवण नको माझे कानी,
बधिर करोनि ठेवी देवा।
अपवित्र वाणी नको माझ्या मुखा
त्याजहुनि मुका बराय मी।
नको मज कधी परस्त्री-संगति,
जनातूनि माती अुठता भली।
तुका म्हणे मज अवघ्याचा कंटाळा
तू अेक गोपाळा आवडसी।

(मराठी) — तुकाराम

अर्थ हे भगवान, मुझे अैसी वस्तुअे देखनेसे बचाओ, जिनमे बुरे विचार पैदा होते हैं। अिससे अच्छा तो यह हे कि मै अधा हो जाअू।

हे भगवान, मुझे निन्दाका अेक भी शब्द सुननेसे बचाओ। अिससे अच्छा तो यह है कि मै बहरा हो जाअू।

हे भगवान, अपवित्र वाणी बोलकर अपनी जबान गदी करनेके पापसे मुझे बचाओ। अिससे तो मेरा गूगा हो जाना ज्यादा अच्छा है।

हे भगवान, जिन्हे मुझे अपनी बहन समझना चाहिये अुन पर कुदृष्टि डाऌनेके पापसे मुझे बचाओ। अिससे तो मेरा मर जाना ज्यादा अच्छा है।

तुकाराम कहते है कि मै सबसे अूब गया हू। हे गोपाल, अेक तू ही मुझे प्रिय है।

*   *   *

['लीड काअिण्डली लाअिट', 'दि वाण्डरस क्रॉस' 'रॉक ऑफ अेजेस' नामक अग्रेजी भजन तथा अीसाका 'सर्मन ऑन दि माअुण्ट' नामक अुपदेश भी गाधीजीको बहुत प्रिय थे। अुनका हिन्दी अर्थ नीचे दिया जाता है।]

हे दयालु, मुझे मार्ग बता

हे दयालु, मुझे अिस व्यापक अधकारमे अपने दिव्य प्रकाशमे मार्ग दिखा, मुझे मार्ग बताता रह,

रात अधेरी है और मै घरसे बहुत दूर हू। तू मेरा मार्गदर्शक बन।

मेरे पैर तू स्थिर रख, मै तुझसे यह नही मागता कि मै दूरके दृश्य देखता रहू, मेरे लिअे अेक कदम काफी है।

मेरा हमेशा यही हाल नही था और न मैने यह प्रार्थना की कि तू सन्मार्ग दिखाता रह।

मुझे अपना मार्ग चुनना और देखना प्रिय था, परन्तु अब तू मुझे मार्ग बता।

मुझे वैभवसे प्रेम था और भय होने पर भी मेरी अिच्छामे गर्वकी प्रधानता थी, अुन पिछली बातोको तू याद न रख।

अब तक तेरी सत्ताका आशीर्वाद मुझे प्राप्त रहा है, अवश्य ही वह अब भी मेरा पथ-प्रदर्शन करता रहेगा।

पहाड और दलदल, चट्टान और नदी-नाले रास्तेमें पडेंगे। अुन सबको मैं पार कर लूंगा और रात भी बीत जायगी।

और प्रातःकाल होते ही वे देवदूतोंके मुख मुस्करायेंगे, जिन्हें मैं बहुत समयसे प्यार करता हूं और जिनसे मैं थोड़े अर्सेके लिअे वंचित हो गया था।

— कार्डिनल न्यूमैन

अद्‌भुत सूली

जब मैं अुस अद्‌भुत सूली पर नजर डालता हूं, जिस पर गौरवके राजा औसा मसीहकी मृत्यु हुअी थी, तो मैं अपने बडेसे बडे लाभको भी हानि समझता हूं और मुझे अपने सारे अहंकार पर तिरस्कार होने लगता है।

भगवन्, मुझे बचाअिये ताकि मैं औसाकी सूलीके सिवा और किसी चीज पर अभिमान न करूं।

ये सारी व्यर्थकी चीजें जो मुझे अधिक लुभाती हैं मैं औसाके रक्त पर बलिदान करता हूं।

देखो, अुनके सिरसे, हाथों और पैरोंसे दुःख और प्रेम आपसमें मिल कर नीचेकी ओर बह रहे हैं,

क्या औसे प्रेम और दुःखका सम्मेलन कभी हुआ था, या कांटोंसे औसा बढिया ताज बना था?

अगर मैं प्रकृतिके समस्त राज्यका स्वामी होता तो वह भेंट भी बहुत तुच्छ होती, अितना आश्चर्यजनक, अितना दिव्य प्रेम मेरी आत्मा, मेरा जीवन, मेरा सर्वस्व चाहता है।

जिस मसीहने पापियोंके लिअे घोर दुःख और पीड़ा सहकर प्रभुकी दया प्राप्त की, अुनकी सारी मुक्त मानव-जाति सदा और दिन-दिन अधिक स्तुति करे।

— आअी० वाट्स

युग-कंदरा

मेरे लिअे कटी हुअी है युग-कंदरा, मुझे अपनेमें छिपा ले। तेरे पहलूसे बहनेवाला पानी और खून पापका दोहरा अुपचार बन जाय और अुसके अपराध और सत्ता दोनोंसे मुझे मुक्त कर दे।

तेरे कानूनकी मागको मेरे हाथोकी मेहनत पूरा नही कर सकती; मेरे अुत्साहका पार न रहे, मेरे आसू सदा बहते ही रहें, तो भी पापका पूरा प्रायश्चित्त नही हो सकता। तुझे ही, केवल तुझे ही मेरी रक्षा करनी होगी।

मै अपने साथ कुछ नही लाया। केवल तेरी सूलीसे चिपटा हुआ हू, नगा था, तेरे पास कपडोके लिअे आया, लाचार हू, तेरी दयाका भिखारी हू, गदा हू, तेरे स्रोतकी ओर दौडता हू। हे रक्षक, तू मुझे धो कर पवित्र बना दे, अन्यथा मर जाअूगा।

जब तक यह क्षणभगुर सास है, जब मौत मेरी आखे बन्द कर देगी, जब न अज्ञात प्रदेशोमे अुडूगा, तब मुझे तू न्यायासन पर विराजमान दिखाअी देगा, मेरे लिअे कटी हुअी युग-कदरा, तू मुझे अपने अकमे छिपा ले।

— अे० अेम० टॉपलेडी

ओसाका गिरि-प्रवचन

जो वृत्तिमे गरीब है वे धन्य है क्योकि स्वर्गका राज्य अुन्हीको मिलेगा।

जो शोक मनाते है वे धन्य है क्योकि अुन्हे सान्त्वना दी जायगी।

जो नम्र है वे धन्य है क्योकि पृथ्वीका अुत्तराधिकार अुन्हे ही मिलेगा।

जो धर्मके लिअे भूख और प्यास सहते है वे धन्य है क्योकि अुनकी आवश्यकता पूरी की जायगी।

जो दयालु है वे धन्य है क्योकि अुन्हे दया मिलेगी।

जो हृदयमे पवित्र है वे धन्य है क्योकि वे ओश्वरका दर्शन करेगे

जो शान्ति करानेवाले है वे धन्य है क्योकि वे ओश्वरीय सतान कहलायेगे।

जो धर्मके खातिर सताये जाते है वे धन्य है क्योकि स्वर्गका राज्य अुन्हीका होगा।

— गॉस्पेल ऑफ मैथ्यू

सूची